।। राधास्वामी ।।

प्रेम बानी राधास्वामी

चौथा भाग

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी राधास्वामी

चौथा भाग

जिसको कि

परम सन्त सतगुरू हुज़ूर महाराज ने
अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया

जो बाइजाज़त
राधास्वामी ट्रस्ट के छापी गई

ग्यारहवीं बार) सन् 2017 (1000 प्रतियाँ

प्रकाशक
राधास्वामी ट्रस्ट,
स्वामीबाग़, आगरा 282005

All rights reserved

कोई साहब बिना इजाज़त इस पोथी को नहीं छाप सकते

पहली बार	सन् 1900	1000 प्रतियाँ
दूसरी बार	सन् 1907	1000 प्रतियाँ
तीसरी बार	सन् 1920	1000 प्रतियाँ
चौथी बार	सन् 1938	1000 प्रतियाँ
पाँचवीं बार	सन् 1949	1000 प्रतियाँ
छटी बार	सन् 1966	1000 प्रतियाँ
सातवीं बार	सन् 1979	1000 प्रतियाँ
आठवीं बार	सन् 1986	1000 प्रतियाँ
नवीं बार	सन् 1992	3000 प्रतियाँ
दसवीं बार	सन् 2003	3000 प्रतियाँ

ग्यारहवीं बार) सन् 2017 (1000 प्रतियाँ

40 रुपये

संगणक लेखक :
कोमल डेस्क टॉप प्रिंटिंग,
रामकृष्ण नगर, तुमसर 441912
मुद्रक :
इमेजिनेशन डिज़ाइंस, 509/B एटलान्टिस हाईट्स
साराभाई मेन रोड, वडीवाडी, वडोदरा 390017
फोन 0265-2337808 मो 9898707808

* *

प्रेमबानी राधास्वामी

चौथा भाग

* *

प्रेमबानी भाग चौथा भाग

सूचीपत्र शब्दों का

शब्द की टेक			सफ़ा
अचरज आरत गुरु की धारूँ	--	--	६८
अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर	--	--	२
अहो मेरे सतगुरु अहो मेरी जान	--	--	५१
आओरी सखी चलो गुरु के पासा	--	--	११४
आओरी सखी चलो गुरु सतसंग में	--	--	११५
आग लगी संसार में	--	--	१८१
आज आनन्द रहा मौज से चहुँ दिस छाई			३९
आज गरज गरज घन गरजे	--	--	५६
आज गुरु प्यारे के चरनों में झलकती है	--		४१
आज धुन अनहद बाज रही है	--	--	४२
आज प्यारी तू समझ सोच के कर	--	--	३८
आज मम भाग जगे गुरु सतसँग आय मिली			३७
आज मेघा रिम झिम बरसे	--	--	५५
आज सतगुरु की सरन भाग से मैंने	--	--	३४
आज सतगुरु के चरन में तू लगाले नेहरा	--		३६
आज सतसँग गुरु का कीजे	--	--	५४
आज हंगामये शादी का गरम हो रहा	--		४०
इतनी अरज़ मेरी मानो स्वामी	--	--	१८९
उठत मेरे मन में नित्त उचंग	--	--	१७४
करूँ गुरु सतसँग नित्त अली	--	--	१५९
करूँ पहिले महिमा गुरू की बयान	--	--	५०
करूँ संत मत का मैं थोड़ा बयाँ	--	--	४६

शब्द की टेक			सफ़ा
करो सतसंग सतगुरु का	--	--	२७
कस जायँरी सखी मेरे मन के बिकारा	--		१९६
कस पिया घर जाऊँरी सँग मनुआँ	--	--	१९५
कोइ कछू कहे मैं नेक न मानूँ	--	--	११६
कोइ दिन का है जग में रहना सखी		--	११९
कौन विधि मनुआँ रोका जाय	--	--	१२४
क्यों अटक रही जग प्यारी	--	--	६०
क्यों जग में रहे भरमानी	--	--	५८
क्यों सोच करे मन मूरख	--	--	५९
गहोरे चरन गुरु धर हिये प्रीती	--	--	१९५
गुरु चरनन लौलीन सुरत जग किरत		--	१०१
गुरु प्यारे का धर विश्वास मन से जूझूँगी			१९६
गुरु प्यारे का ले बल हाथ करम पछाड़ूँगी			१९६
गुरु प्यारे की आरत सार गाऊँ उमँग उमंग			१९६
गुरु प्यारे के नित गुन गाय प्रेम जगाऊँगी			१९६
गुरु प्यारे चरन पर आज मनुआँ वारूँगी		--	१९६
गुरू की धर हिये में परतीत	--	--	१५६
घट में दरशन दीजिये मेरे राधास्वामी	--	--	१११
चरन गुरु दम दम हिरदे धार	--	--	१९३
चलो चलो घर घंट पुकारे	--	--	१८८
चलोरी सखी आज गगनपुरी	--	--	६७
चुपके चुपके बैठ कर करो नाम की याद		--	१८७
चेतोरे घर घाट सम्हारो	--	--	८०
चेतोरे जग काम न आवे	--	--	७९

शब्द की टेक			सफ़ा
जगत जीव सब होली पूजें	--	--	१३०
जगत तज गुरु चरनन में भाज	--	--	१९४
जगत भोग मोहिं नेक न भावे	--	--	१०७
जगत से मन को तोड़ चलो	--	--	१९३
जब देखा तेज मैंने जो	--	--	२०
जागोरे यहाँ कब लग सोना	--	--	८१
जुड़ मिल के हंस सारे दर्शन को गुरू		--	४५
जैसे बनो तैसे करो कमाई	--	--	१९३
जो तुझे चलना है तो इस ढंग चल	--	--	१३
जो मेरे प्रीतम से प्रीत करे	--	--	१२८
झूलत घट में सुरत हिंडोला	--	--	१७९
तुम अब ही गुरु सँग धाओ बहुर पछताना पड़े			९३
तुम अब ही गुरु सँग रलो हिये में प्रेम भरो			९५
तुम अब ही गुरु से मिलो जगत की लज्जा			९४
तुम अब ही मन को माँजो बहुर क्या काज सरे			९३
तुम अब ही विरह जगाय शब्द में सुरत धरो			९५
तुम अब ही सतसँग धारो बहुर नहीं औसर मिले			९४
तुम जीते सुरत चढ़ाओ मुए पर क्या करि हो			९३
दरस आज दीजिये	--	--	१९७
धन धन राधासवामी गाय रहूँगी	--	--	१८३
धाओ रे गुरु सरन सम्हारी	--	--	८१
न जग में चैन और न स्वर्ग सुख है	--	--	४२
नाम का लीना कर हथियार	--	--	१९४
नाम रूप से प्यार कर	--	--	१८७

शब्द की टेक			सफ़ा
निज रूप पूरे सतगुरु का	--	--	५
पिया का दरस कस पाऊँ सखी	--	--	२०१
पिया मेरे और मैं पिया की	--	--	१८९
पिरेमन लाई आरती साज	--	--	१५३
पिरेमन सुरत आरती धार	--	--	१८५
पिरेमी सुरत रँगीली आय	--	--	१५१
प्यारे ग़फ़लत छोड़ो सर बसर	--	--	२५
प्रेम की दौलत अपर अपार	--	--	१६३
प्रेम की महिमा क्या गाई	--	--	१६१
प्रेम गुरु रहा हिये में छाय	--	--	१५७
प्रेम दात गुरु दीजिये मेरे समरथ दाता हो	--		१०८
प्रेम भरी भोली बाली सुरतिया	--	--	६९
प्रेमी जइयो रे सतसँग में	--	--	७०
प्रेमी जागो रे तुम अबही	--	--	७३
प्रेमी भागो रे जगत से	--	--	७२
प्रेमी मानोरे बचन को	--	--	७२
प्रेमी मिलियो रे सतगुरु से	--	--	७१
प्रेमी रहियो रे हुशियार	--	--	७४
प्रेमी लीजो रे सुध घर की	--	--	७५
बंधन ही से ऊपजें	--	--	१८८
बचन सुना जग भाव हटाया	--	--	१९२
बड़ा ज़ुल्म है मेरे यार	--	--	१८
बार बार मैं भूलनहार	--	--	१९७
बाहर की मत देख	--	--	१८७

शब्द की टेक			सफ़ा
बिन दर्शन कल नाहिं पड़े	--	--	११२
बिन दर्शन चित रहे उदासा	--	--	२०२
बिन दर्शन मन तड़प रहा कस तपन	--	--	२०१
बिन दर्शन मैं बिकल रहूँ	--	--	२०१
बिन दर्शन मोहिं कुछ न सुहावे	--	--	२०१
बिन दर्शन मोहिं चैन न आवे	--	--	२०१
भक्त का पंथ निराला है	--	--	१२२
भक्तन के स्वामी काज सँवारे	--	--	१९८
भजन मैं कैसे करूँ हेली री	--	--	१२०
भर्म की ठेंठी निकालो कान से	--	--	१६
भाग भरी सुर्त अजब अनोखी	--	--	२०२
भाग भरी सुर्त सतसँग करती	--	--	१७८
भागोरे जग से अब भागो	--	--	७९
भूल भरम ग़फलत अब छोड़ो	--	--	१८४
भोग बासना छोड़ पियारे	--	--	१२९
मंसा बाचा कर्मना	--	--	१८६
मन की मत मान के पछताओगे	--	--	४५
मन के घाट बैठ सुर्त घर की सुद्ध	--	--	९९
मन चंचल चहुँ दिस धाय सखी	--	--	१०३
मन तू करले हिये धर प्यार राधास्वामी	--		१०५
मन तू भज ले बारम्बार राधास्वामी	--	--	१९८
मन तू सुन ले चित दे आज राधास्वामी	--		१०६
मन मेरा मुझे नचाय रहा	--	--	१९३
मनुआँ अनाड़ी को समझाओ क्यों करे हमारी			१२६

शब्द की टेक			सफ़ा
मनुआँ अनाड़ी से कह दीजो जाओ बसो	--		१२५
मनुआँ कहन न मान सखी मैं कौन उपाय	--		१०४
मनुआँ मेरा सोवे जगत में जगा देओ जी	--		१२३
मनुआँ हठीला कहन न माने	--	--	१९३
माया रूप नवीन धार कर सतसँग में आई			१३१
मुझे अपने प्रीतम से है यह क़रार	--	--	१८८
मेरा भीज रहा मन प्रेम रंग	--	--	१८५
मेरी प्यारी सहेली हो क्यों जन्म गँवाओ हो			९०
मेरी प्यारी सहेली हो दया कर कसर	--		९१
मेरे तपन उठत हिये भारी	--	--	५७
मेरे प्यारे गुरू दातार चरनन पकड़ रहूँ	--		१९४
मेरे प्यारे बहन और भाई क्यों आपस में	--		१९०
मेरे प्यारे बहन और भाई क्यों ग़फ़लत में	--		८४
मेरे प्यारे बहन और भाई क्यों जग में	--		१९१
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु का उपदेश			१९२
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु चरन सरन	--		८६
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु बचन समझ			१९२
मेरे प्यारे बहन और भाई गुरु सतसँग	--		८८
मेरे प्यारे बहन और भाई जग आसा दूर	--		१९१
मेरे प्यारे बहन और भाई जग मोह बिसारो			८७
मेरे प्यारे बहन और भाई जग योंही बीता	--		१९०
मेरे प्यारे बहन और भाई ज़रा सोचो	--		८९
मेरे प्यारे बहन और भाई टुक दया	--	--	१९०
मेरे प्यारे बहन और भाई तुम्हें लाज न आई			८२

शब्द की टेक	सफ़ा
मेरे प्यारे बहन और भाई भोगन की चाह	१९१
मेरे प्यारे बहन और भाई यह जगत	१९१
मेरे प्यारे बहन और भाई यह देश तुम्हारा	१९१
मेरे प्यारे बहन और भाई या जग बिच घोर	८५
मेरे प्यारे बहन और भाई राधास्वामी सरन	१९२
मेरे राधास्वामी जग आये करन को जीव उबार	११८
मेरे राधास्वामी प्यारे हो दरस दे विपति हरो	११७
मैं तो पड़ी री दूर निज घर से -- --	१२१
मैं सतगुरु पै डालूँगी तन मन को वार -- --	२८
मोहिं नाच नचावे मन ठगिया -- --	२०१
यह देह मलीन और नाशमान -- --	१८३
यह सतसंग और राधास्वामी है नाम --	७
रात गुरु भेदी ने मुझसे यों कहा -- --	१९
राधास्वामी दाता दयाल हैं -- --	१८६
राधास्वामी दाता दीन दयाला दास दासी को	१६४
राधास्वामी दीन दयाल सुने हैं -- --	१८९
राधास्वामी सत मत जिसने धारा -- --	१६७
रुन झुन रुन झुन हुई धुन घट में -- --	११८
रूह है हुक्म भेद अंस खुदा -- --	१७
लगे हैं सतगुरु मुझे पियारे -- --	४४
विरहनी सुरत हिये धर प्यार -- --	१५५
संत बचन हिरदे में धरना -- --	८
संत में यार परघट है -- --	१९०
सखीरी घर जाऊँगी सतगुरु सँग -- --	१९७

शब्द की टेक			सफ़ा
सखीरी घर जाने दे मोहिं	--	--	१९७
सखीरी मैं कैसे बचूँ इस मन से	--	--	१८९
सखीरी मैं जाऊँगी घर नहिं ठहरूँगी		--	१२७
सतगुरु प्यारी चरन अधारी	--	--	१३१
सतगुरु प्यारे ने जगाई मन में प्रीति		--	१९५
सतगुरु प्यारे ने बचाई जम से सुरत	--	--	१९५
सतगुरु प्यारे ने बुझाई जग तपन	--	--	१९५
सतगुरु प्यारे ने रचाया जग फाग	--	--	१९५
सतगुरु प्यारे ने सुलाये पंच दूत	--	--	१९५
सतसंग बिना जिया तरसे	--	--	१९८
सुनरी सखी मानो कहन मेरी	--	--	६६
सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी आज अचरज			६२
सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी आज अद्भुत			६२
सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी आज नइ			६३
सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी आज प्रेम रंग			६५
सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी मोहिं प्यार से			६४
सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी मोहिं मेहर से			६५
सुनरी सखी रात प्यारे राधास्वामी	--	--	१९७
सुरत निज घर बिसरानी हो	--	--	११३
सुरत पियारी शब्द अधारी	--	--	१७५
सुरत प्यारी गुरु सन्मुख आई	--	--	१७७
सुरत प्यारी बँध हो गई	--	--	११३
सुरत रँगीली सतगुरु प्यारी लाई आरती धार			१७६
सुरत सिरोमन फाग रचाया	--	--	१९४

शब्द की टेक	सफ़ा
सुरतिया अचरज करत रही -- --	१३८
सुरतिया उमँग उमँग गुरु आरत करत सम्हार	१३५
सुरतिया उमँग भरी होली खेलत आज नई	१४९
सुरतिया करत रही गुरु दर्शन सहित उमंग	१३८
सुरतिया खिलत रही देख गुरु -- --	१४०
सुरतिया खेलत बाल समान -- --	१३२
सुरतिया घट में आनँद पाय -- --	१३५
सुरतिया घट में धावत नित्त -- --	१९९
सुरतिया झुरत रही मन माहिं -- --	१९९
सुरतिया धार बसंती रंग -- --	२००
सुरतिया धार बहाय रही -- --	१९९
सुरतिया धूम मचाय रही करें गुरु क्यों नहीं	१३३
सुरतिया ध्याय रही गुरु रूप हिये धर प्यार	१४५
सुरतिया नींद भरी नित सोवत -- --	२००
सुरतिया प्रेम जगाय रही -- --	१९८
सुरतिया बचन गुरू के जाँच -- --	२००
सुरतिया बिगस रही हर दम गुरु सेवा धार	२००
सुरतिया बिनती करत रही -- --	२००
सुरतिया बिनती धार रही -- --	१९८
सुरतिया भाव सहित आई सुन गुरु महिमा	१३४
सुरतिया मगन हुई घट शब्द का आनँद पाय	१५०
सुरतिया वार रही तन मन गुरु चरन निहार	१४१
सुरतिया वाह वाह करती -- --	१९९
सुरतिया सिमट गई गुरु दर्शन दृष्टी जोड़	१३६

शब्द की टेक	सफ़ा
सुरतिया सुनत रही नित राधास्वामी -- --	१३७
सुरतिया सोच करत कस जाऊँ भौ के पार	१४७
सुरतिया हँस हँस गावत नित्त -- --	१९९
सुरतिया हरख रही निरखत गुरु चरन बिलास	१४३
सुरतिया हरख रही मन माहिं -- --	२००
सुरतिया हैरत रूप भई गुरु सन्मुख -- --	१९९
सुर्त आवाज़ को पकड़ के गई -- --	६
सुर्त मन में प्रेम गुरु जिसके बसा -- --	२१
स्वामी प्यारे अब ही मेहर कराओ -- --	१९४
स्वामी प्यारे अब ही लेओ सुधारी -- --	१९४
स्वामी प्यारे क्यों नहीं सुनो पुकारी -- --	१९४
हे गुरु मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ	१
हे मन भोगी सदा के रोगी -- --	९७
हे मन मानी सद अज्ञानी -- --	९८
हे मन रसिया काया के बसिया -- --	९६
हे मेरे मित्रा मनुआँ क्यों न चले निज देश	१२३
हे मेरे समरथ साईं निज रूप दिखाओ --	१२७
हेरी तुम कैसी हो री जग बिच भरमनहारी --	७८
हेरी तुम कैसी हो री जग बिच भूलनहारी --	७७
हेरी तुम कौन हो री मोहिं अटकावनहारी --	७५
हेरी तुम कौन हो री मोहिं भरमावनहारी --	७८
होली खेले रँगीली नार -- --	१८०

प्रेमबानी भाग चौथा भाग के

बचनों का सूचीपत्र

नम्बर बचन	सुर्ख़ी	पष्ठ
३९	गज़ल और मसनवी	१
	अशआर सतगुरु महिमा	८
	महिमा अनहद शब्द और जुगत उसके प्राप्ति की	१६
	प्रेम की महिमा	२१
४०		५४
४१		१३२
४२	मुतफ़र्रिक टेकें व कड़ियाँ	१८६

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेम बानी राधास्वामी
भाग चौथा

बचन ३९

ग़ज़ल और मसनवी

।। ग़ज़ल १ ।।

हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़
जो हुआ। मन से बेज़ार
सुरत वार के दीवाना हुआ।। १ ।।
इक नज़र ने तेरी ऐ जाँ मुझे
बेहाल किया। लैला के इश्क़ में
मजनूँ सा परेशान किया।। २ ।।
मैं हूँ बीमार मेरे दर्द का नहिं और
इलाज। मेरे दिल ज़ख़्म का
मरहम तेरी बोली है इलाज।। ३ ।।

तेरे मुखड़े की चमक ने किया
मन को नूराँ। सूरज और चाँद
हज़ारों हुए उससे ख़िजलाँ।। ४ ।।
जग में इस चक्र ज़माने का
यह दस्तूर हुआ। प्रेमी प्रीतम के
चरन लाग के मशहूर हुआ।। ५ ।।
हिर्स दुनिया की मेरे दिल से
हुई है सब दूर। तेरे दर्शन की
लगन मन में रही है भरपूर।। ६ ।।
वाह वाह भाग जगे गुरु चरनन
सुर्त मिली। चंद्र मंडल को
वहीं फोड़ के गगना में पिली।। ७ ।।
राग और रागिनी मैंने सुने
अंतर जा कर। मेरे नज़दीक
हुए हिन्दू मुसलमाँ काफ़िर।। ८ ।।

।। ग़ज़ल २ ।।

अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर।
काल को मार कर मैं फूँका सूर।। १ ।।
देह की सुध गई जो सुर्त चढ़ी।
जाके बैठी जहाँ कि पहले थी।। २ ।।

निज गली यार के जो आशिक़ हैं।
भीड़ से अब एकांत लाऊँ मैं।। ३ ।।
जो कहूँ मैं सो कान देके सुनो।
सुर्त खैंचो चढ़ाओ धुन को सुनो।। ४ ।।
सिर में है तेरे बाग़ और सतसंग।
सैर कर जल्द ले गुरू का रंग।। ५ ।।
तान पुतली को आँख को मत खोल।
चढ़के आकाश का दुआरा खोल।। ६ ।।
जब चढ़े सुर्त तेरी अंदर यार।
देह की सैर कर व देख बहार।। ७ ।।
अचरजी सैर है तेरे बीचे।
पिरथी ऊपर है आसमाँ नीचे।। ८ ।।
बंकनाल होके आगे सुर्त चली।
तिरकुटी पहुँच कर गुरू से मिली।। ९ ।।
रूप सूरज का लाल क्या बरनूँ।
सहस सूरज हैं उसके इक रोमूँ।। १० ।।
आगे चल सुर्त सुन्न में पहुँची।
धुन किंगरी व सारंगी की सुनी।। ११ ।।
कुंड अमृत भरे नज़र आये।
हंस रूप होय मोती चुन खाये।। १२ ।।

सुन्न को छोड़ कर चली आगे।
पहुँची महासुन जहाँ सोहँग जागे।। १३ ।।
हाल व्हाँ का मैं क्या कहूँ क्या है।
जानता है वही जो पहुँचा है।।१४ ।।
रास्ते में वहाँ अँधेरा है।
सतगुरू संग ही निबेड़ा है।।१५ ।।
सतगुरू संग तै किया मैदाँ।
काल देख उनको हो गया हैराँ।। १६ ।।
सुर्त चढ़ कर गुफा में पहुँची धाय।
धुन सोहँग सुनी मुक़ाम को पाय।।१७ ।।
इस मुक़ाम अचरजी को पाय मिली।
खोल खिड़की को अंदरून चली।। १८ ।।
आगे चल सत्तलोक पहुँची धाय।
और अमी का अहार दम २ खाय।। १९ ।।
आगे इसके अलख अगम है मुक़ाम।
तिस परे हैगा राधास्वामी नाम।। २० ।।
यह मुक़ाम है अकह अपार अनाम।
संत बिन कौन पा सके यह धाम।। २१ ।।
भेद सब इस जगह तमाम हुआ।
सब हुए चुप्प मैं भी चुप्प हुआ।।२२ ।।

।। ग़ज़ल ३ ।।

निज रूप पूरे सतगुरू का। प्रेम मन
में छा रहा।। बचन अमृत धार
उनके। सुन अमी में न्हा रहा।। १ ।।
जब से चरनों में लगा। और धूर
चरनों की लई।। मन के अंतर का
अँधेरा। मैल सब जाता रहा।। २ ।।
मुखड़ा सुहावन क़द्द सीधा। चाल
अति शोभा भरी।। तेज रोशन सीने
अंदर। मन को घायल कर रहा।। ३ ।।
जो किया सतसंग सतगुरु। और
बचन पूरे सुने।। दीन दुनिया झूठी
लागी। और न उनका ग़म रहा।। ४ ।।
पिंड का सब भेद पोशीदा। मुझे
ज़ाहिर हुआ।। मेहर से पूरे गुरू
के। काम मेरा बन रहा।। ५ ।।
सुर्त ने जब धुन को पकड़ा। आस्माँ
पर चढ़ गई।। हो गई क़ाबिल वहाँ
पर। फिर न कोई ग़म रहा।। ६ ।।

।। वज़न दूसरा ।।

सुर्त आवाज़ को पकड़ के गई।
नभ पै पहुँची व जानकार हुई।। ७ ।।
देखी वहाँ पर अजब नवीन बहार।
और अनुभव जगा हुई सरशार।। ८ ।।
दुक्ख जन्म और मरन की तकलीफ़ात।
हो गई दूर और गई आफ़ात।। ९ ।।
भेद अंतर का मुझ पै हाल खुला।
जब कि सतगुरु से मैं सवाल किया।। १० ।।
देह को ख़ाक की मैं छोड़ गया।
काल भी थक के मुझ से बाज़ रहा।। ११ ।।
सुर्त आकाश पर चढ़ी इक बार।
कर्म कारज गये हुई करतार।। १२ ।।
मेरे सतगुरु ने जब करी किरपा।
पद से जाकर मिली वियोग गया।। १३ ।।
कर्मी शरई नमाज़ी क्या जानें।
भेद अभ्यासी आप पहिचानें।। १४ ।।
विद्यावान सब रहे मूरख।
अंतरी भेद को न जानें कुछ।। १५ ।।
संशय में सब जगत रहा कूड़ा।
रहा बाचक न पाया गुरु पूरा।। १६ ।।

पाये सतगुरु उसी का जागा भाग।
बाक़ी वाद और विवाद में रहे लाग।।१७।।
राधास्वामी गुरू ने की किरपा।
भाग जागा है मेरा अब धुर का।।१८।।

।। ग़ज़ल ४ ।।

यह सतसंग और राधास्वामी है नाम।
सरन आओ हे करमियों तुम तमाम।। १ ।।
जो सतगुरु से चाहो दया की नज़र।
सुरत और मन और मत भेंट कर।। २ ।।
ख़राब हैगी हालत सभों की यहाँ।
बचा चाहो सतगुरु सरन लो मियाँ।। ३ ।।
हटा कर के संशय सरन में तू आ।
प्रीत और परतीत दृढ़ कर सदा।। ४ ।।
तू सतगुरु के दरवाज़े पर कर पुकार।
और उनके भक्तों का रस्ता बुहार।। ५ ।।
पतंगा सा सतगुरु पै आपे को वार।
सिंहासन की धूल अपनी पलकों से झाड़।। ६ ।।
कभी मेहर से शहद देवें तुझे।
मुनासिब समझ ज़हर देवें तुझे।। ७ ।।
तू चुप होके ले और सिर पर चढ़ा।
तू ख़ुश होके पी और कह यह सदा।। ८ ।।

कि धन २ हैं धन २ हैं सतगुरु मेरे।
उतारेंगे भौजल से बेशक परे।। ९ ।।

।। मसनवी ५ ।।

अशआर सतगुरु महिमा

संत बचन हिरदे में धरना।
उनसे मुख मोड़न नहिं करना।। १ ।।
मीठा कड़ुवा बोल सुहाई।
मत को तेरे देहैं पकाई।। २ ।।
गरम सरद का सोच न लाना।
नरक अगिन से तोहि बचाना।। ३ ।।
तेरी समझ है किनके माहीं।
गुरु पूरा खोजो जग माहीं।। ४ ।।
उन सँग किनका पावे ज्ञान।
मार लेय तू मन शैतान।। ५ ।।
गुरु पूरा कस्तूर समान।
बाहर ख़ूँ घट मुश्क बसान।। ६ ।।
जब वे घट का भेद सुनावें।
नभ की ओर सुरत मन धावें।। ७ ।।
अंधे को शीशा दिखलाना।
ऐसे हरि पत्थर में जाना।। ८ ।।

गुरु बिन घट में राह न चलना।
डर और बिघन अनेकन मिलना।। ९ ।।
गुरु रक्षा जाके सँग नाहिं।
उसको काल करम भरमाहिं।।१० ।।
याते सतगुरु ओट पकड़ना।
झूठे गुरु से काज न सरना।।११ ।।
गिरि समान उन छाया जग में।
सुरत बिहंगम रहत अधर में।।१२ ।।
जो मन करड़ा पत्थर होवे।
गुरु से मिलत जवाहिर होवे।।१३ ।।
बँदगी भजन करे सौ बरसा।
गुरु का संग दुघड़िया बढ़का।।१४ ।।
जो मालिक का चहे दीदार।
जा तू बैठ गुरू दरबार।।१५ ।।
मालिक का बालक गुरु पूर।
मालिक का हरदम मंज़ूर।।१६ ।।
गुरु पूरे को समरथ जान।
करम बान उलटावें आन।।१७ ।।
जो मालिक का सुनता बोल।
उसका बचन सही कर तोल।।१८ ।।

जो तू घट में चालन हार।
चलने वाला सँग ले यार।।१९।।
हिन्दू चाहे मुसल्माँ होवे।
अरबी होय तुरक चाहे होवे।।२०।।
रूप रंग उसका मत देख।
सरधा भाव निशाना पेख।।२१।।
जिनके है मालिक का प्यार।
हिन्दू और तुरक दोउ यार।।२२।।
जो हैं माते मन के केल।
दो हिन्दू का होय न मेल।।२३।।
भान रूप मालिक सुन भाई।
नर देही में रहा छिपाई।।२४।।
फूल खिलें गुलनारी जबही।
बाग़ सुहावन लागे तबही।।२५।।
अस गुरु संग करे जो कोई।
पूरे सँग पूरा होय सोई।।२६।।
गुरु पूरे का सेवक बरतर।
क्या जो हुक्म करे राजों पर।।२७।।
हर दम सुरत चढ़े ऊँचे को।
मालिक ताज ख़ास दिया उसको।।२८।।

गुरु की गति परखो अंतर में।
बे परखे मत मानो मन में।।२९।।
जो गुरु परख न पावे घट में।
तो मत जाय अकेला बट में।।३०।।
रस्ते में है काल का घेरा।
शब्द सुना दुख देहै घनेरा।।३१।।
अभ्यासी को कहे पुकारी।
शब्द सुनो आओ सरन हमारी।।३२।।
जो कोई काल शब्द में रचिया।
घर नहिं जाय राह में पचिया।।३३।।
धावत जाय काल के घर को।
भिड़ा शेर खा जावें उसको।।३४।।
काल शब्द की यह पहचान।
मन चाहे धन आदर मान।।३५।।
काल शब्द में चित्त न लाओ।
तब निज घर का भेद खुलाओ।।३६।।
जिस घट परगट सत का नूर।
उसको पूजें देव और हूर।।३७।।
साध का निरखो आँख और माथा।
सत का नूर रहे जिस साथा।।३८।।

यह चिन्ह देख करें पहिचान।
गुरु पद का जिन हिरदे ज्ञान।।३९।।
परम पुरुष सम गुरु को जान।
बिन जिव्हा कहें बचन सुजान।।४०।।
वही हकीम और वही उस्ताद।
हिये में सुनत रहो उन नाद।।४१।।
छोड़ कुसंगी से तू प्यार।
सच्चा संगी खोजो यार।।४२।।
जिन कीन्हा सतगुरु का संग।
सत्त पुरुष का पाया रंग।।४३।।
झूठे गुरु का जो सँग लाय।
नरक पड़े और अति दुख पाय।।४४।।
गत मत भेद संत का भारी।
वही पावे जिन तन मन वारी।।४५।।
संत न देखें बोल और चाल।
वे परखें अंतर का हाल।।४६।।
गुरु का हाथ पुरुष का हाथ।
हाज़िर ग़ायब सब के साथ।।४७।।
उनका हाथ बहु लंबा ऊँचा।
सात मुक़ाम के ऊपर पहुँचा।।४८।।

जो तू सिर को राखा चाह।
दीन होय गुरु सरनी आय।।४९।।
गुरु तुझ को सब भाँति बचावें।
काल बिघन सब दूर करावें।।५०।।
झूठे गुरु की ओट न गहना।
सतगुरु चरन सरन सुख लेना।।५१।।
जिन सतगुरु का संग न कीन्हा।
दुख पाया हुआ काल अधीना।।५२।।
जो आया सतगुरु की छाँह।
सूरज लागा उसके पाँय।।५३।।

।। बहर दूसरी।।

जो तुझे चलना है तो इस ढंग चल।
जो ख़िज़िर है तो भी गुरु के संग चल।।५४।।
बन सके जहाँ तक तू गुरु से मुख न फेर।
सेवा कर अभ्यास कर मत कर तू देर।।५५।।
निरभै मत हो खौफ़ रख मन में सदा।
लाज तज बदनाम हो जग से जुदा।।५६।।
कोई तरह यह मन नहीं हाथ आयगा।
पूरे गुरु की छाया से मर जायगा।।५७।।
इसलिये दामन को तू उनके पकड़।
छोड़ मत ऐ यार उसको धर जकड़।।५८।।

जो तू मज़बूती से पकड़ेगा चरन।
मिल गई मालिक की तुझको निज सरन।।५९।।
देख हरदम मेहर उनकी अपने साथ।
नित निरख सिर पर तू अपने उनका हाथ।।६०।।
गुरु के हिरदे में तू कर ले अपना घर।
सुर्त रूप अपना निरख चढ़ मानसर।।६१।।
गुरु की ताड़ और मार सह धर कर पियार।
मूरखों की अस्तुती पर ख़ाक डार।।६२।।
गुरु से परमारथ की दौलत पायगा।
सुर्त सँग चैतन्य अँग हो जायगा।।६३।।
पूरे गुरु को षटमुखी आईना जान।
मालिक उसमें बैठ कर देखे है आन।।६४।।
बे वसीले गुरु के परमारथ न पाय।
चाहे कोई कुछ करे निज घर न जाय।।६५।।
जिन को मालिक का हुआ हासिल विसाल।
थोड़ा सा मैंने कहा यह उनका हाल।।६६।।
पूरे गुरु हैं शेर वे करते शिकार।
और सब बाक़ी हैं उनके टुकड़े ख़्वार।।६७।।
बस रहो चुप और गुरु सरनी गहो।
हुक्म मानो उनके चरनों में रहो।।६८।।

ओट पूरे की गहो पूरे बनो।
नीच की संगत न कर नहिं सिर धुनो।।६९।।
जो भजन और बंदगी हर की करे।
या करम और धर्म सब विधि से करे।।७०।।
गुरु की फटकार और निरादर जिन सहा।
वह हुआ इन सब से बेहतर मैं कहा।।७१।।
हक़ ने पैग़म्बर को समझाया कि मैं।
मिल नहीं सकता ज़मीं असमान में।।७२।।
ऊँचे और नीचे ठिकाने में नहीं।
अर्श कुरसी पर भी मैं रहता नहीं।।७३।।
दिल में भक्तों के मैं रहता हूँ सदा।
जो मुझे चाहे तो माँग उनसे तू जा।।७४।।
गुरु की महिमा का समझना हैगा यह।
दीन हो चरनों में तू ज्यों ख़ाक रह।।७५।।
एक कर हर गुरु को क्या है मानना।
अपना आपा उनके सन्मुख घालना।।७६।।
जिसके दिल से उड़ गये दुनिया के रंग।
ग़ैब के नक़्श उसमें झलकें बे दिरंग।।७७।।
जो नज़र अपने क़सूरों पर करे।
जल्द पूरा होवे रस्ता तै करे।।७८।।

आप को जाने है पूरा जो अजान।
थक रहा रस्ते में हक़ के वह निदान।।७९ ।।

महिमा अनहद शब्द और जुगत
उसके प्राप्ति की

भर्म की ठेंठी निकालो कान से।
तब लगाओ ध्यान अनहद तान से।।८० ।।
सुर्त के कानों से फिर तू शब्द सुन।
शब्द कहो चाहे कहो अंतर बचन।।८१ ।।
घट में जो उठती है रागों की सदा।
जो कहूँ मैं तुझसे हाल उसका ज़रा।।८२ ।।
जान मुरदों की उठें क़बरों से भाग।
ऐसा अंतर का है बाजा और राग।।८३ ।।
कान से चित दे सुनो आवाज़ को।
पर सुनाते हैं नहीं इस राज़ को।।८४ ।।
लाओ पाओं के तले तू आरमाँ।
शब्द ऊँचे देश का सुन सूरमाँ।।८५ ।।
जो निदा खैंचे है ऊँचे को तुझे।
जान वह धुन आई ऊँचे से तुझे।।८६ ।।
सुन के जो आवाज़ जागे कामना।
काल की आवाज़ है घर घालना।।८७ ।।

देख ले तू यों पयम्बर ने कहा।
आती है आवाज़ हक़ मुझको सदा।।८८।।
मुहर कानों पर तुम्हारे है लगी।
सुन नहीं सकते हो अनहद धुन कभी।।८९।।
सुनता हूँ आवाज़े हक़ घट में सदा।
दिल को मेरे करती है पाक और सफ़ा।।९०।।
काटते और खोदते रस्ता रहो।
मरते दम तक एक दम ग़ाफ़िल न हो।।९१।।

।। वज़न दूसरा ।।

रूह है हुक्म भेद अंस ख़ुदा।
बे-ज़बाँ करती है आवाज़ सदा।।९२।।
हाय बंधन धरे तू देही का।
न सुने ज़िक्र पाक मालिक का।।९३।।
यार तुझको पुकारता दिन रात।
तू न सुनता है हाय उसकी बात।।९४।।
सब जगह है अवाज़ उसकी पूर।
खोल कानों को अपने धरके शऊर।।९५।।
कान का खोलना यही है सुनो।
शब्द बाहर का सुनना बंद करो।।९६।।
वह है आवाज़ हर वक़्त जारी।
घट में जन्म और मरन से है न्यारी।।९७।।

आदि और अंत उसका है बेहद।
इस सबब से कहें उसे अनहद।।९८।।
पहिले ज़ाहिर हुआ शब्द भंडार।
फिर हुआ पैदा उससे सब संसार।।९९।।
शब्द करता न अपना जो इज़हार।
कभी परगट न होता यह संसार।।१००।।
सुनो वह शब्द और लो आनंद।
भूल आपे को छोड़ दे दुख दंड।।१०१।।

।। ग़ज़ल ।।

बड़ा ज़ुल्म है मेरे यार यह।
कि तू जाय सैर को बाग़ के।।
तू कँवल से आपहि कम नहीं।
हिये में उलट के चमन में आ।।१०२।।
ख़ाली नाफ़ों की तू तलाश में।
क्यों उठाये मेहनतो रंज को।।
धर प्रेम सुन्दर श्याम का।
ख़ुशबू उलट के ले घट में आ।।१०३।।
तेरे मन में जो नहीं बासना।
तन संग भोग बिलास की।।
तब कौन तुझको खैंचता।
कि तू जग की चोर सरा में आ।।१०४।।

तेरी चाह दुख सुख रूप है।
तेरा मन ही काल और जाल है।।
तेरी आस जग की पुकारे है।
कि तू फेर में तू व मैं के आ।।१०५।।
तेरी है किधर को नज़र लगी।
कि तू इस क़दर करे ग़ाफ़िली।।
तेरी मौत सिर पै है आ खड़ी।
ज़रा आँख खोल कफ़न में आ।।१०६।।
तेरे घट में गुरु दरबार से।
हर वक़्त आती है यह निदा।।
तज बासना जग जार की।
ले प्रेम अंग को घर में आ।।१०७।।
ग़म इन्तिज़ार का सह रहा।
तेरे दर्शनों को तड़प रहा।।
ज़रा डग उठा के करो दया।
छिन एक जाँ मेरे तन में आ।।१०८।।

।। वज़न दूसरा ।।

रात गुरु भेदी ने मुझसे यों कहा।
तुम से गुरु का भेद नहीं राखूँ छिपा।।१०९।।
काम भक्ती के करो तुम सहज से।
जो करो सख़्ती तो दुनिया सख़्त है।।११०।।

बिन पिरेम और भेद नहिं पतियाय धुन।
या ते कर अभ्यास भक्ती हे सजन।।१११।।
आस्माँ से आती है हर दम अवाज़।
क्यों पड़ा दुनिया में नहिं सुनता उसे।।११२।।
कोइ नहिं भेदी है सतगुरु धाम का।
बस यही कि घंटे की आवे सदा।।११३।।

।। वज़न दूसरा ।।

नाम की महिमा

जब देखा तेज मैंने जो मालिक के नाम का।
दिल और जान भेंट हुए गुरु के नाम का।।११४।।
प्यासों की प्यास बुझ गई धारा से नाम के।
ऐसा है आबे शीरीं अमी रूप नाम का।।११५।।
नामी व नाम में है नहीं फ़र्क़ देख ले।
छबि यार की दिखाता है वह तेज नाम का।।११६।।
हिरदे में तुझको दीख पड़ेगा जमाले यार।
जो रगड़ा उस पै नित्त दिया जावे नाम का।।११७।।
मालिक का संग तुझको मिला
यह सहीह जान। जो दिल में तेरे
लाग रहा ध्यान नाम का ।।११८।।

कर संग नाम का जो तू दीदार
को चहे। मालिक का मेल है
जो हुआ मेल नाम का।।११९।।
मालिक के लोक में तेरा हो
जायगा गुज़र। जो तू उड़ेगा ऊँचे
को बल ले के नाम का।।१२०।।
सुमिरन से नाम गुरु के
तू ग़मगीं न हो कभी।
मालिक का प्यार आवे
जो हो प्यार नाम का।।१२१।।

।। प्रेम की महिमा और उसका असर।।

सुर्त मन में प्रेम गुरु जिसके बसा।
फूल से ज़्यादा है हर दम वह खिला।।१२२।।
प्रीत सतगुरु की तू हर दम धार यार।
औलियाओं का बना इसही से कार।।१२३।।
यह न जानो तुम कि हक़ मिलता नहीं।
वह है दाता उसको कुछ मुश्किल नहीं।।१२४।।
प्रेम कारन जिसने कीन्हा ख़र्च माल।
धन है वह जन उसको
मिलिया प्रेम हाल।।१२५।।

पहिले जिसने अपना घर दीन्हा उजाड़।
पाई फिर गुरु प्रेम की दौलत अपार।।१२६।।
जग के जीवों के लिये दुनिया का मुल्क।
भक्त जन के वास्ते मालिक का मुल्क।।१२७।।
प्रेम चाहे छेद देवे आस्माँ।
प्रेम से पिरथी रहे कंपायमाँ।१२८।।
प्रेम डाले जोश से समुँदर को फाड़।
प्रेम चाहे रेत सम पीसे पहाड़।।१२९।।
प्रेम छिन में मुरदे को ज़िंदा करे।
प्रेम पल में शाह को बंदा करे।।१३०।।
प्रेम सब कड़वाई को मीठा करे।
प्रेम छिन में लोहे को कंचन करे।।१३१।।
पाक करता हैगा नापाकी को प्रेम।
दूर कर देता है सब दरदों को प्रेम।।१३२।।
प्रेम से हो जाय काँटा गुल गुलाब।
प्रेम से हो जाय सिरका ज्यों शराब।।१३३।।
प्रेम अग्नि अपने हिरदे बालिये।
फ़िक्र भजन और बंदगी का जालिये।।१३४।।
प्रेमियों का मत है सब मत से जुदा।
प्रेमियों का इष्ट है मालिक सचा।।१३५।।

कुफ़्र उसका दीन है और दीन
उसका नूरे जाँ। जो तू निरभय हो
गया सारे जहाँ में हुई अमाँ।।१३६।।
इश्क़ वह शोला है जिस घट में वह
रोशन हो गया। एक प्रीतम रह गया
और बाक़ी सब जल भुन गया।।१३७।।
प्रेम जब आया सभी को रद किया।
एक प्रीतम रह के बाक़ी बह गया।।१३८।।
वाह वाह हे प्रेम तू है निरमला।
ग़ैर को प्यारे सिवा दीना जला।।१३९।।
रीत भक्ती की सुनो हे साधवा।
लोभ की मत कर अमीरों से तू चाह।।१४०।।
जिसके मन में है भरी
भोगों की चाह। कस खुले
मालिक का भेद और हो निबाह।।१४१।।
सौ तरंगें मन में तेरे हैं भरी।
नूर मालिक का नहीं झलके ज़री।।१४२।।
दुनिया को चाहे तू और दीदार को।
यह है मुश्किल अन समझ है यार तू।।१४३।।
जो तेरी आँखों से परदा दें उठा।
होगा दुनिया से तू बेज़ार और ख़फ़ा।।१४४।।

धोखे उसके जब तुझे आवें नज़र।
भाग जावेगा तू उससे दूर तर।।१४५।।
खाना बे-शुबहे का तुझको है ज़रूर।
तो भजन तुझसे बनेगा बे-क़सूर।।१४६।।
जो तू खाना खायगा हक़ और हलाल।
जीत लेगा मन को ऐ साहिब कमाल।।१४७।।
दूर कर मन से जो है गुरु के सिवाय।
तब रहे प्रीतम तेरे मन में समाय।।१४८।।
जब तलक मन में तेरे है मान यार।
हो नहीं सकता है मालिक तेरा यार।।१४९।।
जब तेरे मन से हुआ हंकार दूर।
जा मिले मालिक से और पावे सरूर।।१५०।।
अपने मालिक पै तू दे आपे को वार।
जब नहीं तू तब रहा मालिक दयार।।१५१।।
जो कि तन मन से हुआ अपने जुदा।
मिल गया बस उसको इसरारे ख़ुदा।।१५२।।
आँख कान और मुँह को अपने बंद कर।
भेद मालिक का तुझे आवे नज़र।।१५३।।
चाह दुनिया की करे मन को सियाह।
गुरु से गुरु को माँग मत कर और चाह।।१५४।।

जिस क़दर तुझको है मालिक से पियार।
उससे ज़्यादा तुझसे वह करता है प्यार।।१५५।।
पर तुझे उसकी परख होती नहीं।
मेहर की उसके ख़बर होती नहीं।।१५६।।
बुल्हवस को दर्दे इश्क़ होता नहीं।
सोज़ परवाने का मक्खी को नहीं।।१५७।।
इक जनम में दौलते दीदार पाय।
हर किसी को वस्ले हक़ मिलता नहीं।।१५८।।
जो तू मूरत याकि अग्नी पूजता।
आओ आओ जैसे तैसे भाव से।।१५९।।
सौ दफ़े भूल और चूक होगी मुआफ़।
मत निरास होना तू इस दरबार से।।१६०।।

।। ग़ज़ल ६ ।।

प्यारे ग़फ़लत छोड़ो सर बसर। गुरु बचन सुनो तुम होश धर।। मन की तरंगें रोक कर। सतसंग में तुम बैठो जाय।।१।।
गुरु का चरन पकड़ जकड़। गुरु का स्वरूप ध्यान धर।।इस मन की खोओ सब अकड़। नैनन में तुम बसो आय।।२।।

यह दुनिया ख़्वाबो ख़याल है। जो आया यहाँ सो चाल है।। क्या पूछो ह्याँ क्या हाल है। यह काल कराला सबको खाय।। ३।। क्या भूला तू धन माल देख। माया का यह सब जाल पेख।। काल करम की मिटे रेख। जो सतगुरु की सरन आय।।४।। सतगुरु से कर आन प्यार। उनसे ले भेद सार।। सुरत शब्द मारग अपार सुरत मन धुन से लगाय।।५।। देख अंतर जोती जमाल। लख गगना में सूर लाल।। सुन्न के परे महा काल। सतगुरु सँग चलो धाय।।६।। मुरली धुन सुन रसाल। ऊँचे पर धरो ख़्याल।। सत्त पुरुष निरखो जलाल फिर अलख अगम परस जाय।।७।। धाम अनामी धुर अधर। निरखा जाय अति प्रेम कर।। राधास्वामी चरनन सीस धर। अस्तुत उनकी रही गाय।।८।।

।। रेख़ता ७ ।।

करो सतसंग सतगुरु का, भेद घर का वहाँ पाओ। धार परतीत चरनन में, दीन दिल सरन में धाओ।।१।।

समझ कर जगत में बरतो, फँसो नहिं जाल में उसके। रहो हुशियार इंद्रियन से, भोग सँग धोखा मत खाओ।।२।।

शब्द का भेद ले गुरु से, करो अभ्यास तुम निस दिन। गुनावन जक्त की तज कर, चित्त से ध्यान धुन लाओ।।३।।

जुगत से रोक मन घट में, ध्यान गुरु रूप का धारो। सुमिर राधास्वामी नाम हर दम, गुरू गुन नित्त तुम गाओ।।४।।

सुरत मन तान गगना में, बजे जहँ संख और घंटा। सुनो फिर शब्द ओंकारा, सुन्न चढ़ मानसर न्हाओ।।५।।

भँवर गढ़ जा सुनी बानी, सत्तपुर जाय हुलसानी। अलख और अगम के पारा, अनामी धाम चढ़ जाओ।।६।।

मिली राधास्वामी से प्यारी, सरावत भाग निज अपना। भटक में बहु जनम बीते, पड़ा मेरा ऐसा अब दावो।।७।।

।। मसनवी ८।।

मैं सतगुरु पै डालूँगी तन मन को वार।
मैं चरनों में क़ुरबान हूँ बार बार।।१।।
करूँ कैसे उनकी दया का बयान।
दिया मुझको प्रेम और परतीत दान।।२।।
खुली आँख जब मुझको आया नज़र।
कि दुनिया है धोखे की जा सर बसर।।३।।
ज़मीन और ज़न और ज़र की है चाह।
सभी जीव रहते हैं ख़्वार और तबाह।।४।।
हुए मुबतिला दामे हिरसो हवस।
न पावें कहीं चैन वह इक नफ़स।।५।।
न मालिक का ख़ौफ़ और न मरने का डर।
न खोजें कभी अपने घर की ख़बर।।६।।
करें फ़िक्र मेहनत से दुनिया के काम।
रहें इस्तरी और धन के ग़ुलाम।।७।।
जो दुनिया के नामावरी के हैं काम।
दिलो जाँ से उसमें पचे हैं मुदाम।।८।।

भरा हैगा भोगों की ख़्वाहिश से मन।
उसी में लगाते हैं धन और तन।।९।।
न शरमो हया उनको माँ बाप की।
न कुछ फ़िक्र है पुण्य और पाप की।।१०।।
जो मन इंदरी पावें लज़्ज़ात को।
ग़नीमत समझते हैं इस बात को।।११।।
जो दुनिया के सामाँ मुयस्सर हुए।
हुए ख़ुश दिल और मान में सब मुए।।१२।।
नहीं जीव का अपने उनको ख़याल।
कि मरने पै क्या होयगा उसका हाल।।१३।।
कहाँ से वह आता है जाता कहाँ।
कहाँ कौन है मालिके जिस्मो जाँ।।१४।।
कोई जो कहाते हैं परमारथी।
जो देखा तो वह हैं निपट स्वारथी।।१५।।
करें ज़ाहिरी पाठ पूजा मुदाम।
सुनें भागवत और गीता तमाम।।१६।।
मगर दिल पै उनके न होवे असर।
न मरने का ख़ौफ़ और न नरकों का डर।।१७।।
करें तीरथ और यात्रा शौक़ से।
रखें बर्त और दान दें ज़ौक़ से।।१८।।

मगर होवे दुनिया का मतलब ज़रूर।
रहे है यही आस हिरदे में पूर।।१९।।
जो दुनिया की कुछ आस होवे नहीं।
तो इस काम में पैसा ख़रचें नहीं।।२०।।
जो मालिक का भेद इनसे कहवे कोई।
उड़ावें हँसी और न मानें कभी।।२१।।
भरा हैगा मन उनका शुबहात से।
न बाचें जहालत की आफ़ात से।।२२।।
वह संतों के कहने को मानें नहीं।
सफ़ा बुद्धि से बात तोलें नही।।२३।।
कहूँ क्या कि दिल में हैं वे नास्तिक।
मगर धन के लेने को हैं आस्तिक।।२४।।
होवे ऐसे जीवों का कैसे निबाह।
जहन्नुम की अग्नी में पावेंगे दाह।।२५।।
वहाँ हाथ मल मल के पछतायँगे।
किये अपने कामों का फल पायँगे।।२६।।
मदद कोई उनकी करेगा नहीं।
कोई इनका रोना सुनेगा नहीं।।२७।।
पकड़ इनको जम दूत देवेंगे मार।
सरप इनकी गरदन में देवेंगे डार।।२८।।

अगिन खंभ से बाँध देंगे इन्हें।
अगिन कुंड में ग़ोता देंगे इन्हें।।२९।।
निहायत दुखी होके चिल्लायेंगे।
यह ग़फ़लत का फल अपना यों पायेंगे।।३०।।
निरख करके जीवों का अस हाल ज़ार।
संत आये दुनिया में औतार धार।।३१।।
दया कर सुनावें उन्हें घर का भेद।
मेहर से करें दूर करमों का खेद।।३२।।
राह घर के जाने की देवें लखा।
सुरत शब्द मारग का देवें पता।।३३।।
हर इक घट में आवाज़ होती मुदाम।
वही शब्द की धुन है और वोही नाम।।३४।।
सुने जो कोई धुन को चित धर के प्यार।
वही जीव घर जावे तिरलोकी पार।।३५।।
सुनो भेद मंज़िल का अब राह के।
वह हैं सात बालाय छः चक्र के।।३६।।
यह हैं नाम छः चक्करों के सुनो।
गुदा इंदरी और नाभी गिनो।।३७।
चकर चौथा हिरदे गुलू पाँचवाँ।
छठा दोनों आँखों के है दरमियाँ।।३८।।

इसी जा पै है सुर्त रूह का क़याम।
परे इसके संतों के सातों मुक़ाम।।३९।।
सहसदल है पहिला गगन दूसरा।
सुन्न पर महासुन का मैदाँ बड़ा।।४०।।
गुफ़ा लोक चौथा है सोहंग नाम।
परे इसके सतलोक आली मुक़ाम।।४१।।
अलख लोक की क्या कहूँ दरत्तगाह।
अगम लोक संतों का है तख़्तगाह।।४२।।
परे इसके है कुल्ल मालिक का धाम।
अपार और अनंत राधास्वामी है नाम।।४३।।
अकह और अगाध और यही है अनाद।
वहीं से उठी मौज और आद नाद।।४४।।
नहीं कोई जाने है यह भेद सार।
रहे थक के सब कोइ गगना के वार।।४५।।
करम और धरम में रहे सब अटक।
नहीं जीव के कल्यान की कुछ खटक।।४६।।
रहे पूजते देवी देवा को
झाड़। न मालिक का खोज
और न दिल में पियार।।४७।।
रहे पिछली टेकों में भूले मुदाम।
नहिं जानें महिमा गुरू और नाम।।४८।।

अगर चाहो तुम अपना सच्चा उद्धार।
तो सतगुरु को जल्दी से लो खोज यार।।४९।।
बचन संत सतगुरु के चित दे सुनो।
पिरीत और परतीत हिरदे धरो।।५०।।
पियो चरन अमृत को तुम प्रीत से।
भरम काटो परशादी के सीत से।।५१।।
करो उनका सतसंग तुम बार बार।
लेओ शब्द मारग का उपदेश सार।।५२।।
करो मन से मालिक का सुमिरन मुदाम।
परम पुर्ष राधास्वामी है उसका नाम।। ५३ ।
गुरू रूप का ध्यान हिरदे में लाय।
सुरत और मन शब्द धुन से लगाय।।५४।।
यह अभ्यास नित घट में करना सही।
कटें मन के औगुन इसी से सभी।।५५।।
कोई दिन में दरशन गुरू के मिलें।
सुने शब्द की धुन सुरत मन खिलें।।५६।।
इसी तरह नित घट में आनन्द पाय।
बढ़त जाय आनन्द मन शान्त लाय।।५७।।
कोई दिन में मुक्ती का पावे सरूर।
तू हो जाय तन मन से न्यारा ज़रूर।।५८।।

प्रीत और परतीत दिन दिन बढ़े।
तेरे मन में गुरु प्रेम का रँग चढ़े।।५९।।
उमँग कर तू सतगुरु की सेवा करे।
प्रेम अंग ले नित्त आरत करे।।६०।।
मिले प्रेम की तुझ को दौलत अपार।
सरावेगा भागों को तब अपने यार।।६१।।
किया अब यह उपदेश का ख़त्म राग।
जो माने उसी का जगे पूरा भाग।।६२।।
करोगे जो हित चित से नित तुम यह कार।
करें राधास्वामी तुम्हारा उधार।।६३।।
जपो प्रीत से नित्त राधास्वामी नाम।
पाओ मेहर से एक दिन आदि धाम।।६४।।

।। ग़ज़ल ९ ।।

आज सतगुरु की सरन
भाग से मैंने पाई।
शब्द धुन बाज रही
चाँदनी घट में छाई।।१।।
कर्म और धर्म भरम
जान के सब छोड़ दिये।
टेक पिछलों की तजी
प्रेम गुरू में लाई।।२।।

सुन के सतगुरु के बचन
पिया अमी रस सारा।
बैठ सतसंग में
परतीत हिये में आई।। ३ ।।
गुरु से ले शब्द का
उपदेश किया अभ्यासा।
घंटा और संख सुने
जोत लखी नभ जाई।। ४ ।।
आगे चढ़ करके सुनी
त्रिकुटी में धुन मिरदंग।
सुन में हंसन से मिली
रागनी नइ नइ गाई।। ५ ।।
संग सतगुरु के चली
जाय मिली सोहंग से।
सतपुरुष मेहर करी
बीन की धुन सुनवाई।। ६ ।।
लख अलख आगे अगम
लोक का निरखा नूरा।
राधास्वामी का दरश
पाय चरन में धाई।। ७ ।।

* * * * *

।। ग़ज़ल १० ।।

आज सतगुरु के चरन में
तू लगा ले नेहरा।। टेक।।
शौक़ के साथ करो
चेत के सतसंग उनका।
मेहर से उनके तेरा
छूटे चौरासी फेरा।। १ ।।
चूके मत प्यारी कहन
मान ले हित कर मेरी।
माया और काल ने यहाँ
डाला है भारी घेरा।। २ ।।
शब्द उपदेश गुरू से ले
कमाओ निस दिन।
चालो घर की तरफ़
अब छोड़ के मेरा तेरा।। ३ ।।
राधास्वामी की सरन
धार ले दृढ़ कर मन में।
वे करें मेहर तेरा
पार लगावें बेड़ा।। ४ ।।

।। ग़ज़ल ११ ।।

आज मम भाग जगे
गुरु सतसंग आय मिली।। टेक।।
सुन के सतगुरु के बचन
हो गई मैं आज निहाल।
संग में प्रेमी जनों के
मैं मगन होय रली।। १ ।।
भेद सतगुरु ने दिया
ऊँचे से ऊँचे देशा।
और मत जितने हैं उन
का रहा सिद्धान्त तली।। २ ।।
शब्द घट घट में रहा बोल
सुनो दिन और रात।
भाग बड़ वह है जो सुनता
है उसे चित से अली।। ३ ।।
ध्यान गुरु आज सम्हालो
सुनो धुन को घट में।
श्याम द्वारे के परे नभ में
लखो जोत बली।। ४ ।।
तिरकुटी जाय मिला
अद्भुत दर्शन गुरु का।

माया और काल की ताक़त
यहाँ सब आज गली।। ५ ।।
सुन्न के पार भँवर में
गई सूरत चढ़ कर।
मुरली और बीन सुनी
सत्तपुरुष पास पली।। ६ ।।
गुरु से ले भेद चली
आगे को सूरत प्यारी।
राधास्वामी का दरश
पाय के धुर धाम वली।।७ ।।।

।। ग़ज़ल १२ ।।

आज प्यारी तू समझ सोच के
कर काम अपना।। टेक।।
क्यों पचो दुनिया में
यह देश तुम्हारा नाहीं।
मिल के सतगुरु से करो
खोज भला धाम अपना।। १ ।।
तेरा हितकारी नहीं
दुनिया में गुरु सम कोई।
वे जतावेंगे तुझे मेहर से
निज नाम अपना।। २ ।।

शब्द का भेद जुगत
देवेंगे सतगुरु तुमको।
नेम से करना तुम अभ्यास
सुबह शाम अपना।। ३ ।।
राधास्वामी की सरन
धार के चलना घर को।
उनके चरन अंबु से तुम
नित्त भरो जाम अपना।। ४ ।।

।। ग़ज़ल १३ ।।

आज आनंद रहा
मौज से चहुँ दिस छाई।
राधास्वामी की रहे
सब मिल महिमा गाई।। १ ।।
मेहर से गुरु के मिला
ऐसा सुहावन संजोग।
ख़ुश हुए देख के
यह औसर सज्जन भाई।। २ ।।
शादियाने के लगे बाजे
चहूँ दिस बजने।
राग और रागनी सुर संग
उमंग कर गाई।। ३ ।।

हर तरफ़ नारे ख़ुशी के
लगे करने गुंजार।
अर्श ने गरज गरज
बूँद अमी बरसाई।। ४ ।।
उमँग उमँग हर कोई
देता है मुबारकबादी।
राधास्वामी रहें निज
मेहर से नित प्रति सहाई।। ५ ।।

।। ग़ज़ल १४ ।।

आज हंगामये शादी का
गरम हो रहा देखो हर जा।
राधास्वामी की दया का
करो सब शुक्र अदा।।१।।
हंस और हंसनी
ख़ुश होके बधाई देते।
अर्श से भी चली आती है
ख़ुशी की यह सदा।। २ ।।
राधास्वामी की दया से
यह मुबारक जोड़ा।
ख़ुश रहे याद में चरनों के
करे मन को फ़िदा।। ३ ।।

।। ग़ज़ल १५ ।।

आज गुरु प्यारे के चरनों में झलकती है
अजब मेंहदी की लाली।।टेक।।
देखो गुरु प्यारे के चरनों में
अजब मेंहदी की लाली।
हाथ भी सुर्ख़ हैं और मुखड़े की
छबि देखी निराली।। १ ।।
हार और फूल लिये आती हैं
सखियाँ घर से।
मेंहदी हाथों में लगाती हैं
सरब सूरत बाली।। २ ।।
लाल रँग छाय रहा
गुरु के महल में चहुँ दिस।
देख परकाश तले रह गई
माया काली।। ३ ।।
सुर्त बन्नी का मिला भाग से
गुरु बन्ने से जोड़ा।
राधास्वामी की दया पाय के
निज घर चाली।। ४ ।।

* * * * *

।। ग़ज़ल १६ ।।

आज धुन अनहद बाज रही है।
अधर चढ़ सूरत गाज रही है।। १ ।।
देख घट जगमग जोत उजार।
मगन होय भाग सराह रही है।। २ ।।
सुनत धुन गगना ओअंकार।
रूप गुरु अद्भुत निरख रही है।। ३ ।।
सुन्न में खिली चाँदनी सार।
ररंग धुन अक्षर गाज रही है।। ४ ।।
बाँसरी बीन की परखत धार।
दरश राधास्वामी झाँक रही है।। ५ ।।

।। ग़ज़ल १७ ।।

न जग में चैन और न स्वर्ग सुख है
न ब्रह्म पद में अमर अनंदा।
जहाँ तलक हैगा माया घेरा
वहाँ तलक हैगा जम का फंदा।। १ ।।
पड़े भटकते हैं जग में सारे
पदार्थ और इन्द्रियों के मारे।
वहाँ से अब उनको कौन उबारे
हुआ है अति करके जीव गंदा।। २ ।।

पुरानी टेकों में अटक रहे हैं
करम धरम में भटक रहे हैं।
सुरत शब्द की जुगत न माने
हुआ है सारा ही जगत अंधा।। ३ ।।
मिलें ने जब लग गुरू पियारे
छुटें न मन के विकार भारे।
न सुर्त चीन्हें न शब्द सम्हारे
रहे है बंधन में जीव बंधा।। ४ ।।
विरह जगा गुरु चरन में धाओ
कर उन्का सतसंग धर के भाओ।
उलट के धुन में सुरत लगाओ
पिंड का चढ़ के नाका खंडा।। ५ ।।
गुरू मेहर से सुरत चढ़ावें
सुन्न की धुन अजब सुनावें।
करम का लेखा तेरा चुकावें
लखावें निज घट की तोहि संधा।। ६ ।।
वहाँ से भी फिर अधर चढावें
अलख अगम सत की धुन सुनावें।
पियारे राधास्वामी से मिलावें
दिलावें भक्ती का तुझको झंडा।। ७ ।।

* * * * *

।। ग़ज़ल १८ ।।

लगे हैं सतगुरु मुझे पियारे
कर उन्का सतसंग शब्द धारे।
छुटे हैं मन् के विकार सारे
कहूँ मैं कैसे गुरू की गतियाँ।। १ ।।
सुरत शब्द में लगाऊँ दम्दम्
सुनूँ मगन होय धुनों की झमझम्।
होत सब दूर मन् की हमहम्
सुनें कौन ऐसी घट में बतियाँ।। २ ।।
बढ़त पिरेम् और पिरीत दिन् दिन्
होत मन से सुरत भिन् भिन्।
गावती गुरु की महिमा छिन् छिन्
रहत नित गुरु चरन में रतियाँ।। ३ ।।
जगत के जीव हैं अभागी सारे
फिरें हैं मन इन्द्रियों के मारे।
जाल से उनको को निकारे
सुनें न चित देके संत मतियाँ।। ४ ।।
जगा है मेरा अपार भागा
चरन में राधास्वामी आन लागा।
गायें सब जीव माया रागा
रहे हैं थक मग में जोगी जतियाँ।। ५ ।।

।। ग़ज़ल १९ ।।

मन् की मत मान के पछताओगे।
नज़रे मेहर से गिर जाओगे।।१।।
भूलो मत दुनिया में रहना हुशियार।
काल के द्वारे पै टकराओगे।।२।।
करनी का आपने क्या दोगे जवाब।
धर्म के सामने चकराओगे।।३।।
पकड़ो सतगुरु के चरन जल्दी से।
रक्षा हो जावेगी जो उनकी सरन आओगे।।४।।
जो न मानोगे बचन काल करेगा सख़्ती।
देख जमदूतों को घबराओगे।।५।।
सख़्त दुख भोगोगे चौरासी में।
दामन अपना जो कहीं माया को पकड़ाओगे।।६।।
राधास्वामी का सुमिर नाम हिये से अपने।
छिन में सब दुक्खों से बच जाओगे।।७।।

।। ग़ज़ल २० ।।

जुड़ मिल के हंस सारे।
दर्शन को गुरु के आये।।
बँगला अजब बनाया।
शोभा कही न जाये।।१।।

जब आरती सँवारी।
हुई धूमधाम भारी।।
निज भाग सब सरावत्।
औसर अधिक सुहाये।। २ ।।
सब मिल के शब्द गावत्।
भर भर पिरेम लावत।।
नइ नइ उमँग जगावत।
चहुँ दिस हरष समाये।। ३ ।।
घंट और संख गाजें।
मिरदंग ढोल बाजें।।
सारँग सितार बीना।
धुन बाँसुरी जगाये।। ४ ।।
हुये गुरु दयाल परसन।
सब को लगाया चरनन।।
वारत रहे हैं तन मन।
राधास्वामी ओट आये।। ५ ।।

।। मसनवी २१ ।।

करूँ संतमत का मैं थोड़ा बयाँ।
वही सत्त मत हैगा अंदर जहाँ।।१ ।।
उसी को कहें राधास्वामी पंथ सार।
होवे जिससे जीवों का सच्चा उधार।।२ ।।

परे सब के है कुल्ल मालिक का धाम।
परम पुर्ष राधास्वामी है उनका नाम।। ३ ।।
यही नाम ज़ाती है असली निदा।
होत जिसकी धुन घट में सब के सदा।। ४ ।।
जो गावेगा यह नाम धर कर के प्यार।
उसी जीव का होगा सच्चा उधार।। ५ ।।
मगर भेद भी जानना है ज़रूर।
बिना भेद कारज न होवेगा पूर।। ६ ।।
उठी स्वामी चरनों से इक आदि धार।
वही कुल्ल रचना की करतार यार।। ७ ।।
उसी आदि धारा का राधा है नाम।
उसी से सरें सब के कारज तमाम।। ८ ।।
जहाँ से वह धारा निकस्ती भई।
वही आदि स्वामी है सबका सही।। ९ ।।
उतर कर के वह धार ठहरी जहाँ।
अगम लोक की हुई रचना वहाँ।। १० ।।
अगम लोक का भारी मंडल बँधा।
वही कुल्ल रचना का घेरा हुआ।। ११ ।।
हुई जिस क़दर उसके रचना तले।
वह इक गोशे में उसके निस दिन पले।। १२ ।।

अगम की हुई जब कि रचना तमाम।
उठी व्हाँ से फिर एक धारा अगाम।।१३।।
उतर करके नीचे किया बास आय।
अलख लोक की वहाँ रचना रचाय।।१४।।
बँधा उसका मंडल ब-दस्तूर आय।
वहाँ से उतर धार सतपुर रचाय।।१५।।
हुआ सतपुरुष का वह सतलोक धाम।
हुई गिर्द हंसों की रचना तमाम।।१६।।
जुदे दीप हंसों के पैदा किये।
पुरुष का दरश कर मगन सब हुए।।१७।।
हुआ सत्त रचना का यहँ तक ज़हूर।
नहीं जहाँ माया नहीं काल कूर।।१८।।
नहीं कोई आसा नहीं कोई कार।
दरश पुर्ष का और अमी का अहार।।१९।।
करें मिल के सब ऐश आनंद सार।
नहीं काल कष्ट और नहीं कर्म भार।।२०।।
बहुत काल तक ऐसी रचना रही।
वही देश सत्त और आनंदमई।।२१।।
उठी नीचे सतपुर से इक श्याम धार।
उतर कर किया उसने बहुतक पसार।।२२।।

पुरुष सेव वह नित्त करती रही।
वले[1] मन में कुछ चाह धरती रही।।२३।।
किया उसने इस तरह इज़्हार हाल।
कि हे सतपुरुष मेरे दाता दयाल।।२४।।
जुदे देश में राज दीजे मुझे।
सुरत अंश का बीज दीजे मुझे।।२५।।
मुझे यहाँ का रहना सुहाता नहीं।
तुम्हारा मुझे देश भाता नहीं।।२६।।
यह सुन कर दिया पुर्ष ने अस जवाब।
निकल जाओ तू य्हाँ से ख़ाना ख़राब।।२७।।
तले देश में जाके रचना करो।
वहाँ बैठ कर राज अपना करो।।२८।।
निरंजन हुआ नाम उस धार का।
हुआ काल का अंग उस धार का।।२९।।
पुरुष ने लई दूसरी धार उपाय।
हुआ पीत रंग आद्या नाम ताय।।३०।।
हुकम से यह धारा उतारी गई।
निरंजन के संग जाय मिलती भई।।३१।।
हुए सुन में पुर्ष और परकिर्त यह।
हुए माया औ ब्रह्म त्रिकुटी में यह।।३२।।

सहसदल कँवल जाय कीन्हा निवास।
हुआ तीन गुन का यहाँ से उजास।।३३।।
धरा आद्या ने यहाँ जोत रूप।
निरंजन ने धारा शियामी सरूप।।३४।।
प्रथम ब्रह्म सृष्टि इन्होंने करी।
हुई फिर त्रिलोकी की रचना खड़ी।।३५।।
निरंजन ने धारा पुरुष का धियान।
हुई सारी रचना की जोती प्रधान।।३६।।
हुए तीन गुन उसके नायब यहाँ।
हुई उन से फिर सारी रचना अयाँ[1]।।३७।।

।। मसनवी २२ ।।

करूँ पहिले महिमा गुरू की बयान।
किया जिसने रहमत से पैदा जहान।। १ ।।
परम गुरु परम पुर्ष राधास्वामी नाम।
अजब हैरतो हैरत है उनका धाम।। २ ।।
लिया मुझ को चरनों में अपने लगा।
सुरत शब्द मारग का दीन्हा पता।। ३ ।।
दया से जो संजोग पैदा किया।
मेहर का रहे हाथ उस सँग लगा।। ४ ।।
जपूँ चित्त से नित्त राधास्वामी नाम।
पाऊँ मेहर से एक दिन आदि धाम।। ५ ।।

१ - प्रगट

।। मसनवी २३ ।।

अहो मेरे सतगुरु अहो मेरी जान।
अहो मेरे प्यारे अहो मेरे प्रान।। १ ।।
नज़र मेहर की मुझ पै अब कीजिये।
मुझे अब के जम से छुड़ा लीजिये।। २ ।।
निकालो मुझे काल के जाल से।
बचा लेओ माया के जंजाल से।। ३ ।।
तड़पता हूँ दर्शन को दिन रात मैं।
सहूँ दुक्ख मन इंदरी साथ मैं।। ४ ।।
जगत भोग देवें झकोले सदा।
पंच दूत फोड़ें फफोले जुदा।। ५ ।।
बिना दर्श तुम्हरे बने कैसे काम।
मेहर बिन करे कौन मेरी सहाम।। ६ ।।
सुनो बीनती मेरी दाता दयाल।
दरश दे करो आज मुझको निहाल।। ७ ।।
जो चाहो करो मुझ पै छिन में दया।
नहीं कुछ कठिन तुम्हरे आगे मया[1]।। ८ ।।
मेरे वास्ते अब हुए क्यों कठोर।
मैं क़ुरबान जाउँ तुम पै हे बंदी छोड़।। ९ ।।

१ - कृपा

सदा से तुम्हारा दयालू है नाम।
करो क्यों नहीं मेरा अब पूरा काम।।१०।।
चरन में करूँ बीनती बार बार।
सुनो हे दयाल मेरी जल्दी पुकार।।११।।
दरस देके सूरत चढ़ा दीजिये।
मुझे रस भरी धुन सुना दीजिये।।१२।।
मिटाओ मेरे अब सभी दुक्ख साल।
करो मुझको निरभय हे दाता दयाल।।१३।।
सरन में पड़ा तुम्हरे दुनिया से भाज।
मेरे काज की अब है तुम ही को लाज।।१४।।
तुम्हारा हि हूँ जैसा तैसा कपूत।
बना लीजिये मुझको अपना सपूत।।१५।।
सरापा भरा हूँगा मैं खोट से।
बचाओ मुझे अपनी अब ओट दे।।१६।।
करो राधास्वामी मेहर की निगाह।
लेओ मुझको अब जैसे तैसे निबाह।।१७।।
बिना तुम चरन कोई दीखे न ठौर।
बिना तुम सहाई नहीं कोई और।।१८।।
मैं बालक पड़ा हूँ तुम्हारी सरन।
सम्हालो दिखाओ मुझे निज चरन।।१९।।

विरह में रहूँ मैं तपत रात दिन।
दरश बिन नहीं चैन मोहिं एक खिन।।२०।।
गुनाहों से अपने मैं शरमिंदा हूँ।
छिमा कर छिमा मैं तेरा बंदा हूँ।।२१।।
नहीं बनते मुझसे जो पाप और क़सूर।
छिमा की तेरी होती फिर क्या ज़रूर।।२२।।
मैं नालायक़ हूँ इसमें कुछ शक नहीं।
दया जो करे प्यार अचरज नहीं।।२३।।
क़सूरों को बख़्शो मेरे हे दयाल।
ग़रीबी पै मेरे धरो अब ख़याल।।२४।।
दया के भरोसे बने सब क़सूर।
मेहर से देओ बख़्श आली हज़ूर।।२५।।
मैं तुम्हरा हूँ और तुम हो मेरे सही।
पिता पुत्र का नाता पूरा चही।।२६।।
पिता तुम हो और मैं हूँ बालक समान।
करो मेहर दीन और निबल मोहिं जान।।२७।।
लगाया जिसे तुमने चरनों के साथ।
सम्हाला उसे मेहर से देके हाथ।।२८।।
करो जब कि तुम निंदकों का उधार।
मुझे कैसे छोड़ोगे अब नौ के वार।।२९।।

मेहर माँगूँ फिर मेहर माँगूँ दयार।
लेओ प्यारे राधास्वामी जल्दी उबार।। ३० ।।

बचन ४०

।। शब्द १ ।।

आज सतसँग गुरु का कीजे।
दीखे घट बिमल बिलासा।। टेक।।
यह जगत जाल दुखदाई।
क्यों या में बैस बिताई।।
ले सतगुरु की सरनाई।
धर राधास्वामी चरनन आसा।। १ ।।
गुरु बचन चित्त में धरना।
सुर्त शब्द कमाई करना।।
मन माया से नित लड़ना।
तब देखे अजब तमाशा।। २ ।।
गुरु चरनन प्रीत बढ़ाना।
मन सूरत अधर चढ़ाना।।
राधास्वामी सरन समाना।
तब पावे निज घर बासा।। ३ ।।
गुरु दया संग ले भाई।
गगना में पहुँची धाई।।

फिर सत्तनाम पद पाई।
किया राधास्वामी चरन निवासा।। ४ ।।

।। शब्द २ ।।

आज मेघा रिमझिम बरसे।
हिये पिया की पीर सतावे।। टेक।।
पिया छाय रहे परदेशा।
मैं पड़ी काल के देशा।।
मोहिं निस दिन यही रे अँदेशा।
कोइ पिया से आन मिलावे।। १ ।।
पपिहा जब पिउ पिउ गावे।
मोहिं पिया प्यारे की याद आवे।।
विरह अगिन भड़क भड़कावे।
पिया बिन को तपन बुझावे।। २ ।।
सतगुरु हितकारी मिलिया।
उन पिया का सँदेशा कहिया।।
मारग का भेद सुनइया।
सुर्त धुन सँग अधर चढ़ावे।। ३ ।।
मोहिं दीन अधीन निहारा।
गुरु कीन्ही मेहर अपारा।।
मोहिं भौजल पार उतारा।
सुर्त चढ़ चढ़ अधिक हरखावे।। ४ ।।

धुन सुन सुर्त अधर सिधारी।
सत अलख अगम्म लखारी।।
पिया राधास्वामी रूप निहारी।
उन महिमा छिन छिन गावे।। ५ ।।

।। शब्द ३ ।।

आज गरज गरज घन गरजे।
मेरा जियरा सुन सुन लरजे।। टेक।।
श्याम घटा रही छाई।
अमी धार की बरखा लाई।।
दामिन की दमक सुहाई।
मेरा पिया बिन मनुआँ तरसे।। १ ।।
सतगुरु पिया भेद बतावें।
गैल चलन की जुगत लखावें।।
उन से नित प्रीत बढ़ावें।
तब पिया प्यारे का पद दरसे।। २ ।।
मैं पिय की पीर दिवानी।
मारग की पाय निशानी।।
तन मन धन कर क़ुरबानी।
गुरु चरन गगन जाय परसे।। ३ ।।
वहाँ से भी चली अगाड़ी।
सतपुर सत रूप निहारी।।

गइ अलख अगम के पारी।
राधास्वामी दरश पाय हरखे।। ४ ।।

।। शब्द ४ ।।

मेरे तपन उठत हिय भारी।
गुरु प्रेम की बरषा कीजे।। टेक।।
विरह अगिन सुलगत नित घट में।
कस निरखूँ छबि तिल पट में।।
मेरी उमर गई खट पट में।
अब तो गुरु दरशन दीजे।। १ ।।
बिन दरशन जिय घबरावे।
जग भोग नहीं अब भावे।।
कोइ बात न मोहिं सुहावे।
अस काया छिन छिन छीजे।। २ ।।
गुरु मेहर करो अब भारी।
देओ चरनन प्रीत करारी।।
तुम दर्शन नित्त निहारी।
तब सुरत प्रेम रँग भीजे।। ३ ।।
तुम राधास्वामी समरथ दाता।
मुझ को भी करो सनाथा।।
तुम चरन रहूँ रस राता।
मेरी सुरत सरन में लीजे।। ४ ।।

* * * * *

।। शब्द ५ ।।

क्यों जग में रहे भरमानी।
मिल गुरु से घर को चलना।। टेक।।
यह देश बिगाना भाई।
नित तिमिर रहे यहाँ छाई।।
और काल करम भरमाई।
भोगन सँग छिन छिन गलना।। १ ।।
सतसँग का देख बिलासा।
गुरु चरनन धर विश्वासा।।
निज घर की धारो आसा।
जग भाठी में नहिं जलना।। २ ।।
गुरु प्रेम हिये में धारो।
जग आसा दूर निकारो।।
दूतन को मार पछाड़ो।
मन माया छिन छिन दलना।। ३ ।।
सुर्त शब्द जुगत ले सारा।
गुरु नाम करो आधारा।।
करमों का काटो जारा।
धुन सुन सुन घट में चढ़ना।। ४ ।।
त्रिकुटी का देख उजेरा।
सतपुर जाय कीन्हा फेरा।।

कर अलख अगम से नेहरा।
फिर राधास्वामी से जाय मिलना।। ५ ।।

।। शब्द ६ ।।

क्यों सोच करे मन मूरख।
प्यारे राधास्वामी हैं रखवारे।। टेक।।
जब जनमा तब दूध दियो तोहि।
माता गोद पलाया।।
सर्व भाँति तेरी रक्षा कीन्ही।
चरनन मेल मिलाया।।
रहा था फँस नौ द्वारे।। १ ।।
सर्व भोग इंद्रिन के दीन्हे।
जगत तमाशा दिखाया।।
खैंच लिया सतसँग में फिर तोहि।
निज घर भेद सुनाया।।
मेहर से खोल चलो दस द्वारे।। २ ।।
बचन सुना तेरी समझ बढ़ावें।
मन की निरख करावें।।
करम भरम और टेक छुड़ा कर।
शब्द में सुरत लगावें।।
अधर चढ़ देख बहारे।। ३ ।।

घंटा संख सुनावें नभपुर।
त्रिकुटी लख गुरु नूरा।।
चंद्र चाँदनी चौक निहारो।
गुफा परे पद पूरा।।
आरती सतगुरु धारे।। ४ ।।
ले दुरबीन पुरुष से प्यारी।।
अलख अगम को चाली।
तिस पर राधास्वामी धाम अपारा।।
लख लख हुई निहाली।
सीस उन चरनन डारे।। ५ ।।

।। शब्द ७ ।।

क्यों अटक रही जग प्यारी।
यामें दुख भोगे भारी।। टेक।।
कोई यहाँ तेरा संग न साथी।
स्वारथ सँग सब मिल रहते।।
क्यों धोखा खाओ इन में।
क्यों भोगन सँग नित बहते।।
जम दंड सहो सरकारी।। १ ।।
सतसँग में मेल मिलाना।
गुरु चरनन भाव बढ़ाना।।

सुन सुन निज बचन कमाना।
घट में गुरु रूप धियाना।।
गुरु भक्ती रीत सम्हारी।। २ ।।
सुर्त शब्द जुगत ले गुरु से।
नित नेम से कर अभ्यासा।।
मन इंद्री सुरत समेटो।
फिर घट में देख बिलासा।।
ले गुरु की मेहर करारी।। ३ ।।
गुरु करम भरम सब टारें।
मन के करें दूर बिकारा।।
सब पिछली टेक निकारें।
दरसावें फिर घर न्यारा।।
लख उनकी गत मत न्यारी।। ४ ।।
राधास्वामी सरन सम्हारो।
गुरु के सँग अधर सिधारो।।
लख जोत सूर और चंदा।
सत अलख अगम को धारो।।
हुइ राधास्वामी चरन दुलारी।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ८ ।।

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।
आज अचरज बचन सुनाय रहेरी।। टेक।।
सुन सुन बानी सब हुए हैं दिवाने।
तन मन सुध बिसराय रहेरी।। १ ।।
मेहर दया की बरषा भारी।
प्रेम के बदरा छाय रहेरी।। २ ।।
धुन झनकार सुनत घट अंतर।
नइ नइ उमँग जगाय रहेरी।। ३ ।।
सेवा कर हिये होत हुलासा।
तन मन वार धराय रहेरी।।४।।।
राधास्वामी पर जावें बलिहारी।
जुड़ मिल उन गुन गाय रहेरी।। ५ ।।

।। शब्द ९ ।।

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।
आज अद्भुत दरश दिखाय रहेरी।। टेक।।
दर्शन कर मोहे नर नारी।
छबि पर दृष्टि तनाय रहेरी।। १ ।।
क्या कहूं महिमा अचरज रूपा।
बहु सूर चंद शरमाय रहेरी।। २ ।।

जिन जिन दरश करा मेरे गुरु का।
सोइ निज भाग जगाय रहेरी।। ३ ।।
जगत जीव क्या जानें महिमा।
सब करम धरम भरमाय रहेरी।।४ ।।।
आओरे आओ जीव सरनी आओ।
राधास्वामी मेहर कराय रहेरी।। ५ ।।

।। शब्द १० ।।

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।
आज नइ धुन घट में सुनाय रहेरी।। टेक।।
सुन सुन धुन सुर्त हुइ मतवाली।
काल करम मुरझाय रहेरी।। १ ।।
मन और सुरत दोऊ रस पावत।
गगन ओर अब धाय रहेरी।। २ ।।
हंसन संग करत नित केला।
मानसरोवर न्हाय रहेरी।। ३ ।।
अधर जाय सुर्त मिली भक्तन से।
भँवरगुफा ढिंग छाय रहेरी।। ४ ।।
धुन सुन गई जहँ राधास्वामी प्यारे।
अचरज दरश दिखाय रहेरी।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ११ ।।

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।
मोहिं प्यार से गोद बिठाय रहेरी।। टेक।।
मैं तो नीच अधम नाकारा।
मेहर से मोहिं अपनाय रहेरी।। १ ।।
सतसँग में मोहिं खैंच लगाया।
भक्ती रीत सिखाय रहेरी।। २ ।।
बल अपना दे सेव कराई।
छिन छिन रक्षा कराय रहेरी।। ३ ।।
शब्द भेद दे जुगत बताई।
घट में सुरत चढ़ाय रहेरी।। ४ ।।
क्योंकर करूँ शुकराना उनका।
(मेरे) रोम रोम गुन गाय रहेरी।। ५ ।।
चरन ओट दे जीव बचावें।
काल और करम लजाय रहेरी।। ६ ।।
जो कोई चरन सरन में आये।
सब का काज बनाय रहेरी।। ७ ।।
जीव निबल क्या करे बिचारा।
अपनी दया से निभाय रहेरी।। ८ ।।
परम गुरू समरथ राधास्वामी।
सब पर मेहर कराय रहेरी।। ९ ।।

।। शब्द १२ ।।

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।
मोहिं मेहर से अँगवा लगाय रहेरी।। टेक।।
सतसँग कर बाढ़ा विश्वासा।
गहरी प्रीत जगाय रहेरी।। १ ।।
स्वामी चरनन पर जाऊँ बलिहारी।
मेहर का सब गुन गाय रहेरी।। २ ।।
शब्द अभ्यास करत मन सूरत।
गगन ओर नित धाय रहेरी।। ३ ।।
दया हुई सुर्त सतपुर आई।
अलख अगम दरसाय रहेरी।। ४ ।।
राधास्वामी धाम गई सुर्त सज के।
निज महल में संग खेलाय रहेरी।। ५ ।।

।। शब्द १३ ।।

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।
आज प्रेम रंग बरसाय रहेरी।। टेक।।
अनुरागी जन जुड़ मिल आये।
बहु बिधि बिनती लाय रहेरी।। १ ।।
प्रेम दान दीजे गुरु प्यारे।
सब मन में तरसाय रहेरी।। २ ।।

सुन बिनती प्यारे राधास्वामी दाता।
घट में सुरत चढ़ाय रहेरी।। ३ ।।
मगन होय सुन नइ धुन घट में।
धन धन राधास्वामी गाय रहेरी।। ४ ।।

।। शब्द १४ ।।

सुनरी सखी मानो कहन मेरी।
चलो गुरु सँग खेलो फाग आज।। टेक।।
मोह नींद में कब लग सोना।
मिल सतगुरु से जाग आज।। १ ।।
सतसँग कर हित चित से उनका।
तेरा सोता जागे भाग आज।। २ ।।
शब्द जुगत ले घट में बैठो।
सुन ले अनहद राग आज।। ३ ।।
दया मेहर ले चढ़ो अधर में।
मारो काला नाग आज।। ४ ।।
सरन धार राधास्वामी मन में।
माया घर से भाग आज।। ५ ।।
मिल हंसन से खेलो होली।
छोड़ो संगत काग आज।। ६ ।।
सत्त अलख और अगम के पारा।
राधास्वामी चरनन लाग आज।। ७ ।।

।। शब्द १५ ।।

चलोरी सखी आज गगन पुरी।
जहँ गुरु प्यारे फाग रचाय रहेरी।। टेक।।
गुरु सतसंगी सब मिल खेलें।
प्रेम का रंग बहाय रहेरी।। १ ।।
आगे चल देखो सुन नगरी।
जहँ हंस हंसनी गाय रहेरी।। २ ।।
शब्द शोर जहँ मच रहा भारी।
अमृत धार चुवाय रहेरी।। ३ ।।
महासुन्न चढ़ भँवरगुफा लख।
जहँ बंसी मधुर बजाय रहेरी।। ४ ।।
सतपुर जाय दरश पुर्ष कीन्हा।
जहँ अचरज बीन सुनाय रहेरी।। ५ ।।
राधास्वामी चरन हुई लौलीना।
जहँ अलख अगम दर छाय रहेरी।। ६ ।।
प्रेम का सोत पोत जहँ भारी।
मेहर दया उमगाय रहेरी।। ७ ।।
राधास्वामी मात पिता पति मेरे।
मोहिं प्यार से गोद बिठाय रहेरी।। ८ ।।

* * * * *

।। शब्द १६ ।।

अचरज आरत गुरु की धारूँ।
उमँग नई हिये छाय रहीरी।। टेक।।
सतसंगी सब हरखत आये।
सतसंगन उमगाय रहीं री।। १ ।।
अजब समा क्या बरन सुनाऊँ।
चहुँ दिस आनँद गाय रहेरी।। २ ।।
बस्तर भोजन बहु विधि साजे।
देख भाव हरखाय रहेरी।। ३ ।।
बढ़त हुलास हिये में भारी।
धन फल फूल लुटाय रहेरी।। ४ ।।
धूम मची आरत की भारी।
बहु जिव अब घिर आय रहेरी।। ५ ।।
सकल समाज हरख रहा मन में।
उमँग बधाई गाय रहेरी।। ६ ।।
अस अस देख बिलास नवीना।
सब जीव अचरज लाय रहेरी।। ७ ।।
राधास्वामी द्याल प्रसन्न होय कर।
मेहर दया फ़रमाय रहेरी।। ८ ।।
अपनी दया से काज बनाया।
आपहि करनी कराय रहेरी।। ९ ।।

सेव कराय दया से अपनी।
जन का भाग जगाय रहेरी।। १० ।।
राधास्वामी मेहर से हिये में सब के।
छिन छिन प्रेम बढ़ाय रहेरी।। ११ ।।

।। शब्द १७ ।।

प्रेम भरी भोली बाली सुरतिया।
पल पल गुरु को रिझाय रही।। १ ।।
दीन होय लागी सतसँग में।
बचन सुनत हरखाय रही।। २ ।।
लिपट रही चरनन में हित से।
हिये गुरु रूप बसाय रही।। ३ ।।
शब्द उपदेश पाय मगनानी।
धुन में सुरत जमाय रही।। ४ ।।
गुरु की दया परख अंतर में।
उमँग उमँग गुन गाय रही।। ५ ।।
प्रेम बढ़ा अब हिये अंतर में।
तन मन वार धराय रही।। ६ ।।
गुरु का सतसंग लागा प्यारा।
दर्शन को नित धाय रही।। ७ ।।
जस जल मीन हरख दर्शन कर।
हिये का कँवल खिलाय रही।। ८ ।।

खेलत बिगसत संग गुरू के।
मेहर दया नित चाह रही।। ९ ।।
प्रेमी जन सँग नाचत गावत।
सुध बुध सब बिसराय रही।। १० ।।
राधास्वामी द्याल लिया अपनाई।
नित नया प्रेम जगाय रही।। ११ ।।

।। शब्द १८ ।।

प्रेमी जइयोरे सतसँग में।
लीजो सुरत जगाय।। टेक।।
बिन सतसँग मन चेते नाहीं।
सतगुरु प्यारे की सरनाय।। १ ।।
अमृत रूपी बचन गुरू के।
सुन सुन रहे चरन लौ लाय।। २ ।।
शब्द भेद लेकर सतगुरु से।
मन और सूरत अधर चढ़ाय।। ३ ।।
सुन सुन धुन सूरत मगनानी।
मन से लीन्हा खूँट छुड़ाय।। ४ ।।
सतगुरु लार चली फिर प्यारी।
सत्तलोक किया आसन जाय।। ५ ।।
सत्तपुरुष का दर्शन पाया।
हंसन सँग लिया मेल मिलाय।। ६ ।।

वहँ से राधास्वामी धाम सिधारी।
मगन होय निज भाग सराय।। ७ ।।

।। शब्द १९ ।।

प्रेमी मिलियो रे सतगुरु से।
देवें काज बनाय।। टेक।।
दया निधान परम हितकारी।
जीवों को दें ओट बुलाय।। १ ।।
दीन होय जो सरनी आवे।
ताको मेहर से लें अपनाय।। २ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ा चरनन में।
सुरत शब्द अभ्यास कराय।। ३ ।।
घट में तेरे दर्शन देकर।
मन और सूरत अधर चढ़ाय।। ४ ।।
शब्द शब्द से मेला करके।
इक दिन दें निज घर पहुँचाय।। ५ ।।
जो कुछ करें करें गुरु प्यारे।
जीव निबल क्या कार कमाय।। ६ ।।
राधास्वामी सतगुरु प्यारे।
महिमा उनकी को सके गाय।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द २० ।।

प्रेमी भागोरे जगत से।
या सँग क्यों तू धोखा खाय।। टेक।।
यह दुनिया काहू की नाहीं।
भोग दिखा लिया जीव फँसाय।। १ ।।
याते छूटन कठिन विचारो।
सब ही या सँग गये लुभाय।। २ ।।
बिन सतगुरु कोइ छूटे नाहीं।
उनका सतसँग करो बनाय।। ३ ।।
बचन सुनो और चित में धारो।
सूरत घट धुन संग लगाय।। ४ ।।
प्रीत प्रतीत चरन में धारो।
राधास्वामी इक दिन काज बनाय।। ५ ।।

।। शब्द २१ ।।

प्रेमी मानोरे बचन को।
रहियो गुरु चरनन लौ लाय।। टेक।।
गुरु की महिमा कही न जावे।
देवें घट का भेद लखाय।। १ ।।
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे के।
चरनन में दें सुरत जुड़ाय।। २ ।।

नित अभ्यास करे जो घट में।
चरन धार रस ले तृप्ताय।। ३ ।।
वही धार धुन शब्द पहिचानो।
वही धार अमृत बरसाय।। ४ ।।
वही धार गह सुरत चढ़ाओ।
उसी धार से रहो लिपटाय।। ५ ।।
चढ़ चढ़ पहुँचो धुर दरबारा।
राधास्वामी दरशन पाय।। ६ ।।

।। शब्द २२ ।।

प्रेमी जागोरे तुम अबही।
मोह की नींद बिसार।। टेक।।
भूल भरम में कब तक रहना।
ग़फ़लत तज अब हो हुशियार।। १ ।।
गुरु सतसँग से नाता जोड़ो।
विरह अनुराग सम्हार।। २ ।।
कुल मालिक राधास्वामी चरनन में।
चित को जोड़ो धर कर प्यार।। ३ ।।
धुन झनकार सुनो फिर घट में।
प्रेम अंग ले सुरत सुधार।। ४ ।।
बिमल बिलास लखे अंतर में।
गुरु चरनन पै तन मन वार।। ५ ।।

राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें।
पहँचे इक दिन निज दरबार।। ६ ।।

।। शब्द २३ ।।

प्रेमी रहियो रे हुशियार।
माया घात बचाय।। टेक।।
यह मन माया दोउ संसारी।
जीव गये इन हाथ ठगाय।। १ ।।
निकसन की कोई जुगत न पावें।
बार बार जग में भरमाय।। २ ।।
कनिक कामिनी मान बड़ाई।
जाल बिछा लिया जीव फँसाय।। ३ ।।
बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे।
उनकी सरन पड़ो तुम जाय।। ४ ।।
सुरत शब्द की जुगत कमाओ।
गुरु चरनन में प्रीत बढ़ाय।। ५ ।।
मेहर से घट में देहिं सहारा।
पिंड अंड के पार पड़ाय।। ६ ।।
राधास्वामी दीन दयाल कृपानिधि।
माया काल से लेहिं बचाय।। ७ ।।

।। शब्द २४ ।।

प्रेमी लीजोरे सुध घर की।
गुरु सँग शब्द कमाय।। टेक।।
शब्द धार धुर घर से आई।
वही धार गह अधर चढ़ाय।। १ ।।
वही धार गुरु चरन कहावे।
वा में गहरी प्रीत बसाय।। २ ।।
गुरु स्वरूप को सँग ले अपने।
शब्द शब्द से मिलना जाय।। ३ ।।
या विधि चाल चले जो कोई।
दिन दिन चरनन प्रेम बढ़ाय।। ४ ।।
घट में लीला लखे नियारी।
नित नवीन रस आनँद पाय।। ५ ।।
चढ़ चढ़ पहुँचे राधास्वामी धामा।
दरश पाय निज भाग सराय।। ६ ।।

।। शब्द २५ ।।

हेरी तुम कौन हो री।
मोहिं अटकावन हारी।। टेक।।
मैं दर्शन को गुरु प्यारे के।
जाउँगी मानूँ न कहन तुम्हारी।। १ ।।

मेरा चित्त बसे गुरु चरनन।
तुम बिरथा क्यों करो पुकारी।। २ ।।
गुरु मेरे दीन दयाल कृपाला।
उनके चरन पर जाउँ बलिहारी।। ३ ।।
मोसी अधम को चरन लगाया।
तुम को भी वे ले हैं उबारी।। ४ ।।
आओ चलो सजनी सँग मेरे।
सतगुरु चरन सीस अब डारी।। ५ ।।
सब जीवन को यही सँदेशा।
जैसे बने तैसे सरन सम्हारी।। ६ ।।
राधास्वामी प्यारे सतगुरु मेरे।
सब जीवन का काज सुधारी।। ७ ।।

।। शब्द २६ ।।

हेरी तुम कैसी हो री।
जग बिच भरमन हारी।। टेक।।
जीव कल्यान की सुद्ध न लीन्ही।
दिन दिन मोह जाल बिस्तारी।। १ ।।
काम क्रोध के धक्के खाती।
लोभ मोह सँग सहो दुख भारी।। २ ।।
जहँ जहँ आसा सुख की धारी।
वहीं वहीं झटके छिन छिन खारी।। ३ ।।

निस दिन सब जग जाता देखो।
अपनी मौत की सुद्ध बिसारी।। ४ ।।
जल्दी चेत करो सतसंगत।
गुरु की दया ले काज सँवारी।। ५ ।।
भक्ति भाव अब मन में धारो।
जीते जी कुछ काज बना री।। ६ ।।
ले उपदेश करो अभ्यासा।
मन के सबहि विकार निकारी।। ७ ।।
राधास्वामी चरन धार लो मन में।
मेहर से भौजल पार उतारी।। ८ ।।

।। शब्द २७ ।।

हेरी तुम कैसी हो री।
जग बिच भूलन हारी।। टेक।।
जनम जनम का भूला मनुआँ।
भोगन में यहँ आन बँधा री।। १ ।।
जैसा संग मिला देही में।
वैसी ही जग आसा धारी।। २ ।।
जतन करे और दुख सुख पावे।
जनम मरन का सहे दुख भारी।। ३ ।।
बिन सतगुरु कोइ बचे न भाई।
याते सतगुरु सरन सम्हारी।। ४ ।।

वे दयाल तोहि जुगत लखावें।
मेहर से तेरा करें छुटकारी।। ५ ।।
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला।
सब जीवों की आस पुरारी।। ६ ।।

।। शब्द २८ ।।

हेरी तुम कौन हो री।
मोहिं भरमावन हारी।। टेक।।
बहु दिन कीन्हा संग तुम्हारा।
दिन दिन जग बिच रही फँसा री।। १ ।।
अब मोहिं मिले गुरू दातारा।
उन सँग अपना काज सुधारी।। २ ।।
समझ तुम्हारी मैं नहिं धारूं।
तुम अजान बहती मन लारी।। ३ ।।
मैं गुरु सीख धरूँ हिरदे में।
सुरत शब्द की कार कमा री।। ४ ।।
गुरु की दया ले नभ पर धाऊँ।
निरखूँ जाकर गगन अटारी।। ५ ।।
सतपुर सतगुरु दर्शन करके।
राधास्वामी चरन मिलत सुखियारी।। ६ ।।

।। शब्द २९ ।।

चेतोरे जग काम न आवे।। टेक।।
यह जग चार दिनों का सुपना।
कोई थिर न रहावे।। १ ।।
पता भेद तुम्हरे निज घर का।
गुरु बिन कौन बतावे।। २ ।।
वह निज घर है राधास्वामी धामा।
शब्द पकड़ सुर्त जावे।। ३ ।।
शब्द भेद लेकर सतगुरु से।
धुन सुन अधर चढ़ावे।। ४ ।।
चढ़ चढ़ पहुँचे दसवें द्वारा।
बेनी में पैठ अन्हावे।। ५ ।।
सतपुर जाय मिले सतगुरु से।
अलख अगम को धावे।। ६ ।।
सतगुरु दया काज हुआ पूरा।
रा धा स्वा मी चरन समावे।। ७ ।।

।। शब्द ३० ।।

भागोरे जग से अब भागो।। टेक।।
भूल भरम ग़फ़लत अब छोड़ो।
जागोरे गुरु से मिल जागो।। १ ।।

सतसंग कर ले भेद गुरू से।
लागोरे चरनन में लागो।। २ ।।
मन इंद्री को रोक अँदर में।
त्यागोरे विषयन को त्यागो।। ३ ।।
नैन कँवल में बाट लखाई।
ताकोरे गुरु नैना ताको।। ४ ।।
राधास्वामी दया संग ले अपने।
सूरत शब्द अधर में राखो।। ५ ।।

।। शब्द ३१ ।।

चेतोरे घर घाट सम्हारो।। टेक।।
या देही सँग क्यों दुख सहना।
निज सुख घर की ओर सिधारो।। १ ।।
बिन सतगुरु को भेद बतावे।
उनका संग करो धर प्यारो।। २ ।।
करम धरम सब भरम हटा कर।
गुरु का बचन हिये बिच धारो।। ३ ।।
शब्द भेद और जुगत चलन की।
ले गुरु से घट अधर पधारो।। ४ ।।
घंटा संख सुनी धुन दोई।
गगन माहिं गुरु रूप निहारो।। ५ ।।

निर्मल हुइ सुन साराँग बानी।
मुरली सुन धुन बीन सम्हारो।। ६ ।।
सुन सुन बतियाँ अलख अगम की।
राधास्वामी चरन करो दीदारो।। ७ ।।

।। शब्द ३२ ।।

जागोरे यहँ कब लग सोना।। टेक।।
चेत करो निज घर को खोजो।
बिरथा वक़्त यहाँ नहिं खोना।। १ ।।
मन मलीन जग में भरमावे।
सतसँग कर कलमल सब धोना।। २ ।।
गुरु के बचन हिये में धरना।
सुरत शब्द में निस दिन पोना।। ३ ।।
जगत मोह अब छिन छिन तजना।
भक्ती बीज हिये में बोना।। ४ ।।
पिंड अंड ब्रह्मण्ड के पारा।
राधास्वामी धाम करो अब गौना।। ५ ।।

।। शब्द ३३ ।।

धाओरे गुरु सरन सम्हारी।। टेक।।
घट में निरख बहार नवीना।
सुरत शब्द मत धारी।। १ ।।

सुन सुन धुन सुर्त अधर चढ़ाओ।
लखो जोत उजियारी।। २ ।।
बंकनाल धस त्रिकुटी पारा।
सुन में जाय अक्षर धुन धारी।। ३ ।।
भँवरगुफा मुरली धुन सुन कर।
सुरत हुई सतगुरु दरबारी।। ४ ।।
अलख अगम का मुजरा करके।
राधास्वामी चरन सीस डारी।। ५ ।।
अचरज रूप निरख मगनानी।
वाह वाह प्रीतम बलिहारी।। ६ ।।

।। शब्द ३४ ।।

मेरे प्यारे बहन और भाई।
तुम्हें लाज न आई।
क्यों नहिं मोहिं सम्हारो।। टेक।।
मैं भरमत रहुँ जग में निस दिन।
तुम नित सतसँग करो बनाई।
और सतगुरु की सेवा धारो।। १ ।।
क्यों नहिं मुझको बचन सुनाओ।
और अपने सँग लेओ लगाई।
मोहिं मेहर दया कर प्यारो।। २ ।।

जो तुम एती दया विचारो।
गुरु सँग मेरा मेल मिलाई।
मेरा उतरे करम का भारो।। ३ ।।
गुरु हैं दीन दयाल गुसाईं।
जीव दया नित चित्त बसाई।
मोहिं अधम को देहिं सहारो।। ४ ।।
मैं अब तक रहा मनमुख भारी।
भोगन में रहा अधिक फँसाई।
नहिं खोजा निज घर न्यारो।। ५ ।।
मोहिं सूझ पड़ा यह अबही भाई।
गुरु बिन नहिं कोइ और सहाई।
जग झूठा खेल पसारो।। ६ ।।
अब मैं भक्ति करूँ तन मन से।
सतगुरु चरन सरन गह भाई।
जाउँ भौसागर पारो।। ७ ।।
तुम सब करो मदद मेरी मिल कर।
तब प्यारे राधास्वामी चरन निहारी।
तन मन से होकर न्यारो।। ८ ।।

* * * * *

।। शब्द ३५ ।।

मेरे प्यारे बहन और भाई।
क्यों ग़फ़लत में रहो सोते।
गुरु लेओ सम्हारी।। टेक।।
या जग में नित रहना नाहीं।
इक दिन तन तज जाना।
टुक वहँ की बात विचारी।। १ ।।
सतगुरु वहँ के भेदी कहियन।
मिल उनसे लेओ समझौती।
निज घर वे देहिं लखा री।। २ ।।
सतसँग उनका करो चित लाई।
बचन अमोल हिये बिच धारो।
तोहि कर दें जग से न्यारी।। ३ ।।
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे।
भेद उनका दें घट में सारा।
सुर्त शब्द की जुगती धारी।। ४ ।।
मन और सुरत अधर नित धावे।
सुन सुन घट धुन झनकारी।
पावे रस आनँद भारी।। ५ ।।

गुरु पद परस गई सतपुर में।
मधुर बीन धुन सुनी सारी।
पद अलख अगम निरखा री।। ६ ।।
वहँ से चल पहुँची निज धामा।
प्यारे राधास्वामी दर्श लखा री।
उन चरनन पर बलिहारी।। ७ ।।

।। शब्द ३६ ।।

मेरे प्यारे बहन और भाई।
या जग बिच घोर अँधेरा।
तन में भी तम रहा छाई।। टेक।।
मन इन्द्री का ज़ोर घनेरा।
पाँच दूत अति कर बलवाना।
जीवन का बल पेश न जाई।। १ ।।
काल करम से बचना चाहो।
तो सतगुरु सँग चालो।
मग में कोइ विघन न आई।। २ ।।
जनम मरन का दुख अति भारी।
देही सँग दुख सुख नित सहना।
या ते जिव लेव बचाई।। ३ ।।

सतगुरु हैं सच्चे हितकारी।
वे काटें सब काल कलेशा।
सरन गहे ताके होयँ सहाई।। ४ ।।
चलो री सखी अब देर न कीजे।
गुरु सतसँग में तन मन दीजे।
धार हिये राधास्वामी सरनाई।। ५ ।।

।। शब्द ३७ ।।

मेरे प्यारे बहन और भाई।
गुरु चरन सरन गह चालो।
मन माया का ज़ोर घनेरा।। टेक।।
यह मन मूरख चेते नाहीं।
भोगन में रहे सदा अधीना।
दुनिया का न छोड़े बखेड़ा।। १ ।।
बिन गुरु सतगुरु कौन चितावे।
वे देहिं दया का सहारा।
तब यह छूटे सबेरा।। २ ।।
अपने बल से छूटे नाहीं।
खोजो सतगुरु द्याल गुसाईं।
मत कर तू बहुत अबेरा।। ३ ।।

भाग जगे जिन सतगुरु पाये।
सुरत शब्द की जुगत कमाये।
घट में निज पद को हेरा।। ४ ।।
सुरत चढ़ी पहुँची दस द्वारे।
राधास्वामी चरन धुर धाम निहारे।
हुआ सहजहि आज निबेड़ा।। ५ ।।

।। शब्द ३८ ।।

मेरे प्यारे बहन और भाई।
जग मोह बिसारो।
सतगुरु से नेह लगा लो।। टेक।।
यह जग तुम्हरा संगी नाहीं।
गुरु का सतसँग धारो।
भूल और भरम मिटा लो।। १ ।।
दया लेओ तुम उनकी हर दम।
सुरत शब्द की जुगत सम्हालो।
मन और सुरत जगा लो।। २ ।।
भोग बासना चित से छोड़ो।
मन और सुर्त निज घट में जोड़ो।
विघन और विकार निकालो।। ३ ।।

जस जस आनँद घट में पावे।
प्रीत प्रतीत चरन मे बाढ़े।
प्रेम रँग सुरत रँगा लो।। ४ ।।
चरन सरन राधास्वामी हिये धर।
धुन सँग सुरत चढ़ाओ अधर घर।
मेहर से आज ही काज बना लो।। ५ ।।

।। शब्द ३९ ।।

मेरे प्यारे बहन और भाई।
गुरु सतसँग का रस लीजे।
अस औसर फिर न मिलेगा।। टेक।।
बिन सतसंग समझ नहिं आवे।
जगत भोग सब झूठे।
कोई सँग न चलेगा।। १ ।।
गुरु सँग प्रीत करे सोई बाचे।
सुरत शब्द का मारग ताके।
वही सतसँग में रलेगा।। २ ।।
ध्यान लाय गुरु प्रीत बढ़ावे।
सुन सुन धुन सुर्त अधर चढ़ावे।
वा ही का कर्म जलेगा।। ३ ।।

अनुभव जागे तो सब कुछ सूझे।
गुरु का बल ले काल से जूझे।
वहि सज्जन माया को दलेगा।। ४ ।।
राधास्वामी चरन सरन जिन धारी।
वहि जन पहुँचे निज दरबारी।
अचरज दर्शन पाय खिलेगा।। ५ ।।

।। शब्द ४० ।।

मेरे प्यारे बहन और भाई।
ज़रा सोचो समझो मन में।
गुरु लो पहिचानी।। टेक।।
सतसँग कर उन बचन विचारो।
मन में उन का असर निहारो।
अस परखो साध निशानी।। १ ।।
कोइ दिन सँग कर देखो रहनी।
सत मत सँग परखो उन गहनी।
तब सहज सहज मन मानी।। २ ।।
प्रीत सहित करो शब्द अभ्यासा।
घट में देखो बिमल बिलासा।
तब सतगुरु की दया नज़र आनी।। ३ ।।

गुरु हैं समरथ दीनदयाला।
सरन पड़े को लेहिं सम्हाला।
तेरी छिन छिन रक्षा ठानी।। ४ ।।
अस परचे जो नित प्रति देखे।
अंतर बाहर दया नित पेखे।
सो मन में परतीत समानी।। ५ ।।
जो धारे अस दृढ़ परतीती।
दिन दिन जागे हिये में प्रीती।
वह सतगुरु की महिमा जानी।। ६ ।।
दया करें गुरु सुरत चढ़ावें।
घट का भेद सबहि दररसावें।
इक दिन राधास्वामी चरन समानी।। ७ ।।

।। शब्द ४१ ।।

मेरी प्यारी सहेली हो।
क्यों जनम गँवाओ हो।।टेक।।
दर्शन कर मेरे गुरु प्यारे का।
निज भाग जगाओ हो।। १ ।।
आज काज करो जीव अपने का।
नहिं जमपुर जाय पछताओ हो।। २ ।।
छोड़ो अब ही लाज जगत की।
गुरु सतसँग में आओ हो।। ३ ।।

दर्शन कर उमगे हिये प्यारा।
बचन सुनत जग भाव भुलाओ हो।।४।।
निर्मल दृष्टि से देखो लीला।
दम दम उमँग बढ़ाओ हो।।५।।
भेद पाय मन सुरत समेटो।
घट अधर चढ़ाओ हो।।६।।
बिमल बिलास लखो हिये अंतर।
तब निज भाग सराहो हो।।७।।
राधास्वामी दया परख फिर घट में।
नया नया प्रेम जगाओ हो।।८।।
बिन गुरु सरन होय जीव अकाजा।
कुटुँब को भी सँग लाओ हो।।९।।
राधास्वामी द्याल की दया अपारा।
सब को पार लगाओ हो।।१०।।
ऐसी महिमा राधास्वामी निरखत।
हरख हरख गुन गाओ हो।।११।।

।। शब्द ४२ ।।

मेरी प्यारी सहेली हो।
दया कर कसर जतादो री।।टेक।।
तुम प्यारी प्यारे साँचे गुरु की।
मोहिं सँग में मिला लो री।।१।।

घट का भेद और राह चलन की।
गुरु महिमा सुना दो री।। २ ।।
प्रेम रंग गुरु नित बरसावें।
मेरी सुरत रंगा दो री।। ३ ।।
मन इंद्री के विकार हटा कर।
गुरु चरन लगा दो री।।४।।
दीन होय गुरु चरनन आई।
मो पै मेहर करा दो री।। ५ ।।
अपना जान सम्हालो मुझको।
घट प्रेम जगा दो री।।६।।
राधास्वामी चरन सरन गह बैठूँ।
ऐसी दया करा दो री।।७।।।
औगुन पर मेरे दृष्टि न कीजे।
मेरा आजहि काज बना दो री।। ८ ।।
दया छिमा तुम हिरदे बस्ती।
मेहर से खोट हटा दो री।।९।।
दीन अधीन पड़ी गुरु द्वारे।
काल से खूँट छुड़ा दो री।।१० ।।
सुरत चढ़ाय अधर में धाऊँ।
राधास्वामी दरस दिखा दो री।। ११ ।।

।। शब्द ४३ ।।

तुम जीते सुरत चढ़ाओ।
मुए पर क्या करि हो।।१।।
सुन सुन शब्द चढ़ो घट अंतर।
गुनना छोड़ रहो।। २ ।।
चढ़ चढ़ जाओ त्रिकुटी पारा।
सतपुर जाय बसो।। ३ ।।
रा धा स्वा मी का दर्शन पाकर।
चरनन लिपट रहो।। ४ ।।

।। शब्द ४४ ।।

तुम अब ही गुरु सँग धाओ।
बहुर पछताना पड़े।।१।।
सतसँग कर गुरु सेवा धारो।
मन में उमंग भरे।। २ ।।
शब्द भेद ले करो अभ्यासा।
सूरत अधर चढ़े।। ३ ।।
राधास्वामी द्याल दया करें अपनी।
तो सब काज सरे।। ४ ।।

।। शब्द ४५ ।।

तुम अब ही मन को माँजो।
बहुर क्या काज सरे।।१।।

सतसँग करो बचन उर धारो।
नित नित मनन करे।। २ ।।
सार धार फिर करे कमाई।
सूरत गगन भरे।। ३ ।।
तब मन निश्चल चित होय निर्मल।
रा धा स्वा मी ध्यान धरे।। ४ ।।

।। शब्द ४६ ।।

तुम अब ही सतसँग धारो।
बहुर नहिं औसर मिले।।१।।
सतगुरु से करो प्रीत घनेरी।
सूरत अधर चले।। २ ।।
चढ़ चढ़ पहुँचे सहसकँवल में।
जगमग जोत बले।। ३ ।।
वहाँ से पहुँचे सतगुरु देसा।
रा धा स्वा मी चरन रले।। ४ ।।

।। शब्द ४७ ।।

तुम अब ही गुरु से मिलो।
जगत की लज्जा तजो।।१।।
सतसँग उनका करो प्रेम से।
जग से आज भजो।। २ ।।

दया लेव उनकी तुम हर दम।
सूरत चरन सजो।। ३ ।।
विरह अंग ले अधर चढ़ाओ।
शब्द शब्द सँग आज गजो।। ४ ।।
मेहर दया सतगुरु की लेकर।
राधास्वामी चरनन जाय रजो[१]।। ५ ।।

।। शब्द ४८ ।।

तुम अब ही विरह जगाय।
शब्द में सुरत धरो।। १ ।।
सतगुरु का सतसँग कर हित से।
दीन होय उन चरन पड़ो।। २ ।।
मेहर से जब वे भेद सुनावें।
घट में नित अभ्यास करो।। ३ ।।
भजन करो और धारो ध्याना।
काल करम से नाहिं डरो।। ४ ।।
राधास्वामी चरन सरन हिये दृढ़ कर।
भौसागर से आज तरो।। ५ ।।

।। शब्द ४९ ।।

तुम अब ही गुरु सँग रलो।
हिये में प्रेम भरो।। १ ।।

१- तृप्त होना।

अब नहिं मिलो बहुर कब मिलिहो।
चौरासी में जाय पड़ो।। २ ।।
याते चेतो समझो अब ही।
सतसँग कर गुरु सरन गहो।। ३ ।।
राधास्वामी नाम सुमिर निज नामा।
गुरु मूरत का ध्यान धरो।। ४ ।।
शब्द धार घट हर दम जारी।
चित से उसको चेत सुनो।। ५ ।।
राधास्वामी मेहर से पार लगावें।
अस भौसागर सहज तरो।। ६ ।।

।। शब्द ५० ।।

हे मन रसिया काया के बसिया।
छोड़ो हमारी डगरिया हो।।टेक।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
बसूँ न तोरी नगरिया हो।। १ ।।
सतगुरु मोहिं निज भेद बताया।
जाओ घर झाँक झँझरिया हो।। २ ।।
शब्द डोर निज घर से लागी।
चलो चढ़ पकड़ रसरिया हो।। ३ ।।
मारग में अटकूँ नहिं कबही।
माया की हाट बजरिया हो।। ४ ।।

गुरु बल काल करम सिर फोड़ूँ ।
माया की फाड़ूँ चदरिया हो।। ५ ।।
जोत रूप लख त्रिकुटी धाऊँ।
चंदा की निरखूँ उजरिया हो।।६।।।
हंसन संग मानसर न्हाऊँ।
भर लूँ अमी गगरिया हो।। ७ ।।
भँवरगुफा भेटूँ सोहं से।
जहँ बाजे मधुर बँसुरिया हो।। ८ ।।
ठुमक ठुमक पग धरूँ अधर में।
सुन धुन बीन अमरिया हो।। ९ ।।
राधास्वामी चरन जाय फिर परसूँ।
मिला पद अमर अजरिया हो।।१० ।।

।। शब्द ५१ ।।

हे मन भोगी सदा के रोगी।
चलो घर हमरे साथा हो।।टेक।।
जनम जनम तुम दुख सुख भोगो।
काया संग बंधाता हो।।१।।
अब के चेत करो सतसंगा।
गुरु सँग जोड़ो नाता हो।। २ ।।
वे हैं समरथ बंदी छोड़ा।
मेहर से घर पहुँचाता हो।। ३ ।।

जगत भोग की आसा छोड़ो।
गुरु चरनन मन राता हो।। ४ ।।
शब्द कमाई करो उमँग से।
सूरत अधर चढ़ाता हो।। ५ ।।
गगन जाय सूरत अलगानी।
मन वहँ राज कमाता हो।। ६ ।।
राधास्वामी मेहर से आगे चाली।
लखा निज धाम सुहाता हो।। ७ ।।

।। शब्द ५२ ।।

हे मन मानी सद अज्ञानी।
क्यों दुख सुख यहँ सहना हो।।टेक।।
सुरत पड़ी बस तेरे तन में।
निज घर बार भुलाना हो।।१।।
इंद्री संग बहिरमुख बरते।
भोगन माहिं लुभाना हो।। २ ।।
धन सम्पति सँग रहे मदमाता।
कुल परिवार बँधाना हो।। ३ ।।
परमारथ की सार न जाने।
जगत सत्त कर जाना हो।। ४ ।।
अब तो चेत ज़रा तू हे मन।
खोजो सतगुरु स्याना हो।। ५ ।।

सेवा कर सतसँग कर उनका।
शब्द में सुरत लगाना हो।। ६ ।।
राधास्वामी मेहर से देवें तुझ को।
चरनन माहिं ठिकाना हो।। ७ ।।

।। शब्द ५३ ।।

मन के घाट बैठ सुर्त।
घर की सुद्ध बिसारी।।
इंद्रियन सँग भरमाय।
फँसी अब भोगन लारी।।

।। दोहा।।

पाँच दूत मिल खैंचते।
याहि अपनी अपनी ओर।।
बिन सतगुरु अस कौन है।
जो देहि ठिकाना ठौर।।
खोज सतगुरु का करो प्यारी।। १ ।।

पंडित भेख शेख़ और मुल्ला।
देखे सब संसारी।।
इनका संग करे जो कोई।
जाय न भौजल पारी।।

।। दोहा ।।

यह सब अटके मान में।
और लोभ संग भरमाय।।
काल करम के जाल में।
यह फिर फिर भौ भटकाय।।
साध संग ले गुरु ज्ञान विचारी।। २ ।।

सतसंग जल अश्नान कर।
ले तन मन आज पखारी।।
गुरु चरनन परतीत लाय नित।
आरत सेवा धारी।।

।। दोहा ।।

करम धरम सब त्याग कर।
दे भोगन को बिसराय।।
शब्द जोग अभ्यास कर।
ले सूरत अधर चढ़ाय।।
प्रेम रँग भीज रहे सारी।। ३ ।।

सुन सुन अचरज शब्द।
हुई सूरत मतवारी।।
सतगुरु दीनदयाल।
लिया मोहिं आप सम्हारी।।

।। दोहा ।।

अनहद बाजे बज रहे।
और चहुँ दिस धुन झनकार।।
सुरत मगन होय थिर खड़ी।
और मनुआँ अति सरशार।।
दया से मिला औसर भारी।। ४ ।।

राधास्वामी हुए परसन्न।
सुरत मेरी दीन सिंगारी।।
मन इन्द्री के घाट से।
किया (मोहि) छिन में न्यारी।।

।। दोहा ।।

हरख हरख निरखत रहूँ।
प्यारे राधास्वामी चरन बिलास।।
राधास्वामी दर्शन नित चहूँ।
मेरे और न दूजी आस।।
दया पर तन मन धन वारी।। ५ ।।

।। शब्द ५४ ।।

गुरु चरनन लौलीन।
सुरत जग किरत हटाई।।
मन इन्द्रियन सँग प्यार।
और व्यवहार घटाई।।

।। दोहा ।।

सतसँग प्यारा लागता।
और सुरत शब्द अभ्यास।।
सतगुरु सेवा धार कर।
हिये होवत नित्त हुलास।।
रीत गुरु भक्ति लगी प्यारी।। १ ।।

गुरु आरत बिधि धार।
लिया सब साज बनाई।।
गुरु शोभा अद्भुत बनी।
कुछ कहा न जाई।।

।। दोहा ।।

प्रेम मगन सब हो रहे।
और चहुँ दिस आनन्द छाय।।
गुरु प्यारे का दरस कर।
सब लीन्हा भाग जगाय।।
गाऊँ कस महिमा गुरु भारी।। २ ।।

सतसँग में गुरु बैठ के।
निज बचन सुनाई।।
सुन सुन बाढ़ा प्रेम।
सुरत मन अति सरसाई।।

।। दोहा ।।

घट में झाँक मगन होय।
सुन अनहद झनकार।।
दूत सकल निरबल हुए।
गुरु कीन्ही मेहर अपार।।
भोग सब लागे अब खारी।। ३ ।।

गुरु की सरन सम्हार।
बिरह हिये नइ उमँगाई।।
काल करम बल तोड़।
सुरत को अधर चढ़ाई। ।

।। दोहा ।।

गगन पार सुन में गई।
और देखा हंस बिलास।।
भँवरगुफा सुन बाँसुरी।
किया सतगुरु चरन निवास।।
सुरत हुइ राधास्वामी की प्यारी।। ४ ।।

।। शब्द ५५ ।।

मन चंचल चहुँ दिस धाय
सखी मैं नहिं जाने दूँगी।

गुरु बल हियरे धार।
बिघन कोइ नहिं आने दूँगी।।टेक।।
माया भोग दिखाय।
भुलावत जीवन को जग में।।
मैं गुरु नाम अधार।
दाव वाहि नहिं पाने दूँगी।। १ ।।
मन है बड़ा गँवार।
करे नहिं चरनन विश्वासा।।
मैं गुरु टेक सम्हार।
भरम कोइ नहिं लाने दूँगी।। २ ।।
गुरु का ध्यान सम्हार।
चरन में मन को साध रहूँ।।
बिन राधास्वामी नाम।
और कुछ नहिं गाने दूँगी।। ३ ।।

।। शब्द ५६ ।।

मनुआँ कहन न मान सखी।
मैं कौन उपाय करूँ।।टेक।।
बहु विधि रहा समझाय।
भरमता फिर फिर भोगन में।।
गुरु की कान न माने मूरख।
क्योंकर बाँध रखूँ।। १ ।।

निरभय होय तरंग उठावत।
रोक टोक माने नाहीं।।
मैं तो कीन्हे जतन अनेका।
कैसे इसको मार मरूँ।। २ ।।
सतसँग करता नित्त।
शब्द का करता अभ्यासा।।
अपनी हठ नहिं छोड़े।
कहो फिर कैसे पार पड़ूँ।। ३ ।।
गुरु की दया ले संग।
सुरत रहे चरनन में राती।।
राधास्वामी सरन सम्हार।
जगत से या बिधि आज तरूँ।। ४ ।।

।। शब्द ५७ ।।

मन तू कर ले हिये धर प्यार।
राधास्वामी नाम का आधार।। टेक।।
राधास्वामी नाम है अगम अपारा।
जो सुमिरे तिस लेहि उबारा।।
सुन घट में अनहद झनकार।। १ ।।
राधास्वामी धाम है ऊँच से ऊँचा।
संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा।।
दरस किया जाय कुल करतार।। २ ।।

राधास्वामी नाम की महिमा भारी।
शेष महेश कहत सब हारी।।
लीला अपर अपार।। ३ ।।
राधास्वामी परम पुरुष जग आये।
हंस जीव सब लिये मुक्ताये।।
और जीवन पर बीजा डार।। ४ ।।
नाम की महिमा बहु बिधि गाई।
मुक्ती की यहि जुगत बताई।।
सुमिरो राधास्वामी बारम्बार।। ५ ।।
राधास्वामी नाम का भेद सुनाया।
सुरत शब्द मारग दररसाया।।
धुन सँग सुरत चढ़ाओ पार।। ६ ।।
ध्वन्यात्मक जो राधास्वामी नामा।
तिस महिमा कस करूँ बखाना।।
जो सुने सोइ जाय निज घरबार।। ७ ।।

।। शब्द ५८ ।।

मन तू सुन ले चित दे आज।
राधास्वामी नाम की आवाज़।।टेक ।।
अनहद बाजे घट घट बाजें।
अनुरागी सुन सुन आराधें।
प्रेम भक्ति का लेकर साज।। १ ।।

तीन लोक में अनहद राजे।
सत्तलोक सत शब्द बिराजे।।
तिस परे राधास्वामी नाम की गाज।। २ ।।
शब्द की महिमा संतन गाई।
जिन मानी धुन तिन्हें सुनाई।।
कर दिया उनका पूरा काज।। ३ ।।
राधास्वामी नाम हिये में धारा।
सोई जन हुआ सब से न्यारा।।
त्याग दई कुल जग की लाज।। ४ ।।
राधास्वामी नाम प्रीत जिन धारी।
राधास्वामी तिसको लिया सुधारी।।
दान दिया वाहि भक्ती दाज।। ५ ।।
राधास्वामी नाम है अपर अपारा।
राधास्वामी नाम है सार का सारा।।
जो सुने सोइ करे घट में राज।। ६ ।।

।। शब्द ५९ ।।

जगत भोग मोहिं नेक न भावें।
मैं तो सतगुरु ढूँढूँगी।।टेक ।।
सतगुरु की महिमा अति भारी।
बिन उनके कोइ जाय न पारी।
मैं तो उनहीं को सेऊँगी।। १ ।।

सतसँग कर गुरु चरन धियाऊँ।
सुन सुन बचन हिये उमगाऊँ।।
मैं तो उनहीं की जुगत कमाऊँगी।। २ ।।
भाग जगे सतगुरु मिले आई।
दीन देख मोहिं लिया अपनाई।।
चरनन प्रीत बढ़ाऊँगी।। ३ ।।
ले उपदेश सुनूँ घट धुन को।
घेर और फेर लगाऊँ मन को।।
गगन ओर नित धाऊँगी।। ४ ।।
गुरु पद परस सरोवर न्हाऊँ।
भँवरगुफा सोहं धुन गाऊँ।।
सतपुर बीन बजाऊँगी।। ५ ।।
अलख पुरुष की आरत धारूँ।
अगम पुरुष का रूप निहारूँ।।
राधास्वामी चरन समाऊँगी।।६।।
सतगुरु दया परम पद पाया।
राधास्वामी धाम अजब दरसाया।।
छिन छिन उन गुन गाऊँगी।। ७ ।।

।। शब्द ६० ।।

प्रेम दात गुरु दीजिये।
मेरे समरथ दाता हो।। १ ।।

दरस पाय नित मगन रहूँ।
मेरे यही अभिलाषा हो।। २ ।।
प्रेम रंग भींजत रहूँ।
नित तुमहिं धियाता हो।। ३ ।।
मेरे सर्व अंग में बस रहो।
नित तुम गुन गाता हो।।४।।
माया के सब बिघन हटाओ।
काल रहे मुरझाता हो।। ५ ।।
मन इंद्री का ज़ोर न चाले।
नित्त रहूँ रंग राता हो।।६।।
भोग बिलास जगत के सारे।
मो को कुछ न सुहाता हो।। ७ ।।
यह बख़शिश करो राधास्वामी प्यारे।
अब क्यों देर लगाता हो।। ८ ।।
देर देर में होत अकाजा।
योहिं दिन बीते जाता हो।। ९ ।।
यह बिनती मानो मेरे प्यारे।
राधास्वामी पित और माता हो।।१० ।।
प्रेम दात बिन सुनो मेरे प्यारे।
यह मन नाच नचाता हो।।११ ।।

मेरा बस यासे नहिं चाले।
भोगन में मदमाता हो।।१२ ।।
दया करो मेरी सुरत चढ़ाओ।
घट में शब्द बजाता हो।।१३ ।।
जो तुम दया करो मेरे प्यारे।
फूला अँग न समाता हो।।१४ ।।
नाम तुम्हार सुनाऊँ सब को।
जग में धूम मचाता हो।।१५।।
बल बल जाउँ चरन पर तुम्हरे।
छिन छिन तुम्हें रिझाता हो।।१६ ।।
खुल खुल खेलूँ सुन में प्यारे।
काटूँ करम विधाता हो।।१७ ।।
खेलूँ बिगसूँ संग तुम्हारे।
दया पाय इतराता हो।।१८ ।।
मगन रहूँ नित घट में अपने।
चरनन सँग इठलाता हो।।१९ ।।
सुन सुन शब्द होय मतवाला।
छिन छिन अमी चुआता हो।।२० ।।
ऐसी मौज करो अब प्यारे।
दम दम विनय सुनाता हो।।२१ ।।

होय निचिंत मेरे प्यारे राधास्वामी।
तुम चरनन माहिं समाता हो।। २२।।

।। शब्द ६१।।

घट में दर्शन दीजिये।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो।। १ ।।
बिन दर्शन मोहिं चैन न आवे।
मेरी आँखों के तारे हो।। २ ।।
बिन दर्शन मैं तड़प रहूँ।
मेरे प्रान अधारे हो।। ३ ।।
बिन दरशन मोहिं कछु न सुहावे।
मेरे जग उजियारे हो।। ४ ।।
बिन दर्शन तुम्हरे मेरे प्यारे।
सहत रहूँ दुख भारे हो।। ५ ।।
बिन दरशन मोहिं नेक न भावे।
यह जग संसारे हो।। ६ ।।
दर्शन देओ और बचन सुनाओ।
गुरु मेरे अगम अपारे हो।। ७ ।।
सुनो पुकार मेरी अब जल्दी।
सतगुरु दीन दयारे हो।। ८ ।।
मेहर करो मानो मेरी बिनती।
कीजे मम उपकारे हो।। ९ ।।

रहूँ अचिंत मगन निज मन में।
नित तुम दरस निहारे हो।।१०।।
अब ही दया करो मेरे दाता।
मैं चरनन बलिहारे हो।।११।।
शुकर करूँ और नित गुन गाऊँ।
घट में देख बहारे हो।।१२।।
दरस अधार जियत रहूँ प्यारे।
राधास्वामी सत करतारे हो।।१३।।

।। शब्द ६२ ।।

बिन दरशन कल नाहिं पड़े।
मेरे गुरु प्यारे हो।।टेक।।
जब से मैं बिछड़ी चरन कँवल से।
चैन न पाया नहिं धीर धरे।।१।।
निस दिन सोच रहे यहि मन में।
भौसागर अब कैसे तरे।।२।।
काल अनेकन बिघन लगाये।
चिन्ता में दिन रात जरे।।३।।
भजन भक्ति कुछ बन नहिं आवे।
मन माया से नित्त डरे।।४।।
हे सतगुरु सब बिघन हटाओ।
तुम बिन को अस दया करे।।५।।

राधास्वामी मेहर से दर्शन दीजे।
तब मेरा सब काज सरे।। ६ ।।

।। शब्द ६३ ।।

सुरत प्यारी बँध गई हो।
जगत में भोगन संग।। १ ।।
भूल गइ निज घर अपना हो।
धार रहि अद्भुत माया रंग।। २ ।।
मिलें जब सतगुरु दाता हो।
निकालें मन की सभी तरंग।। ३ ।।
दया कर बचन सुनावें हो।
सिखावें गुरु भक्ती का ढंग।। ४ ।।
शब्द अभ्यास करावें हो।
चढ़े तब घट में उमँग उमंग।। ५ ।।
सरन दे काज बनावें हो।
बसावें राधास्वामी प्रीत अँग अंग।। ६ ।।

।। शब्द ६४ ।।

सुरत निज घर बिसरानी हो।
जगत में पाय कुसंग।। १ ।।
रहे मन इंद्री सँग भरमाय।
उठावत नित नित नई तरंग।। २ ।।

गुरू बिन कौन सम्हारे याहि।
करावें वोही मन से जंग।। ३ ।।
मेहर से मन का मुख मोड़ें।
चढ़ावें सूरत अधर उमंग।। ४ ।।
छुटे तब यह औघट घाटा।
मिटें तब मन की सबहि उचंग।। ५ ।।
मेहर प्यारे राधास्वामी की पावे।
प्रेम का धारे अचरज रंग।। ६ ।।

।। शब्द ६५ ।।

आओ री सखी चलो गुरु के पासा।
भक्ति दान आज लीजिये।। १ ।।
जीव उबारन सतगुरु आये।
सतसँग उनका कीजिये।। २ ।।
प्रीत प्रतीत धार चरनन में।
तन मन भेंट धरीजिये।। ३ ।।
दृष्टि जोड़ उन दर्शन करना।
चित दे बचन सुनीजिये।। ४ ।।
बचन कहो चाहे अमृत धारा।
उमँग उमँग घट पीजिये।। ५ ।।
सुन सुन बचन खिलत घट मनुआँ।
हियरे उमँग भरीजिये।। ६ ।।

कूड़ देख जग का परमारथ।
करम धरम तज दीजिये।। ७ ।।
सुरत शब्द का ले उपदेशा।
घट में बिलास करीजिये।। ८ ।।
अधर चढ़त सुर्त हुई मगनानी।
मनुआँ धुन सँग रीझिये।। ९ ।।
भक्ति महातम महिमा जानी।
प्रेम रंग घट भीजिये।। १० ।।
समरथ सतगुरु राधास्वामी पाये।
सीस चरन में दीजिये।। ११ ।।

।। शब्द ६६ ।।

आओ री सखी चलो गुरु सतसँग में।
जीव का काज बनाई।। टेक ।।
गिरही पंडित शेख़ और भेखा।
सब मुए धर धर पिछली टेका।।
पूजें देवी देव अनेका।
जनम जनम भरमाई।। १ ।।
राधास्वामी चरनन धर परतीती।
सतगुरु से कर गहरी प्रीती।।
या विधि मन माया को जीती।
काल को मार गिराई।। २ ।।

सतसँग कर ले गुरु उपदेशा।
सुरत शब्द में करो प्रवेशा।।
जनम मरन का मिटे अँदेशा।
घट में करो चढ़ाई।। ३ ।।
गुरु सरूप का कर दीदारा।
सुन में सुनो शब्द झनकारा।।
मुरली बीन बजे जहँ सारा।
सतगुरु दरशन पाई।। ४ ।।
वहाँ से भी फिर अधर चढ़ावत।
अलख अगम का दर्शन पावत।।
रा धा स्वा मी चरन निहारत।
निज घर जाय बसाई।। ५ ।।

।। शब्द ६७ ।।

कोई कछू कहै मैं नेक न मानूँ।
मेरा गुरु चरनन मन लागा री।। १ ।।
दर्शन करूँ नित्त हित चित से।
(मेरा) रूप रस्स मन राता री।। २ ।।
साकित जन का सँग नहिं चाहूँ।
चाहुँ न भोग और रागा री।। ३ ।।
दीन ग़रीबी धारूँ चित में।
सेवा में रहुँ जागा री।। ४ ।।

गुरु सतसँग मोहिं मिला सहज में।
क्या कहुँ मैं बड़ भागा री।। ५ ।।
मेहर करी गुरु मोहिं सम्हाला।
जगत भाव भय त्यागा री।। ६ ।।
शब्द डोर गहि सुरत चढ़ाऊँ।
छिन छिन धुन रस पागा री।। ७ ।।
गुरु बल सबहि बिकार निकारूँ।
हंस होय मन कागा री।। ८ ।।
सत्त शब्द में सुरत पिरोऊँ।
जैसे सुई में धागा री।। ९ ।।
राधास्वामी धाम चलूँ फिर सज के।
वहिं उन दर्शन ताका री।। १० ।।
मेहर करी मोहिं अंग लगाया।
दीन्हा अचल सुहागा री।। ११ ।।

।। शब्द ६८ ।।

मेरे राधास्वामी प्यारे हो।
दरस दे विपति हरो।। १ ।।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो।
चरन मेरे सीस धरो।। २ ।।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो।
हिये में मेरे आन बसो।। ३ ।।

मैं तो जाऊँ बलिहारी हो।
मेहर की दृष्टि करो।। ४ ।।
राधास्वामी लेओ बचाई हो।
अब मैं सरन पड़ो।। ५ ।।

।। शब्द ६९ ।।

मेरे राधास्वामी जग आये।
करन को जीव उबार।। १ ।।
धर संत रूप औतार।
सुनाया घट का भेद अपार।। २ ।।
शब्द धुन घट में सुन्ना हो।
ध्यान गुरु रूप सम्हार।। ३ ।।
भोग जग जान असारा हो।
त्याग चल शब्द का कर आधार।। ४ ।।
सरन राधास्वामी धारो हो।
मेहर से देवें पार उतार।। ५ ।।

।। शब्द ७० ।।

रुन झुन रुन झुन हुइ धुन घट में।
सुन सुन लगी मोहिं प्यारी रे।।टेक ।।
यह धुन आवत दसम द्वार से।
काल शब्द से न्यारी रे।। १ ।।

सुन सुन धुन अब सोया मनुआँ।
इंद्री भी थक हारी रे।। २ ।।
अधर चढ़त सुर्त मगन होय कर।
गुरु चरनन पर वारी रे।। ३ ।।
उमँग उमँग सुर्त गइ सतपुर में।
दया दृष्टि गुरु डारी रे।।४।।
आगे चल पहुँची निज धामा।
राधास्वामी के बलिहारी रे।। ५ ।।

।। शब्द ७१।।

कोइ दिन का है जग में रहना सखी।
ले सुध बुध घर की ओर चलो।।टेक।।
यहाँ दूत दिखावें ज़ोर घना।
और इंद्री नाच नचावें मना।।
इन सबको दीजे वेग हटा।
कुल काल करम का आज दलो।। १ ।।
सतगुरु का खोज करो भाई।
उन चरनन प्रीत धरो आई।
प्रेमी जन से मेल मिलाई।।
सतसंगत में उमँग रलो।। २ ।।
गुरु देवें घर का भेद बता।
सुर्त शब्द का दें उपदेश सचा।।

तब घट में अपने धूम मचा।
गुरु शब्द से चढ़ कर जाय मिलो।। ३ ।।
फिर वहाँ से अधर चढ़ो प्यारी।
धुन मुरली बीन सुनो सारी।।
मन माया काल रहे वारी।
सतगुरु की गोद में जाय पलो।। ४ ।।
सतपुर से भी फिर अधर चलो।
घर अलख अगम के पार बसो।।
लख अचरज लीला मगन रहो।
राधास्वामी चरन में जाय घुलो।। ५ ।।

।। शब्द ७२ ।।

भजन मैं कैसे करूँ हेली री।
भजन मैं कैसे करूँ।
बिन मन निश्चल होय।।
भजन मैं कैसे करूँ।।टेक।।
संसारी ख़्यालों में भरमे।
नित वहि कार कमाय।।
मैं चाहूँ रोकूँ याहि घट में।
नेक नहीं ठहराय।। १ ।।
बहु विधि याहि समझौती दीन्ही।
नेक कहन नहिं मान।।

दया करो मेरे सतगुरु प्यारे।
समरथ पुरुष सुजान।। २ ।।
भोग बासना दूर निकारो।
धुन सँग सुरत लगाय।।
मनुआँ रहे चरन लौ लीना।
बहुर न कितहूँ जाय।। ३ ।।
बिना दया यह मन नहिं माने।
करिये केती घाल।।
राधास्वामी चाहें तो छिन में मोड़ें।
पल में करें निहाल।। ४ ।।

।। शब्द ७३ ।।

मैं तो पड़ी री दूर निज घर से।
मेरा दरशन को जिया तरसे।। १ ।।
छिन छिन पिया की याद सतावे।
जल नैनन से बरसे।। २ ।।
दया करें गुरु पूरे अपनी।
जब पिया पद जाय परसे।। ३ ।।
मैं गुरु प्यारे की सरन पड़ूँगी।
सतसँग करूँ नित डर से।। ४ ।।
सुरत शब्द की जुगत कमाऊँ।
तब घट में कुछ दरसे।। ५ ।।

चढ़ूँ अधर लखूँ रूप पिया का।
तब मन सूरत सरसे।। ६ ।।
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा।
जाय मिली निज बर से।। ७ ।।

।। शब्द ७४ ।।

भक्त का पंथ निराला है।।टेक।।
भक्तन के भगवंत की महिमा।
और सकल जंजाला है।। १ ।।
जो भक्ती संतन ने भाखी।
वही तो सब से बाला है।। २ ।।
उनका प्रीतम कुल का करता।
राधास्वामी दीन दयाला है।। ३ ।।
और उपाश सकल जग माहीं।
अंश कला पुर्ष काला है।।४।।
इनके संग उबार न होई।
कटे न माया जाला है।। ५ ।।
मिल सतगुरु जो शब्द कमावे।
वही खोले घट ताला है।। ६ ।।
प्रेम भक्ति की महिमा भारी।
जो धारे सोइ आला[1] है।। ७ ।।

१ - ऊँचा

अस प्रेमी प्रीतम से अपने।
जाय मिले दरहाला[1] है।। ८ ।।
राधास्वामी द्याल भक्त को अपने।
मेहर से आप सम्हाला है।। ९ ।।

।। शब्द ७५ ।।

मनुआँ मेरा सोवे जगत में।
जगा देओ जी।।टेक।।
गुरु सतसँग में ले चल सजनी।
बचन सुना देओ जी।। १ ।।
गहरी प्रीत बसाय हिये में।
चरन लगा लेओ जी।। २ ।।
दया करो देओ शब्द उपदेशा।
मरम जना देओ जी।। ३ ।।
तब जागे यह सोता मनुआँ।
अधर चढ़ा देओ जी।।४।।
रा धा स्वा मी चरन निहारूँ।
काज बना देओ जी।। ५ ।।

।। शब्द ७६ ।।

हे मित्रा मनुआँ।
क्यों न चले निज देश।।टेक।।

१ - जल्दी

या तन में नित दुख सुख सहना।
छोड़ो यह परदेश।। १ ।।
बिन सतसँग घर भेद न पावे।
ले गुरु से उपदेश।। २ ।।
शब्द जुगत ले नित्त कमाओ।
काटो करम कलेश।। ३ ।।
सुरत चढ़ाय गगन में धाओ।
छूटे माया लेश।।४ ।।
मानसरोवर कर अशनाना।
धारो हंसा भेष।। ५ ।।
भँवरगुफा की बंसी बाजी।
द्याल देश का मिला सँदेश।। ६ ।।
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख।
राधास्वामी चरन करो परवेश।। ७ ।।

।। शब्द ७७ ।।

कौन विधि मनुआँ रोका जाय।
जतन कोइ देओ बताय।। १ ।।
मौत का डर जब मन में आय।
नर्क का भय जब चित्त समाय।। २ ।।
दुखन से जियरा जब घबराय।
खोज सतसँग में करे बनाय।। ३ ।।

गुरू और साध से ले उपदेश।
सुरत मन घट धुन संग लगाय।।४।।
मेहर से घट में परचा पाय।
प्रीत गुरु दिन दिन बढ़ती जाय।।५।।
सहज में करम धरम छुटकाय।
भोग इंद्रिन के नहीं सुहाय।।६।।
दया गुरु तब मन होय निश्चल।
शब्द सँग सूरत अधर चढ़ाय।।७।।
सरन दे राधास्वामी गुरु दातार।
मेहर से दें निज घर पहुँचाय।।८।।

।। शब्द ७८ ।।

मनुआँ अनाड़ी से कह दीजो।
जाओ बसो चौरासी देश।।टेक।।
मैं तो अब तेरा संग तियागा।
जाउँगी पिया के देश।।१।।
चलना होय तो अबहि चलो घर।
छोड़ो जग के ऐश।।२।।
नहिं फिर जनम जनम पछताओ।
बाँधेंगे जम गह केश।।३।।
चित से चेत गहो गुरु सरना।
छूटे काल कलेश।।४।।

शब्द डोर गहि चढ़ो गगन पर।
धारो हंसा भेष।। ५ ।।
नित गुन गाओ नाम पुकारो।
राधास्वामी पूरन धनी धनेश।। ६ ।।

।। शब्द ७९ ।।

मनुआँ अनाड़ी को समझाओ।
क्यों करे हमारी (आपनी) हान।। १ ।।
जनम जनम किया भोग बिलासा।
छोड़ी न अपनी बान।। २ ।।
दुख सुख बहु विधि भोगत रहिया।
गुरु की सीख न मान।। ३ ।।
दुर्लभ नर देही फिर पाई।
अब तो चेत अजान।। ४ ।।
शब्द शोर नित घट में होता।
सुनो ज़रा दे कान।। ५ ।।
गुरु दयाल अब भेंटे आई।
कर उनकी पहिचान।। ६ ।।
मेहर से घर का भेद सुनावें।
चित्त लगा सुन तान।। ७ ।।
त्रिकुटी जाय बसो तुम प्यारे।
तीन लोक का राज कमान।। ८ ।।

हम पहुँचें जहँ राधास्वामी धामा।
धर उन चरनन ध्यान।। ९ ।।

।। शब्द ८० ।।

हे मेरे समरथ साईं।
निज रूप दिखाओ।। १ ।।
हे मेरे प्यारे दाता।
निज मेहर कराओ।। २ ।।
मैं तड़प रहूँ दिन राती।
मेरी धीर बँधाओ।। ३ ।।
तुम बिन मोहिं सुख नहिं चैना।
क्यों देर लगाओ।।४ ।।
आस आस में बहु दिन बीते।
अब मेरी आस पुराओ।। ५ ।।
योंही उमर जाय मेरी बीती।
कब तक तरसाओ।। ६ ।।
दरस दिखाय हरो मन पीड़ा।
राधास्वामी काज बनाओ।। ७ ।।

।। शब्द ८१ ।।

सखी री मैं जाऊँगी घर।
नहिं ठहरूँगी माया देश।।टेक ।।

घर तो मेरा ऊँच से ऊँचा।
जहँ नहिं काल कलेश।। १ ।।
नहिं वहँ ब्रह्म और पारब्रह्मा।
नहिं वहँ ब्रह्मा विष्णु महेश।। २ ।।
आतम परमातम नहिं दोई।
देवी देव न गौर गनेश।। ३ ।।
राधास्वामी जहँ सदा बिराजें।
धारें अगम अलख सत भेष।। ४ ।।
हंसन की जहँ शोभा भारी।
करते वहँ सद आनँद ऐश।। ५ ।।
बिन गुरु दया कोई नहिं पहुँचे।
गुरु चरनन में करूँ अदेश।। ६ ।।
राधास्वामी प्यारे सतगुरु मेरे।
सुफल करी मेरी अब के बैस।। ७ ।।

।। शब्द ८२ ।।

जो मेरे प्रीतम से प्रीत करे।
मोहिं प्यारा लागे री।। १ ।।
जो मेरे प्रीतम की सेवा धारे।
वहि दिन दिन जागे री।। २ ।।
जो मेरे प्रीतम की महिमा गावे।
मोहिं अधिक सुहावे री।। ३ ।।

जो मेरे प्रीतम के चरनन लागे।
वहि जग से भागे री।। ४ ।।
जो मेरे प्रीतम का रूप निहारे।
वहि छबि ताके री।। ५ ।।
जो मेरे प्रीतम का शब्द सम्हारे।
गुरु दर झाँके री।। ६ ।।
जो मेरे प्रीतम की सरन सम्हारे।
वहि घर जावे री।। ७ ।।
जो मेरे प्रीतम का नाम पुकारे।
सोइ निज धाम सिधारे री।। ८ ।।
भौजल से जो तरना चाहे।
राधास्वामी राधास्वामी गावे री।। ९ ।।

।। शब्द ८३ ।।

भोग बासना छोड़ पियारे।
इस में क्या फल पावेगा।। १ ।।
मेहनत करे रात दिन जग में।
अंत को ख़ाली जावेगा।। २ ।।
भाई बंधु और कुटुँब क़बीला।
कोई काम न आवेगा।। ३ ।।
यह सब हैं स्वारथ के संगी।
अंत को फिर पछतावेगा।। ४ ।।

गुरू सतसँग में लगन लगा ले।
भेद वहाँ तू पावेगा।। ५ ।।
कर अभ्यास प्रेम से निस दिन।
घट में आनँद पावेगा। ।६ ।।
राधास्वामी सरन धार दृढ़ मन में।
भौजल पार सिधारेगा।। ७ ।।

।। शब्द ८४ ।।

जगत जीव सब होली पूजें।
साधू होला गावें री।। १ ।।
अबीर गुलाल उड़ावत चालें।
प्रेम रंग घट लावें री।। २ ।।
विरह अनुराग की धारा भारी।
हिय में नित उमँगावें री।। ३ ।।
जो जिव चरन सरन में आवें।
उनका भाग जगावें री। ।४ ।।
राधास्वामी चरन धार परतीती।
सतगुरु शब्द मनावें री।। ५ ।।
शब्द अभ्यास करत नित घट में।
जग देह भाव भुलावें री। ।६ ।।
जग जीवन को दया धार कर।
राधास्वामी नाम सुनावें री।। ७ ।।

।। शब्द ८५ ।।

सतगुरु प्यारी चरन अधारी।
खुन खुन करती आई हो।। १ ।।
उमँग उमँग कर सेवा करती।
धाउँ धाउँ धाउँ धाउँ धाई हो।। २ ।।
गुरु आरत कर मगन हुई अब।
घन घन घंट बजाई हो।। ३ ।।
प्रीत सहित परशादी लेकर।
खाउँ खाउँ खाउँ खाउँ खाई हो।।४ ।।
रा धा स्वा मी दया करी अब।
रुन झुन शब्द सुनाई हो।। ५ ।।

।। शब्द ८६ ।।

माया रूप नवीन धार कर।
सतसंग में आई।।
मान भरे रहि बोल बचन।
अहंकार रहा चित में छाई।।
मैं आऊँ मैं आऊँ मैं आऊँ शोर मचाई।। १ ।।
काल भी दूजा रूप धार कर।
अपना मत गाई।।
क्रोध विरोध ईर्षा झगड़ा।
चहुँ दिस फैलाई।।
बोलत फूँ फूँ फूँ फूँ झक लाई।। २ ।।

सतसँग में नहिं मिला दाव तब।
आपस में झगड़ा ठाना।।
झूठी रार बढ़ाय जीव को।
चाहत भरमाना।।
घुर घुर करत ऐंठते दोऊ।
फरफूँ दिखलाई।। ३ ।।
प्रेमी जन अस देख हाल।
सुमिरन में लौ लाई।।
राधास्वामी नाम सम्हार।
जाल को दीन्हा तुड़वाई।।
काल रहा अब झूर।
रही माया भी मुरझाई ।। ४ ।।

।। बचन ४१।।

।। शब्द १।।

सुरतिया खेलत बाल समान।
चरन में गुरु के उमँग उमंग।। १ ।।
दूर ही दूर रहा जग माहिं।
मेहर हुई पाया गुरु का संग।। २ ।।
निरख गुरु चरन नवीन बिलास।
चढ़त नित नया प्रेम का रंग।। ३ ।।

बचन सुन मनुआँ हरख रहा।
भरम और संशय होते भंग।।४।।
सरन राधास्वामी दृढ़ करता।
भाव और भक्ति हिये धरता।।५।।

।। शब्द २।।

सुरतिया धूम मचाय रही।
करें गुरु क्यों नहिं दया विचार।।१।।
विनय करत मोहिं बहु दिन बीते।
सहत रहे दुख मन बीमार।।२।।
बिन गुरु दरस दवा नहिं कोई।
माँग रहा दर्शन हर बार।।३।।
जस होय मौज तुम्हारी प्यारे।
अंतर बाहर देओ दीदार।।४।।
जो अभी मेल न हो सतसँग में।
घट में दरशन रहूँ निहार।।५।।
चाहे अपना रूप दिखाओ।
चाहे सुनाओ शब्द अपार।।६।।
जस तस मन कुछ शान्ती पावे।
सोई जुगत करो दातार।।७।।।
तुम्हरे घर कुछ कमी न होई।
खोलो दया मेहर भंडार।।८।।

किनका प्रेम का बख़शिश दीजे।
निस दिन तड़प रहूँ लाचार।। ९ ।।
पिरथम दया करी मोपै भारी।
अब क्यों हुए कठोर दयार।।१० ।।
मेहर करो मोपै जल्दी प्यारे।
जस तस मन को लेओ सम्हार।।११ ।।
दीन दयाल जीव हितकारी।
प्यारे राधास्वामी मेरे प्राण अधार।।१२ ।।

।। शब्द ३।।

सुरतिया भाव सहित।
आई सुन गुरु महिमा सार।। १ ।।
दरशन कर मन में हरखानी।
सुन सुन बचन बढ़ा हिये प्यार।। २ ।।
नित्त बिलास देख मगनानी।
दर्शन नित्त नवीन निहार।। ३ ।।
सतसँग करत भरम सब भागे।
जग परमारथ कूड़ बिचार।।४।।
शब्द भेद पाया सतगुरु से।
सुरत चढ़ावत धुन की लार।। ५ ।।
जुगत कमावत होत सफ़ाई।
मन से आसा भोग निकार।।६ ।।

रहूँ निचिंत सरन गुरु धारूँ।
राधास्वामी उतारें भौजल पार।। ७ ।।

।। शब्द ४ ।।

सुरतिया उमँग उमँग।
गुरु आरत करत सम्हार।। १ ।।
दीन अधीन चरन में आई।
बिसरत कृत संसार।। २ ।।
प्रीत सहित गुरु सेवा करती।
नित्त बढ़ावत प्यार।। ३ ।।
सुन सुन महिमा गुरु सतसँग की।
भाव हिये में धार।।४।।
दिन दिन बढ़त चरन विश्वासा।
गावत राधास्वामी नाम अपार।। ५ ।।
प्रेमी जन से हेल मेल कर।
गुरु गुन गावत सार।।६।।
राधास्वामी महिमा हिये बसावत।
संशय भरम सब दूर निकार।। ७ ।।

।। शब्द ५ ।।

सुरतिया घट में आनँद पाय।
निरख गुरु भक्ती रीत नई।। १ ।।

प्रेमी जन की हालत देखत।
मन में अचरज करत रही।। २ ।।
माँगे गुरु से दया विशेषा।
सुरत शब्द की लार लई।। ३ ।।
देखे घट में अचरज नूरा।
सुन सुन धुन फिर अधर गई।। ४ ।।
ऐसी मेहर करो गुरु दाता।
घट में नित आनंद लई।। ५ ।।
दीन अधीन पड़ी तुम सरना।
तुम बिन को मोहिं दान दई।। ६ ।।
प्रेम की दात देओ मोहिं प्यारे।
सुरत चरन में लिपट रही।। ७ ।।
और अँदेस न लावे मन में।
मौज धार नित मगन रही।। ८ ।।
प्रेम रंग रहे सुरत रँगीली।
रा धा स्वा मी सरन पई।। ९ ।।

।। शब्द ६ ।।

सुरतिया सिमट गई।
गुरु दर्शन दृष्टी जोड़।। १ ।।
प्रेम अंग ले करती दर्शन।
चित चंचलता छोड़।। २ ।।

मन और सुरत जमावत तिल पर।
सुनती अनहद घोर।। ३ ।।
निरख प्रकाश मगन हुई मन में।
अंतर दृष्टी लाई मोड़।। ४ ।।
गुरु चरनन में प्यार बढ़ावत।
छोड़त जग का मोर और तोर।। ५ ।।
जागत प्रेम सुनत गुरु बानी।
थकित रहे सब दूत और चोर।। ६ ।।
राधास्वामी द्याल दया की भारी।
आप घटाया काल का ज़ोर।। ७ ।।

।। शब्द ७ ।।

सुरतिया सुनत रही।
नित राधास्वामी बानी सार।। १ ।।
दीन चित्त सतसँग में आई।
धर गुरु चरनन प्यार।। २ ।।
मेहर करी गुरु दिया उपदेशा।
सुरत शब्द की जुगती सार।। ३ ।।
सुरत सम्हार करत अभ्यासा।
सुनत मगन होय धुन झनकार।। ४ ।।
राधास्वामी सतगुरु हुए दयाला।
दीन जान लिया गोद बिठार।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ८ ।।

सुरतिया अचरज करत रही।
पिरेमी जन का देख बिलास।। १ ।।
तज जग का भय भाव और लज्जा।
गुरु चरनन में करती बास।। २ ।।
भक्ति भाव में निस दिन बरते।
उमँग सहित करती अभ्यास।। ३ ।।
प्रीत पररस्पर छिन छिन पालत।
गुरु दरशन कर बढ़त हुलास।। ४ ।।
हरख हरख सुनती गुरु बचना।
ध्यान धरत घट होत उजास।। ५ ।।
शब्द सुनत सुर्त चढ़त अधर में।
त्रिकुटी पहुँची फोड़ अकाश।। ६ ।।
सुन्न महासुन भँवरगुफा लख।
सत्त अलख और अगम निवास।। ७ ।।
राधास्वामी धाम पाय मगनानी।
आज हुई मेरी पूरन आस।। ८ ।।

।। शब्द ९ ।।

सुरतिया करत रही।
गुरु दर्शन सहित उमंग।। १ ।।

मोहित हुई सुनत गुरु बचना।
चढ़त सवाया रंग।। २ ।।
भक्ती रीत लगी अब प्यारी।
गुरु भक्तन का धारत ढंग।। ३ ।।
जग जीवन की प्रीत तियागी।
प्रेमी जन का करती संग।। ४ ।।
छोड़ झिझक करती गुरु सेवा।
प्रेम गुरू छाया अँग अंग।। ५ ।।
याद बढ़ावत नाम पुकारत।
सहज हटावत सबहि उचंग।। ६ ।।
रूप धियावत शब्द सुनावत।
सुरत चढ़ावत जैसे पतंग।। ७ ।।
सुरत खिलावत मन बिगसावत।
नई उठावत प्रेम तरंग।। ८ ।।
काल बिडारत कर्म सुलावत।
मन माया से लेती जंग।। ९ ।।
घट में धावत आनँद पावत।
हिय उमगावत संशय भंग।। १० ।।
झिझक हटावत क़दम बढ़ावत।
दूत दुष्ट सब होते तंग।। ११ ।।

घंटा संख सुनत हरखावत।
पार चढ़त धस नाली बंक।।१२।।
गरज मृदंग सुनत चली आगे।
बेनी न्हावत हंसन संग।।१३।।
मुरली धुन सुन अधर सिधारी।
महाकाल रहा दंग।।१४।।
सत पद पार गई निज घर में।
राधास्वामी धाम अरूप अरंग।।१५।।
राधास्वामी दिया प्रसन्न होय कर।
प्रेम प्रसाद और भक्ति उतंग।।१६।।

।। शब्द १०।।

सुरतिया खिलत रही।
देख गुरु मन मोहन छबि आज।।१।।
दरशन करत भूल रहि सुध बुध।
छोड़ दिया सब जग का काज।।२।।
उमँग उमँग कर आरत गावत।
प्रेम का पाया अद्भुत साज।।३।।
भक्ति अंग में खुल खुल बरते।
छोड़ झिझक और कुल की लाज।।४।।
राधास्वामी दया से गई भौ पारा।
तज दिया मन कपटी का राज।।५।।

।। शब्द ११ ।।

सुरतिया वार रही।
तन मन गुरु चरन निहार।। १ ।।
बिमल बैराग धार कर मन में।
छोड़ दिया संसार।। २ ।।
मोह जाल के बंधन काटे।
गुरु सेवा में रहे हुशियार।। ३ ।।
सतसँग बचन धार कर चित में।
मन को छिन छिन डारत मार।।४ ।।
भोग अंक को काटत छिन छिन।
राधास्वामी नाम जपत हर बार।। ५ ।।
ध्यान लगाय बढ़ावत प्रीती।
शब्द सुनत हियरे धर प्यार।।६ ।।
घंटा संख मचावत शोरा।
छिटक रहा घट जोत उजार।। ७ ।।
अनहद शब्द लगा अब गरजन।
चढ़ कर पहुँची गगन मँझार।। ८ ।।
द्वारा फोड़ गई अब सुन में।
न्हाई मानसर मैल उतार।। ९ ।।
भँवरगुफा का देख उजारा।
बीन सुनी सतगुरु दरबार।।१० ।।

अलख अगम के पार चढ़ाई।
राधास्वामी चरन मिला आधार।। ११ ।।
तन मन तोड़ किया जब सतसँग।
भोग बासना दई निकार।। १२ ।।
गुरु चरनन में प्रीत घनेरी।
कीन्ही हिये से तन मन वार।। १३ ।।
दीन ग़रीबी धार चित्त में।
मन के मान दिये सब झाड़।। १४ ।।
तब गुरु परसन होय मेहर से।
अंग लगाया किरपा धार।। १५ ।।
अस सतसंग करे जो कोई।
सोई जावे भौजल पार।। १६ ।।
राधास्वामी परम गुरू दातारा।
पहुँचावें फिर निज घर बार।। १७ ।।
होय निचिन्त बसे सुख सागर।
हर दम राधास्वामी दरश निहार।। १८ ।।
अचरज नाम और अचरज रूपा।
अचरज मेहर का वार न पार।। १९ ।।
लख लख भाग सराहत अपना।
राधास्वामी चरन पकड़ रहि सार।। २० ।।

राधास्वामी द्याल सरन हिये धारी।
उन मेहर से दिया मेरा काज सँवार।। २१ ।।

।। शब्द १२ ।।

सुरतिया हरख रही।
निरखत गुरु चरन बिलास।। १ ।।
बिगसत खेलत संग गुरू के।
दिन दिन बढ़त हुलास।। २ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन में।
तजत काम और भोग बिलास।। ३ ।।
उमँग उमँग कर गावत बानी।
मगन होय रह गुरु के पास।।४।।
चित दे सुनत बचन सतसँग के।
चेत करत घट में अभ्यास।। ५ ।।
मन और सुरत सिमट कर चालें।
तजत देश जहँ माया बास।। ६ ।।
तीसर तिल धस सुनती बाजा।
लखती जहँ वहँ जोत उजास।। ७ ।।
गगन ओर धावत सुर्त प्यारी।
पावत काल तरास।। ८ ।।
अधर चढ़त सुन सुन धुन अक्षर।
सुन में हंसन संग बिलास।। ९ ।।

भँवरगुफा धुन सुन गई आगे।
निज सूरज सँग मिला अभास।।१०।।
अलख अगम लख हुई अचिन्ती।
मिल गई प्रेमानंद की रास।।११।।
प्रेम पियारी सुरत रँगीली।
प्यारे राधास्वामी की हुई ख़वास।।१२।।
दरशन कर अति कर मगनानी।
पाय गई धुर धाम निवास।।१३।।
प्रेम प्रताप छाय रहा घट में।
प्रेम स्वरूप किया हिरदे बास।।१४।।
यह गत मत है अगम अपारा।
पावे मेहर से कोइ निज दास।।१५।।
कर सतसंग गहे स्वामी सरना।
सुरत चढ़ावे निज आकाश।।१६।।
सुरत होय तब स्वामी प्यारी।
प्रेम की दौलत पावे ख़ास।।१७।।
राधास्वामी मेहर दृष्टि से हेरें।
प्रेम दुलार होय ख़ासुलख़ास।।१८।।
जो अस दुर्लभ भक्ति कमावे।
जावे निज घर बिन परियास।।१९।।

सुरत निमानी मेरी स्वामी सँवारी।
गावत उन गुन स्वाँसो स्वाँस।।२०।।
प्रेम दुलारी शब्द पियारी।
होय निहाल बैठी चरनन पास।।२१।।
दयाल सरन ले काज बनाया।
तज दिया जग का मोह और आस।।२२।।
प्रेम अधार जियत सुर्त प्यारी।
जग से रहती सहज उदास।।२३।।
धूम हुई भक्ती की भारी।
करम भरम सब हो गये नाश।।२४।।
प्रेम अधारी सुरत सिरोमन।
आरत दीपक करती चास।।२५।।
सब सखियाँ मिल आरत गावें।
राधास्वामी चरनन धर विश्वास।।२६।।
दया करी राधास्वामी प्यारे।
घट घट कीन्हा प्रेम प्रकाश।।२७।।

।। शब्द १३।।

सुरतिया ध्याय रही।
गुरु रूप हिये धर प्यार।। १।।
शब्द सुनत हरखत नित घट में।
परखत मेहर अपार।। २।।

मगन होय नित गुरु गुन गावत।
हिये से करत पुकार।। ३ ।।
वाह वाह मेरे गुरू दयाला।
वाह वाह मेरे पिता दयार।। ४ ।।
वाह वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।
वाह वाह मेरे सत करतार।। ५ ।।
जस जस मेहर करी मेरे ऊपर।
कस कस गाऊँ तुम गुन सार।। ६ ।।
कहत कहत मोसे कहत न आवे।
नित नित रहूँ मैं शुकर गुज़ार।। ७ ।।
लिपट रहूँ चरनन में हित से।
कभी न छोड़ूँ अमृत धार।। ८ ।।
चित्त रहे चरनन लौलीना।
काल करम बैठे सब हार।। ९ ।।
मैं अति दीन हीन और निरबल।
जियत रहूँ राधास्वामी अधार।। १० ।।
केल करूँ नित उनके संगा।
राधास्वामी बल ले रहूँ हुशियार।। ११ ।।
मैं बालक उन सरन अधारा।
राधास्वामी किया मेरा निज उपकार।। १२ ।।

आपहि खैंच लिया सतसँग में।
आप दिखाया निज दीदार।।१३।।
राधास्वामी महिमा कहत न आवे।
राधास्वामी राधास्वामी कहूँ हर बार।।१४।।
चरन अमी रस पियत रहूँ नित।
राधास्वामी प्रेम रहूँ सरशार।।१५।।

।। शब्द १४ ।।

सुरतिया सोच करत।
कस जाऊँ भौ के पार।। १ ।।
भजन ध्यान मो से बन नहिं आवे।
काल करम बरियार।। २ ।।
मन मलीन गुरु कहन न माने।
छोड़त नहीं विकार।। ३ ।।
जगत आस में रहे बँधाना।
और भरम रहा भोगन लार।। ४ ।।
चिन्ता में रहे अधिक भुलाना।
गुरु का बचन न माने सार।। ५ ।।
जग कारज नित प्रति सतावें।
चिन्ता संग रहे बीमार।। ६ ।।
गुरु दयाल नित कहत पुकारी।
घट में ले उपदेश सम्हार।। ७ ।।

यह मन चंचल बूझ न लावे।
जग में भरमे जुगत बिसार।।८।।
मुझ निरबल की पेश न जावे।
मेहर करो हे गुरू दयार।।९।।
ऐसी दया करो मेरे दाता।
चरनन में रहूँ नित हुशियार।।१०।।
ध्यान धरत मोहिं मिले अनंदा।
शब्द सुनत मन होय सरशार।।११।।
काल बिघन सब दूर हटाओ।
मेहर से मुझ को लेओ सम्हार।।१२।।
चरन सरन हिये दृढ़ कर धारूँ।
रहूँ दया का भरोसा धार।।१३।।
गुरु दयाल सब काज सँवारें।
बिरथा चिन्ता देउँ बिसार।।१४।।
जो कुछ होय मौज से गुरु के।
ता में परखूँ दया विचार।।१५।।
भक्ती रीत सम्हारूँ निस दिन।
प्रेम की दौलत पाऊँ अपार।।१६।।
दर्शन की रहूँ उमँग जगाई।
सेवा करूँ हिये धर प्यार।।१७।।

परमारथ का भाग बढ़ाऊँ।
गाऊँ गुरु गुन बारम्बार।।१८।।
सुरत रहे चरनन में लागी।
घट में निरखूँ बिमल बहार।।१९।।
अपना कर मोहिं लेव सम्हारी।
मन के देओ विकार निकार।।२०।।
काल करम से खूँट छुड़ाओ।
निरमल कर लेओ गोद बिठार।।२१।।
यह अरज़ी मानो अब मेरी।
राधास्वामी प्यारे सत करतार।।२२।।

।। शब्द १५ ।।

सुरतिया उमँग भरी।
होली खेलत आज नई।।१।।
जग का मैला रंग निकारत।
निरमल धार बही।।२।।
हिये में निस दिन प्रीत बसावत।
जग का मोह बिसार दई।।३।।
प्रेम रंग ले खेलत गुरु से।
अचरज होली आज सही।।४।।
सुरत रँगीली चढ़त अधर में।
गगना ओर गई।।५।।

गुरु स्वरूप का दर्शन कर के।
उमँग उमँग अब चरन पई।। ६ ।।
राधास्वामी दया निरख कर।
हिये में मगन भई।। ७ ।।

।। शब्द १६ ।।

सुरतिया मगन हुई।
घट शब्द का आनँद पाय।। १ ।।
तन मन से गुरु सेवा करती।
हिये में उमँग जगाय।। २ ।।
सतसँग बचन चित्त से सुनती।
मनन करत मन को समझाय।। ३ ।।
करनी की अभिलाखा भारी।
सुरत सम्हार शब्द सँग धाय।। ४ ।।
मन को मोड़त तन को तोड़त।
अमृत रस घट पियत अघाय।। ५ ।।
जब तब माया देत झकोले।
गुरु का बल ले ताहि हटाय।। ६ ।।
राधास्वामी दया परख कर घट में।
सहज सहज जिव काज बनाय।। ७ ।।

।। शब्द १७ ।।

पिरेमी सुरत रँगीली आय।
दिया सतसँग में प्रेम जगाय।। १ ।।
दरस गुरु पाय मगन होती।
बचन सुन मल हिये से धोती।। २ ।।
बढ़ावत सतसँगियन से प्रीत।
पकावत हिये में गुरु परतीत।। ३ ।।
हरखती निरखत गुरु सजना।
फड़कती गावत गुरु बचना।।४ ।।
गुरू की सोभा निरख निहार।
मगन होय डारत तन मन वार।। ५ ।।
भाव नित नया नया दिखलाती।
गुरू की छबि पर बल जाती।। ६ ।।
लगा अब रूखा जग व्यवहार।
मिला परमारथ सार का सार।। ७ ।।
प्रेम का किनका गुरु दीना।
सुरत रहे चरनन लौ लीना।। ८ ।।
विनय करूँ राधास्वामी चरनन में।
प्रीत रहे बाढ़त दिन दिन में।। ९ ।।
मिले नित घट में रस आनंद।
कटें सब काल करम के फंद।। १० ।।

सुरत रहे चरनन में लागी।
रहे मन निस दिन अनुरागी।।११।।
हुए परसन राधास्वामी दयाल।
मेहर से कीन्हा मोहिं निहाल।।१२।।
उमँग कर आरत सामाँ लाय।
धरे सब गुरु के सन्मुख आय।।१३।।
चमक और दमक के बस्तर लाय।
मगन होय गुरु को दिये पहिनाय।।१४।।
निरख छबि हरख हुआ भारी।
दया पर छिन छिन बलिहारी।।१५।।
आरती गाई उमँग उमंग।
सुरत मन रँगे प्रेम के रंग।।१६।।
हंस सब जुड़ मिल नाच रहे।
मधुर धुन बाजे बाज रहे।।१७।।
हुई सतसँग में भारी धूम।
नाच रहे सब मिल झूम और घूम।।१८।।
प्रेम की वरषा चहुँ दिय होय।
सुरत रही सब की चरन समोय।।१९।।
सुद्ध बुध देह बिसार रहे।
गुरू पर तन मन वार रहे।।२०।।

सुरत मन उमँग अधर चढ़ते।
गगन में गुरु दर्शन करते।।२१।।
अजब यह औसर आया हाथ।
सुरत मन नाचत गुरु के साथ।।२२।।
सुन्न और महासुन्न के पार।
सुरत गई सत्तपुरुष दरबार।।२३।।
अलख और अगम के पार ठिकान।
चरन राधास्वामी परसे आन।।२४।।
दया राधास्वामी की भारी।
हुए सब प्रेमी सुखियारी।।२५।।

।। शब्द १८ ।।

पिरेमन लाई आरती साज।
दिया गुरु भक्ति भाव का दाज।। १ ।।
प्रीत हिये अंतर जाग रही।
सुरत घट धुन सँग लाग रही।। २ ।।
काल ने दीन्हा बहु झकझोर।
मेहर हुई कट गया उसका ज़ोर।। ३ ।।
दया से करती नित सतसंग।
बचन सुन बाढ़त चित्त उमंग।। ४ ।।
जगत का देखा झूठा खेल।
करूँ अब प्रेमी जन से मेल।। ५ ।।

जगत जिव स्वारथ के बंदे।
फँसे सब काल करम फंदे।। ६ ।।
सुद्ध परमारथ की नहिं लाय।
संत का बचन न चित ठहराय।। ७ ।।
करें गुरु निंदा दिन और रात।
पिरेमी जन से करें उतपात।। ८ ।।
संग उन चित से नहिं चाहूँ।
बचन उन नेक न मन लाऊँ।। ९ ।।
करूँ गुरु भक्ति उमँग उमंग।
प्रेम का धारूँ हिरदे रंग।।१० ।।
करें प्यारे राधास्वामी मेरी सहाय।
काल के विघन से लेहिं बचाय।।११ ।।
प्रीत चरनन की नित्त बढ़ाय।
सुरत मन देवें अधर चढ़ाय।।१२ ।।
सहसदल लखे जोत उजियार।
संख और घंटा संग पियार।।१३ ।।
गगन चढ़ सुने गरज मिरदंग।
सुन्न में बाजे धुन सारंग।।१४ ।।
भँवर चढ़ पहुँची सतपुर धाय।
पुरुष का दर्शन अद्भुत पाय।।१५ ।।

परे चढ़ निरखा राधास्वामी धाम।
वही है अकह अपार अनाम।।१६ ।।
मेहर बिन कस पावे यह ठाम।
दया बिन मिले नहीं निज नाम।।१७।।
दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय।
मेहर से लीन्हा मोहिं अपनाय।।१८ ।।
चरन में राधास्वामी खेलूँ नित्त।
धार रहूँ राधास्वामी बल निज चित्त।।१९ ।।

।। शब्द १९ ।।

विरहनी सुरत हिये धर प्यार।
उमँग कर आई गुरु दरबार।।१ ।।
नेम से दरशन करती नित्त।
चरन में धरती हित कर चित्त।।२ ।।
रहे यह चिन्ता चित्त समान।
जीव का होवे कस कल्यान।।३ ।।
करत नित प्रति अभ्यास सम्हार।
सुधारत मन को इच्छा मार।।४।।
भोग जग चित से देत बिसार।
बचन गुरु सुन सुन करत विचार।।५ ।।
तजत छिन छिन मन माया देश।
शब्द में करत सुरत परवेश।।६ ।।

संख और घंटा धुन सुनती।
सुरत मन खैंच अधर धरती।। ७ ।।
सूर लख चंद्र का दर्शन पाय।
गुफा चढ़ सोहंग शब्द सुनाय।। ८ ।।
पुरुष का दर्शन सतपुर कीन।
सुनी वहँ मधुर मधुर धुन बीन।। ९ ।।
परे तिस राधास्वामी दर्शन पाय।
लिया मोहिं अपने चरन लगाय।। १० ।।
आरती चरनन में धारी।
मेहर मोपै राधास्वामी की भारी।। ११ ।।
काज मेरा सब विधि पूरा कीन।
सुरत हुई राधास्वामी चरनन लीन।। १२ ।।

।। शब्द २० ।।

गुरू की धर हिये में परतीत।
बढ़ावत दिन दिन चरनन प्रीत।। १ ।।
ध्यान धर मन होवत निश्चल।
भजन कर चित होवत निर्मल।। २ ।।
सरन गह करम होत निष्फल।
बचन सुन दूर भरम कलमल।। ३ ।।
जगत का देख तमाशा आय।
भोग जग आसा गई बिलाय।। ४ ।।

धरत मन दर्शन की आसा।
चहत मन चरनन में बासा।। ५ ।।
शब्द का मारग जाना सार।
नेम से करत अभ्यास सम्हार।। ६ ।।
मेहर गुरु माँग रहा निस दिन।
सुरत मन घट में करें दर्शन।। ७ ।।
सिमट कर चढ़ें गगन की ओर।
सुनें धुन घंटा और घनघोर।। ८ ।।
परे जाय सुन में निरख बिलास।
अधर चढ़ करें भँवर गढ़ बास।। ९ ।।
परे लख सत्त पुरुष का नूर।
अलख और अगम का पाय सरूर।। १० ।।
अचल घर राधास्वामी चरन रली।
मेहर हुई पिया से जाय मिली।। ११ ।।

।। शब्द २१।।

प्रेम गुरु रहा हिये में छाय।
सुरत अब नई नई उमँग जगाय।। १ ।।
चहत नित सतगुरु का सतसंग।
सुरत मन भींज रहे गुरु रंग।। २ ।।
बचन सुन होत मगन मन सूर।
करम और भरम हुए सब दूर।। ३ ।।

निरखती मन इंद्री की चाल।
करन चहे दूतन को पामाल।।४।।
निरख कर धारत गुरु का ढंग।
परख कर झाड़त माया रंग।।५।।
जगत का परखत फीका रंग।
समझ कर त्यागत सबहि कुसंग।।६।।
चरन गुरु हर दम याद बढ़ाय।
रूप गुरु रखती हिये बसाय।।७।।
काल रहा डारत बिघन अनेक।
काट रहि धर सतगुरु की टेक।।८।।
गढ़त मेरी राधास्वामी करते आप।
दया का अपने धर कर हाथ।।९।।
पिता प्यारे राधास्वामी दीन दयाल।
अनेक विधि कर रहे मेरी सम्हाल।।१०।।
गाऊँ क्या महिमा उन की सार।
दई मोहिं चरन सरन कर प्यार।।११।।
बिना राधास्वामी और न कोय।
लेय जो मन मलीन को धोय।।१२।।
अबल मैं कस उन गुन गाऊँ।
चरन पर नित बल बल जाऊँ।।१३।।

भरोसा मेहर का हियरे धार।
जिऊँ मैं राधास्वामी नाम अधार।।१४।।
तड़प दर्शन की उठत हर बार।
विवश मैं बैठ रहूँ मन मार।।१५।।
चरन गहि अंतर में धाऊँ।
दरस राधास्वामी वहँ पाऊँ।।१६।।
करो प्यारे राधास्वामी ऐसी मेहर।
सुरत मन चरनन में रहें ठहर।।१७।।
पाऊँ रस घट में नित्त नवीन।
केल करूँ धुन सँग जस जल मीन।।१८।।
गाऊँ नित आरत प्रेम भरी।
सुरत रहे राधास्वामी चरन अड़ी।।१९।।
करो प्यारे राधास्वामी मेहर बनाय।
लेओ सब जीवन चरन लगाय।।२०।।
करें तुम आरत धर कर प्यार।
गायें नित राधास्वामी नाम दयार।।२१।।

।। शब्द २२।।

करूँ गुरु सतसँग नित्त अली।
खटक परमारथ चित्त खली।।१।।
कुटुँब सँग करूँ सतसंग सम्हार।
शब्द का मन में धारूँ प्यार।।२।।

जगत का भय और भाव तियाग।
करूँ भोगन से अब बैराग।। ३ ।।
चरन में राधास्वामी धर अनुराग।
सुरत मन दोऊ उठे अब जाग।। ४ ।।
शब्द धुन सुन सुन होत मगन।
कहत राधास्वामी सतगुरु धन धन।। ५ ।।
विरह दरशन की जाग रही।
जगत से छिन छिन भाग रही।। ६ ।।
काल ने डाले विघन अनेक।
काट दिये गह सतगुरु की टेक।। ७ ।।
उमँग सेवा की हिये बसाय।
करूँ मैं जब तब औसर पाय।। ८ ।।
गुरू से माँगूँ प्रेम की दात।
दया का चाहूँ सिर पर हाथ।। ९ ।।
दीनता साँची मन में लाय।
रहूँ नित गुरु की भक्ति कमाय।। १० ।।
पिरेमी जन से नाता जोड़।
रहूँ जग जीवन से मुख मोड़।। ११ ।।
उमँग कर आरत गाऊँ नित्त।
सरन राधास्वामी धारूँ चित्त।। १२ ।।

।। शब्द २३ ।।

प्रेम की महिमा क्या गाई।
हिये में सीतलता छाई।। १ ।।
प्रेम जिस घट में किया परकास।
गया तम हुआ शब्द उजियास।। २ ।।
पिरीतम हिरदे में बसिया।
सुरत मन चरन लाग रसिया।। ३ ।।
प्रेम राधास्वामी चरनन लाय।
हिये में निस दिन आनँद पाय।। ४ ।।
प्रीत गुरु चरनन आन धरी।
सुरत घट धुन सँग गगन भरी।। ५ ।।
लगा वाहि गुरु सतसँग प्यारा।
हुआ मन जग से अब न्यारा।। ६ ।।
बचन सुन जग उगलत मनुवाँ।
चढ़त नित घट में गह धुनुवाँ।। ७ ।।
सुनत सतसँग की महिमा सार।
सुरत आई उमगत गुरु दरबार।। ८ ।।
प्रीत हिये भर भर करती सेव।
धरत परतीत चरन गुरु देव।। ९ ।।
सुनत गुरु बचन धार अनुराग।
भोग जग देती मन से त्याग।। १० ।।

करत नित भजन विरह अँग लाय।
शब्द सँग सूरत नित रस पाय।।११।।
दया गुरु घट में परख रही।
चाल मन इंद्री निरख रही।।१२।।
रूप गुरु हिये में ध्याय रही।
सरन गुरु मन में पकाय रही।।१३।।
पाय घट आनँद चरन बिलास।
चरन गुरु बढ़ता नित विश्वास।।१४।।
उमँग अँग आरत गुरु धारी।
हुए अब तन मन सुखियारी।।१५।।
मेहर की दृष्टि करी गुरु ने।
सुरत मन लागे घट चढ़ने।।१६।।
तोड़ तिल गई सुरत नभ माहिं।
जोत लख मिटी काल की दायँ।।१७।।
गगन चढ़ शब्द गुरू दर्शन।
मिले और वारा तन मन धन।।१८।।
सुन्न में चढ़ गई सुरत अकेल।
करत वहँ हंसन सँग अब केल।।१९।।
भँवर में गई महासुन पार।
सुनी धुन सोहं मुरली सार।।२०।।

सत्तपुर दर्शन सतपुर्ष पाय।
बीन धुन सुनत रही हरखाय।।२१।।
वहाँ से अलख के पार गई।
अगम लख राधास्वामी चरन पई।।२२।।
वहीं है राधास्वामी का निज धाम।
परम गुरु संतन का विश्राम।।२३।।
मिला वहाँ अद्भुत भक्ती साज।
सुरत का हो गया पूरा काज।।२४।।
दया गुरु मिला निज घर येही।
शब्द में सूरत जब देई।।२५।।
करी यहँ आरत राधास्वामी जोर।
सुरत हुई प्रेम रंग सरबोर।।२६।।
परम पुर्ष राधास्वामी हुए सहाय।
लिया मोहिं अपनी गोद बिठाय।।२७।।

।। शब्द २४ ।।

प्रेम की दौलत अपर अपार।
प्रेम से मिलता सिरजनहार।।१।।
प्रेम बिना सब झूठा ध्यान।
प्रेम बिना सब थोथा ज्ञान।।२।।
प्रेम बिना सब बानी रीती।
प्रेम से काल करम को जीती।।३।।

प्रेम से मन माया बस आये।
प्रेम से सूरत अधर चढ़ाये।।४।।
प्रेम निकारे सबहि विकार।
प्रेम से होवे जग से न्यार।।५।।
प्रेम से दीखे घट में नूर।
प्रेम रहा घट घट भरपूर।।६।।
प्रेम की महिमा सब से भारी।
प्रेम बिना सब पच पच हारी।।७।।
प्रेम बिना सब थोथी कार।
प्रेम से उतरे भौजल पार।।८।।
प्रेम की बख़्शिश दें राधास्वामी।
प्रेम की बख़्शिश दें राधास्वामी।।९।।

।। शब्द २५ ।।

राधास्वामी दाता दीन दयाला।
दास दासी को लेव सम्हाला।।१।।
बहु दिन जग में भटका खाया।
मेहर हुई अब चरन लगाया।।२।।
दया करी तुम दोउ पर भारी।
विरह अगिन चिनगी हिये डारी।।३।।
किरपा कर उसको सुलगाओ।
बुझने न पावे अस मेहर कराओ।।४।।

माया घर सब फूँक जलाओ।
मन को निकालो अधर चढ़ाओ।।५।।
सुरत पड़ी जो इसके बस में।
ताहि पहुँचाओ द्वारे दस में।।६।।
हंस हंसनी सँग करे बिलासा।
देखे अचरज बिमल तमाशा।।७।।
यह मन कच्चा बूझ न लावे।
कभी सीधा कभी उलटा धावे।।८।।
भोगन की जब तरँग उठावे।
सतसँग बचन वहीं बिसरावे।।९।।
अनेक ख़्याल में रहे भरमाई।
अनेक काज की चिन्ता लाई।।१०।।
विरह प्रेम तब जाय छिपाई।
जग कारज का रूप धराई।।११।।
भजन ध्यान में रूखा फीका।
घट में रस नहिं पावत नेका।।१२।।
अस हालत जब मन की होई।
बेकली और घबराहट दोई।।१३।।
बाढ़ें चित में चैन न आवे।
तड़प तड़प जिया बहु घबरावे।।१४।।

अस अस भय मन माहिं समाई।
दया मेहर क्या खिंच गई भाई।।१५।।
फिर जब जग कारज हुआ पूरा।
झलके प्रेम बिघन हुआ दूरा।।१६।।
गुरु चरनन में प्रीत जगानी।
राधास्वामी दया सत्त कर मानी।।१७।।
ऐसे झकोले आवें जावें।
कभी सूखा कभी प्रेम दिखावें।।१८।।
इस विधि मन शान्ती नहिं लावे।
डिगमिग डिगमिग झोके खावे।।१९।।
गहरी दया करो मेरे प्यारे।
प्रेम के खोल देओ भंडारे।।२०।।
निस दिन रहूँ चरन लौलीना।
केल करूँ जस जल सँग मीना।।२१।।
जग कारज मोहिं अब न सतावें।
चिन्ता डर मोहिं नहिं भरमावें।।२२।।
प्रेम धार रहे हरदम जारी।
धुन सँग सुरत की लागे ताड़ी।।२३।।
जब चाहूँ तब रस लेउँ भारी।
अमी धार सँग भींजूं सारी।।२४।।

ऐसी मेहर करो स्वामी प्यारे।
शब्दारस घट पाउँ सदा रे।।२५।।
चरन बिना नहिं और अधारे।
हरख हरख गुन गाउँ तुम्हारे।।२६।।
जो यह झकोले मौज से आवें।
विरह जगा नशा हज़म करावें।।२७।।
तो चरनन में दृढ़ विश्वासा।
देओ छुड़ाय काल घर बासा।।२८।।
झीनी याद प्रेम सँग मन में।
बनी रहे नहिं भूले छिन में।।२९।।
राधास्वामी २ नित नित गाऊँ।
चरन सरन पर बल बल जाऊँ।।३०।।

।। शब्द २६ ।।

राधास्वामी सत मत जिसने धारा।
सहज हुआ उन जीव उधारा।।१।।
राधास्वामी चरन सरन सत धारी।
वही जीव उतरे भौ पारी।।२।।
सुरत शब्द की जो करे करनी।
वही जीव भौसागर तरनी।।३।।
प्रीत प्रतीत चरन में लावे।
राधास्वामी दया सोई जिव पावे।।४।।

सतगुरु से जो प्रेम लगावे।
राधास्वामी चरनन जाय समावे।। ५ ।।
गुरु की प्रीत तुड़ावे बंधन।
सहजहि वारे तन मन और धन।। ६ ।।
जग का मोह सहज में छूटे।
तन मन बंधन बहु विधि टूटे।। ७ ।।
विरह अंग ले करे अभ्यासा।
प्रेम पंख ले उड़े अकाशा।। ८ ।।
गुरु स्वरूप का धर कर ध्याना।
ताके घट में बिमल निशाना।। ९ ।।
प्रीत सहित जो करे यह करनी।
सुरत निरत निज पद में धरनी।। १० ।।
माया विघन न लागे कोई।
शब्द रूप में सुरत समोई।। ११ ।।
निस दिन घट में आनँद पावे।
राधास्वामी की महिमा गावे।। १२ ।।
मेहर दया का धार भरोसा।
चित को अपने छिन छिन पोसा।। १३ ।।
भोग बासना मन से टारे।
मगन रहे चरनन आधारे।। १४ ।।

मौज गुरू की सदा निहारे।
रज़ा गुरू की सदा सम्हारे।।१५।।
सतगुरु रक्षक तन मन प्रान।
सतगुरु देवें भक्ती दान।।१६।।
बिना मौज गुरु कुछ नहिं होवे।
मौज आसरे निरभय सोवे।।१७।।
जिस को हुइ अस गुरु परतीती।
सोइ जन काल करम को जीती।।१८।।
जब कभी मन और चित घबरावे।
घट में चरन ओर को धावे।।१९।।
और प्रार्थना करे घनेरी।
देओ सहारा काटो बेड़ी।।२०।।
बहु विधि करम किये मन साथा।
सो सतगुरु काटें दे हाथा।।२१।।
कोइ दिन करम भोग हट जावें।
मेहर करें जल्दी भुगतावें।।२२।।
जब गुरु में हुआ गहरा प्यार।
शब्द भेद तब मिलिया सार।।२३।।
मन और सुरत चढ़ें ऊँचे को।
उलट न देखें फिर नीचे को।।२४।।

राधास्वामी चरनन बढ़े पिरीती।
धारे मन में दृढ़ परतीती।।२५।।
सतसंगी सब प्यारे लागें।
गहरी प्रीत परस्पर पालें।।२६।।
दया भाव जीवन में आवे।
सुरत अंस घट घट नज़र आवे।।२७।।
सहज विरोध अंग छुट जावे।
हसद ईर्षा नहिं सतावे।।२८।।
मन में रहे कोई नहिं इच्छा।
यही आस मालिक मिले सच्चा।।२९।।
यही आस बढ़े दिन दिन मन में।
मालिक का दर्शन मिले तन में।।३०।।
काम क्रोध अस दूर बहावे।
राधास्वामी चरन सरन लिपटावे।।३१।।
भरम और कपट होयँ अस दूर।
घट घट दीखे सत का नूर।।३२।।
जागत रहे उमंग नवेली।
प्रेम रंग रहे सुरत रँगीली।।३३।।
दीन ग़रीबी मन में धारे।
प्रीत अंग घट में बिस्तारे।।३४।।

सब जीवन सँग धरे पियारा।
यह भी लागे सब को प्यारा।।३५।।
बाल दशा होय जग में बरते।
मन में अकड़ पकड़ नहिं धरते।।३६।।
होय निःकरम सबन से न्यारा।
राधास्वामी बिन नहिं और सहारा।।३७।।
संशय भरम न राखे कोई।
मन में कभी निरास न होई।।३८।।
दृढ़ विश्वास चरन में धारे।
मुक्ति आपनी होत निहारे।।३९।।
गुरु दयाल भौ पार उतारें।
कुल कुटुम्ब को भी ले तारें।।४०।।
क्या महिमा गुरु भक्ती गाऊँ।
गुरु की दया अपार सुनाऊँ।।४१।।
निर्मल भक्ति करे सोइ सूरा।
काज करें वा का गुरु पूरा।।४२।।
ता से बार बार कहुँ बचना।
गुरु भक्ती सम और न जतना।।४३।।
या ते सब कारज होयँ पूरे।
करम काट पहुँचे घर मूरे।।४४।।

गृहस्थ होय चहे हो बैरागी।
गुरु चरनन में जो लौ लागी।।४५।।
पुरुष होय चहे स्त्री होई।
गुरु के संग प्रीत करे सोई।।४६।।
सतगुरु वा का करें उधारा।
मेहर दया से लेहिं सुधारा।।४७।।
सब जीवों को चहिए ऐसी।
गुरु सँग प्रीत करें जैसी तैसी।।४८।।
तो उनका भी कारज सरई।
भौसागर वे इक दिन तरई।।४९।।
जग में जम का ज़ोर घनेरा।
जीव करें चौरासी फेरा।।५०।।
कोई जीव बचने नहिं पावें।
सतगुरु बिन सब भटका खावें।।५१।।
बड़भागी जाय सतगुरु भेंटे।
चरन भेद दे घट में खैंचे।।५२।।
सुरत शब्द का भेद सुनावें।
ध्यान भजन की जुगत लखावें।।५३।।
सहस दल कँवल जोत दरसावें।
अनहद घंटा संख सुनावें।।५४।।

बंकनाल धस त्रिकुटी तीर।
सुरत चढ़ी मिला पद गंभीर।।५५।।
लाल सूर जहँ गुरु का रूपा।
ओंकार पद त्रिकुटी भूपा।।५६।।
सुन में लखा चंद्र अस्थान।
अक्षर पुरुष रकार निशान।।५७।।
किंगरी बाजे और सारंग।
छोड़े नीचे गरज मृदंग।।५८।।
महासुन्न होय गई गुफा में।
सोहं धुन सुनी सुरत सफ़ा में।।५९।।
सत्तलोक का द्वारा सोई।
आगे चढ़ सुर्त शब्द समोई।।६०।।
सत्तलोक सतपुर्ष निवास।
हंस करें जहँ सदा बिलास।।६१।।
आगे अलख पुरुष दरबारा।
तिस परे अगम लोग इक न्यारा।।६२।।
तिस के परे लखा धुर धाम।
अकह अपार अगाध अनाम।।६३।।
हैरत रूप अथाह दवाम[1]।
राधास्वामी का जहाँ विश्राम।।६४।।

१- सदा

हरख हरख सुर्त अति मगनानी।
रा धा स्वा मी चरन समानी।।६५।।

।। शब्द २७ ।।

उठत मेरे मन में नित्त उचंग।
रहूँ नित गुरु के संग निसंक।। १ ।।
प्रेम का किनका बख़्शिश देव।
सर्व अँग मोहिं अपना कर लेव।। २ ।।
निकारो मन के सबहि विकार।
चुवाओ घट में अमृत धार।। ३ ।।
बिना तुम मेहर रहूँ कंगाल।
प्रेम की दीजे दात दयाल।। ४ ।।
धरो नहिं औगुन चित्त दयाल।
दया कर कीजे आज निहाल।। ५ ।।
सरन में तुम्हरे जब आया।
सुरत और शब्द भेद पाया।। ६ ।।
काल से नाता टूट गया।
करम का लेखा छूट गया।। ७ ।।
मौज से तुम्हरे होय सो होय।
दूसरा करन हार नहिं कोय।। ८ ।।
विनय सुनो राधास्वामी गुरु प्यारे।
देओ मोहिं चरनन आधारे।। ९ ।।

प्रेम रँग भींज रहे मन मोर।
सुरत चढ़े पकड़ शब्द की डोर।।१०।।
लेउँ नित घट में रस आनंद।
फसूँ नहिं कब ही माया फंद।।११।।
अर्ज़ यह राधास्वामी करो मंज़ूर।
रखो मोहिं हाज़िर चरन हुज़ूर।।१२।।

।। शब्द २८ ।।

सुरत पियारी शब्द अधारी।
करत आज सतसंग।।१।।
विरह अंग ले सनमुख आई।
चित में धार उमंग।।२।।
जगत भोग से कर बैरागा।
तज दिया माया रंग।।३।।
रहत उदास चित्त में निस दिन।
क्योंकर छुटे कुसंग।।४।।
विघन अनेक डालता काला।
माया करती कारज भंग।।५।।
भजन ध्यान कुछ बन नहिं आवत।
मनुआँ रहता तंग।।६।।
दया करो गुरु लेओ सम्हारी।
मोड़ो या का अंग।।७।।

चरन सरन गुरु दृढ़ कर धारे।
घट में होय असंग।। ८ ।।
शब्द माहिं नित रहे लौलीना।
सुरत चढ़े मेरी जैसे पतंग।। ९ ।।
ऐसी दया करो मेरे प्यारे।
भक्ति करूँ मैं होय निसंक।। १० ।।
राधास्वामी चरनन बासा पाऊँ।
माया के उतरें सबहि कुरंग।। ११ ।।

।। शब्द २९ ।।

सुरत रँगीली सतगुरु प्यारी।
लाइ आरती धार।। टेक ।।
उमँग उमँग कर सेवा करती।
धर गुरु चरनन प्यार।। १ ।।
दर्शन करत फूलती तन में।
चरनन पर जाती बलिहार।। २ ।।
सतसँग सतगुरु प्यारे लागे।
बचन सुनत हुशियार।। ३ ।।
सतसँगियन से हेल मेल कर।
देखत बिमल बहार।। ४ ।।
सुरत शब्द का ले उपदेशा।
करत अभ्यास सम्हार।। ५ ।।

सुन सुन धुन मोहित हुई मन में।
निरखत घट उजियार।। ६ ।।
राधास्वामी दया करी अब।
लीन्हा गोद बिठार।। ७ ।।

।। शब्द ३० ।।

सुरत प्यारी गुरु सनमुख आई।
आरती प्रेम सहित गाई।। १ ।।
करत सतसँगियन सँग प्रीती।
धार गुरु चरनन परतीती।। २ ।।
नित्त गुरु सतसँग में रहे जाग।
बढ़ावत परमारथ का भाग।। ३ ।।
समझ सतसँग को निज सुख रास।
कुटुँब सँग चहत चरन में बास।।४ ।।
गुरू को छिन छिन कर परसन्न।
चरन पर वारत तन मन धन।। ५ ।।
दीन दिल करत गुरू की सेव।
निमाना माँगत दया गुरु देव।। ६ ।।
बाल को जस पित मात प्रिये।
धरत अस राधास्वामी सरन हिये।। ७ ।।
चरन में खेलूँ धर विश्वास।
करें राधास्वामी पूरन आस।। ८ ।।

मेहर से देओ पिता प्यारे संग।
करूँ तुम भक्ती उमँग उमंग।।९।।
होयँ सब विधि मेरे कारज पूर।
रहूँ मैं राधास्वामी चरन हुज़ूर।।१०।।

।। शब्द ३१।।

भाग भरी सुर्त सतसँग करती।
गुरु चरनन लिपटाय।।१।।
दर्शन करती दृष्टि जोड़ कर।
घट में प्रेम बढ़ाय।।२।।
हिये में छिन छिन विरह जगाती।
नैनन जल भर लाय।।३।।
सतसँगियन से हेल मेल कर।
नित नई प्रीत जगाय।।४।।
जगत भोग से होय उदासा।
परमारथ में लगन लगाय।।५।।
दीन अधीन करत नित सेवा।
चित में भाव बसाय।।६।।
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर।
दया भरोसा लाय।।७।।

।। शब्द ३२ ।।

झूलत घट में सुरत हिंडोला।
बाजत अनहद शब्द अमोला।। १ ।।
धुन की डोरी लगी अधर में।
सुरत निरत रहि झाँक उधर में।। २ ।।
सखी सहेली सब सँग आईं।
गगन मँडल में उमँग समाईं।। ३ ।।
अमी धार बरसत चहुँ ओरी।
हरख हरख भींजत सुर्त गोरी।।४ ।।
हंस हंसिनी जुड़ मिल आये।
राग रागिनी नइ नइ गाये।। ५ ।।
देख नवीन बिलास मगन मन।
ऊपर चढ़े सुन अधर शब्द धुन।। ६ ।।
शब्द हिंडोल बना सतपुर में।
राधास्वामी झूलत जहाँ अधर में।। ७ ।।
हंसन के जहँ झुण्ड सुहाये।
अचरज शोभा कही न जाये।। ८ ।।
जुड़ मिल दर्शन राधास्वामी करते।
प्रीतम प्यारे के चरनन पड़ते।। ९ ।।
प्रेम सहित सब आरत गावें।
छिन छिन राधास्वामी पुरुष रिझावें।। १० ।।

* * * * *

।। शब्द ३३ ।।

होली खेले रँगीली नार।
सतगुरु से प्रेम लगाई।। टेक ।।
दीन अधीन रली सतसँग में।
घट अनुराग जगाई।।
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन में।
दिन दिन भक्ति सवाई।।
मेहर से काल की अटक तुड़ाई।। १ ।।
प्रेम रंग घट भर भर लाई।
उमंग उमंग गुरु पै छिड़काई।।
सतसंगिन सतसंगी भाई।
सब पै रंग अधिक बरसाई।।
भींज भींज सब अति हरखाई।। २ ।।
अबिर गुलाल चहुँ देश उड़ाना।
लाल सेत आकाश दिखाना।।
सब के मुख झलकत अब नूरा।
बाजत घट घट अनहद तूरा।।
समा बँधा कुछ कहा न जाई।। ३ ।।
ऐसा अचरज फाग रचाई।
जग बिच भारी धूम मचाई।।

मन माया की धूल उड़ाई।
काल करम दोउ गये ठगाई।।
ऐसी दया राधास्वामी कराई।। ४ ।।
भक्ती रीत हुई अब जारी।
प्रेम की घट घट वरषा भारी।।
मोह और काम रहे सब हारी।
जीवन का सहज होत उधारी।।
जग में फिरी राधास्वामी की दुहाई।। ५ ।।
राधास्वामी नाम हुआ जग परघट।
काल करम की मिट गई खटपट।।
मन के मते सब रह गये सटपट।
सुरत शब्द कारज करे झटपट।।
राधास्वामी २ सब मिल गाई।। ६ ।।
जीव रहे जग सबहि दुखारी।
मेहर से सब अब हुए सुखारी।।
राधास्वामी ऐसी दया विचारी।
मन माया दोउ बाज़ी हारी।।
राधास्वामी सब को पार लगाई।। ७ ।।

।। शब्द ३४ ।।

आग लगी संसार में।
सब कोई तपन सहे।।

जो माने गुरु बचन को।
ऊँचे देश चढ़े।। १ ।।
चढ़े जो ऊँचे देश को।
करम भरम सब त्याग।।
शब्द सुने निज भवन में।
चरनन में रहे लाग।।२।।
शब्द शब्द पौड़ी चढ़े।
निरखे जाय सत नूर।।
रा धा स्वा मी चरन के।
दरशन करे हुज़ूर।। ३ ।।
महा प्रेम आनंद का।
वहि है निज भंडार।।
जो पहुँचे वहाँ दया से।
उसी का होय उधार।। ४ ।।
और सकल परपंच है।
भौजल पार न जाय।।
चौरासी के घेर में।
फिर फिर भटका खाय।। ५ ।।
याते सब जिव समझ कर।
पकड़ो सतगुरु बाँह।।

जनम जनम नहिं सहोगे ।
काल करम की दाँह ।। ६ ।।
रा धा स्वा मी सरन लो ।
गाओ राधास्वामी नाम ।।
सुरत शब्द अभ्यास कर ।
चढ़ पहुँचो निज धाम ।। ७ ।।

।। शब्द ३५ ।।

यह देह मलीन और नाशमान।
जगत कलेश और दुख की खान।। १ ।।
और कहीं नहिं अमन अमान।
माया देश के पार चलान।। २ ।।
सुरत शब्द का गहो निशान।
राधास्वामी धाम बसान[१]।। ३ ।।

।। शब्द ३६ ।।

धन धन राधास्वामी गाय रहूँगी।
जग में शोर मचाय रहूँगी।।
गुरु गुरु नाम पुकार रहूँगी।। टेक ।।
वाह वाह मेरे राधास्वामी प्यारे।
वाह वाह रचना के अधारे।।

१- चरन समान

वाह वाह गुरु परम उदारे।
वाह वाह मेरे सत करतारे।।
चरन पकड़ आज लिपट रहूँगी।। १ ।।
दया करी मोहिं संग लगाया।
जग जंजाल से लीन छुड़ाया।।
बचन सुना सब भरम नसाया।
करम धरम से लीन बचाया।।
चरनन सेवा धार रहूँगी।। २ ।।
मेहर करी घट भेद सुनाया।
मन में मेरे प्रेम जगाया।।
रूप अनूप मेरे हिये बसाया।
जग का भय और भाव हटाया।।
बिमल बिमल गुन गाय रहूँगी।। ३ ।।

।। शब्द ३७ ।।

भूल भरम ग़फ़लत अब छोड़ो।
शब्द गुरू में सूरत जोड़ो।। १ ।।
मन का कहा न मानो कब ही।
यह भौजल में ग़ोते देही।। २ ।।
प्रेम प्रीत गुरु चरनन लाओ।
राधास्वामी चरन पकड़ घर जाओ।। ३ ।।

अबही चेतो समझो भाई।
धन और मान देओ बिसराई।। ४ ।।
फिर औसर अस मिले न भाई।
चौरासी में रहो भरमाई।
माया देश में भटका खाई।।५ ।।

।। शब्द ३८ ।।

मेरा भीज रहा मन प्रेम रंग।
अब चाहत निस दिन संत संग।। १ ।।
गुरु चरनन धावत नित उमंग।
कर दर्शन फूलत उमँग उमंग।। २ ।।
सुन बचन अमी रस नित पियंग।
सुर्त चढ़ती धुन सँग ज्यों पतंग।। ३ ।।
गुरु का बल हिरदे धर उतंग।
अब काल करम सँग करती जंग।। ४ ।।

।। शब्द ३९ ।।

पिरेमन सुरत आरती धार।
चरन गुरु आई कर सिंगार।। १ ।।
सील की ओढ़ चदरिया सार।
क्षमा की कुरती अंग सँवार।। २ ।।
घेर मन लहँगा दीन बनाय।
चित्त की चोली चमक सजाय।। ३ ।।

सरन गुरु हार हिये में डार।
सील की माला गले सँवार।। ४ ।।

।। बचन ४२ ।।

मुतफ़र्रिक़ टेकें व कड़ियाँ साखियाँ

(१)

राधास्वामी दाता दयाल हैं।
मेरे पित और मात।।
चरनन से लागी रहूँ।
तजूँ न उनका साथ।। १ ।।
राधास्वामी समरथ पुर्ष हैं।
और राधास्वामी सच करतार।।
राधास्वामी दीनदयाल हैं।
और राधास्वामी परम उदार।। २ ।।
वाह वाह राधास्वामी।
सुमिरो भाई राधास्वामी।। ३ ।।

(२)

मंसा बाचा कर्मना।
सब को सुख पहुँचाय।।

अपने मतलब कारने।
दुक्ख न दे तू काय।। १ ।।
जो सुख नहिं तू दे सके।
तो दुख काहू मत दे।।
ऐसी रहनी जो रहे।
सोई शब्द रस ले।। २ ।।

(३)

नाम रूप से प्यार कर।
लागे घट के माहिं।।
गुनना सबहि बिसार कर।
चित राखे पिव माहिं।।

(४)

बाहर की मत देख तू।
अंतर साईं राख।।
सतगुरु दीनदयाल हैं।
देहैं अचल सुहाग।।

(५)

चुपके चुपके बैठ कर।
करो नाम की याद।।

दया मेहर से पाइ हो।
तुम सतगुरु परशाद।।

(६)

बंधन ही से ऊपजें।
दुख सुख और त्रिय ताप।।
बंधन ही से सहत हैं।
जनम मरन की घात।। १।।

बंधन से बंधन कटें निरबँध हो जावे।।
राधास्वामी दया से निज घर चढ़ जावे।।२।।

(७)

चलो चलो घर घंट पुकारे।
रलो मिलो सँग द्याल पियारे।।

(८)

क़िता

मुझे अपने प्रीतम से है यह क़रार।
कि जब तक है जाँ देह में बर क़रार।।१।।
करूँ उसके भक्तों से हर दम पियार।
रहूँ उनको आपे के मुवाफ़िक़ निहार।।२।।

(९)

पिया मेरे और मैं पिया की।
कुछ भेद न जानो कोई।। १ ।।
जो कुछ होय सो मौज से होई।
पिया समरथ करें सोई।। २ ।।

(१०)

ठुमरी

इतनी अरज़ मेरी मानो स्वामी।
इतनी अरज़ मेरी मानो।।
चरनन लेव लगाइ देव मोहिं ठाऊँ।। टेक।।
मैं बलहीन दीन मोहिं जानो।
दीजे प्रेम भक्ति मोहिं दानो।। १ ।।

(११)

सवाल ?

सखी री मैं कैसे बचूँ इस मन से।
यह तो मोह रहा भोगन में।।

जवाब

राधास्वामी दीन दयाल सुने हैं।
तोहि प्रीत देवें चरनन में।
प्यारी तू ऐसे बचे इस मन से।। १ ।।

* * * * *

टेकें व कड़ियाँ मुतफ़र्रिक़

(१२)

संत में यार परघट है।
इधर आओ यहाँ ढूँढो।। १ ।।
तेरे घट में छिपा बैठा।
इधर आओ यहाँ ढूँढो।। २ ।।

(१३)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
टुक दया बिचारो।
मोहिं लेव निकारी।।

(१४)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
जग योंही बीता जावे।
जल्दी से काज बना लो।।

(१५)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
क्यों आपस में तुम झगड़ो।
रल मिल कर सतसँग करना।।

(१६)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
जग आसा दूर निकारो।
गुरु चरनन प्रीत बढ़ाना।।

(१७)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
यह देश तुम्हारा नाहीं।
निज धाम जाय कर बसना।।

(१८)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
यह जगत रैन का सुपना।
परमारथ चेत कमाओ।।

(१९)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
भोगन की चाह तियागो।
घट में नित आनन्द लेना।।

(२०)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
क्यों जग में बिरथा भरमो।
अंतरमुख साधन करना।।

(२१)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
राधास्वामी सरन सम्हारो।
निज घट में चरन रस लेना।।

(२२)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
गुरु बचन समझ कर मानो।
जीव काल से लेओ बचाई।।

(२३)

मेरे प्यारे बहन और भाई।
गुरु का उपदेश सम्हारो।
चौरासी फेर बचालो।।

(२४)

बचन सुना जग भाव हटाया।
दर्शन दे मोहिं चरन लगाया।। १ ।।
काल और करम दोऊ सुलवाया।
घट में मेरे प्रेम जगाया।। २ ।।
वाह प्यारे सतगुरु राधास्वामी।
वाह प्यारे सतगुरु राधास्वामी।। ३ ।।

(२५)

मन मेरा मुझे नचाय रहा।।टेक।।
जो मारग अब गुरु बतावें।
ता को पीठ दिखाय रहा।। १ ।।

(२६)

जगत से मन को तोड़ चलो।
चरन में चित को जोड़ चढ़ो।। १ ।।
काल से डर कर सरन गहो।
चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ रहो।। २ ।।

(२७)

जैसे बने तैसे करो कमाई।
राधास्वामी चरनन धर परतीत।।

(२८)

चरन गुरु दम दम हिरदे धार।
सरन पर डारूँ तन मन वार।।

(२९)

मनुआँ हठीला कहन न माने ।
भोगन में रस लेत।।
गली गली में भरमत डोले।
करे न गुरु सँग हेत।। १ ।।

(३०)

मेरे प्यारे गुरु दातार।
चरनन पकड़ रहूँ।।

(३१)

जगत तज गुरु चरनन में भाज।
सुरत आज लाई आरती साज।।

(३२)

सुरत सिरोमन फाग रचाया।
जग बिच धूम मची री।।

(३३)

नाम का लीना कर हथियार।
मोह मद डाले झाड़ निकार।।

(३४)

स्वामी प्यारे क्यों नहिं सुनो पुकारी।।

(३५)

स्वामी प्यारे अब ही मेहर कराओ।।

(३६)

स्वामी प्यारे अबही लेओ सुधारी।। टेक।।
मन इन्द्री मेरे चुप न रहावें।
चंचल रहत सदा री।। १ ।

(३७)

गहो रे चरन गुरु धर हिये प्रीती।
धारो रे सरन गुरु धर परतीती।।

(३८)

सतगुरु प्यारे ने रचाया।
जग फाग रँगीला हो।।

(३९)

सतगुरु प्यारे ने सुलाये।
पंच दूत दिवाने हो।।

(४०)

सतगुरु प्यारे ने बुझाई।
जग तपन करारी हो।।

(४१)

सतगुरु प्यारे ने बचाई।
जम से सुरत हमारी हो।।

(४२)

सतगुरु प्यारे ने जगाई।
मन में प्रीत नवीनी हो।।

(४३)

कस पिया घर जाऊँ री।
सँग मनुआँ अनाड़ी।।

(४४)

कस जायँ री सखी।
मेरे मन के विकारा।।

(४५)

गुरु प्यारे चरन पर आज।
मनुआँ वारूँगी।।

(४६)

गुरु प्यारे की आरत सार।
गाऊँ उमँग उमंग।।

(४७)

गुरु प्यारे का ले बल हाथ।
करम पछाड़ूँगी।।

(४८)

गुरु प्यारे का धर विश्वास।
मन से जूझूँगी।।

(४९)

गुरु प्यारे के नित गुन गाय।
प्रेम जगाऊँगी।।

(५०)

सुनरी सखी रात प्यारे राधास्वामी।
मोहिं सुपने में अँगवा लगाय रहे।।

(५१)

दरस आज दीजिये।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो।। १ ।।
मेहर अब कीजिये।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो।। २ ।।
सरन में लीजिये।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो।। ३ ।।

(५२)

बार बार मैं भूलनहार।
तुम सतगुरु समरथ दातार।।

(५३)

सखीरी घर जाऊँगी।
सतगुरु सँग हिये धर प्यार।।

(५४)

सखीरी घर जाने दे मोहिं।
सतगुरु सँग तज परदेश।।

(५५)

मन तू भज ले बारम्बार।
राधास्वामी नाम का आधार।।
राधास्वामी नाम सदा सुखदाई।
जिन सुमिरा तिन ही गति पाई।।
लीला अगम अपार।। १ ।।

(५६)

सतसंग बिना जिया तरसे।
मैं तो आय पड़ी चोरन के नगर।।

(५७)

भक्तन के स्वामी काज सँवारे।
काल जाल से जीव निकारे।।
धर सतगुरु औतार।।

(५८)

सुरतिया प्रेम जगाय रही।
प्रेमी जन का कर सतसंग।।

(५९)

सुरतिया बिनती धार रही।
लेओ अब सब को चरन लगाय।।

(६०)

सुरतिया हैरत रूप भई।
गुरु सन्मुख दृष्टी तान।।

(६१)

सुरतिया वाह वाह करती।
गुरू की महिमा गाय रही।।

(६२)

सुरतिया हँस हँस गावत नित्त।
गुरू की आरत प्रेम भरी।।

(६३)

सुरतिया झुरत रही मन माहिं।
प्रेम की घट में देख कसर।।

(६४)

सुरतिया घट में धावत नित्त।
भरन को अमी गगरी।।

(६५)

सुरतिया धार बहाय रही।
सतगुरु का दर्शन पाय।।

(६६)

सुरतिया बचन गुरू के जाँच।
मगन होय सतसँग नित करती।।

(६७)

सुरतिया हरख रही मन माहिं।
गुरू के सुन सुन नये बचना।।

(६८)

सुरतिया बिगस रही।
हर दम गुरु सेवा धार।।

(६९)

सुरतिया धार बसंती रंग।
करन आई आरत गुरु दरबार।।

(७०)

सुरतिया बिनती करत रही।
करो गुरु मेरा आज उधार।।

(७१)

सुरतिया नींद भरी।
नित सोवत टाँग पसार।।

(७२)

मोहिं नाच नचावे मन ठगिया।
मेरा अब कैसे छुटन होय दइया।।

(७३)

पिया का दरस कस पाऊँ सखी।
कोई जतन बतादो री।।

(७४)

बिन दर्शन मन तड़प रहा।
कस तपन बुझाऊँ री।।

(७५)

बिन दर्शन मोहिं चैन न आवे।
कस मन समझाऊँ री।।

(७६)

बिन दर्शन मोहिं कुछ न सुहावे।
कस जग बिच रहना होय।।

(७७)

बिन दर्शन मैं बिकल रहूँ।
मन शान्ति न लावे हो।।

(७८)

बिन दर्शन चित रहे उदासा।
कहिं चैन न पावे हो।।

(७९)

भाग भरी सुर्त अजब अनोखी।
सेवा धार रही।।

* * * * * * * * * * *

राधास्वामी मत की
पुस्तकों का सूचीपत्र

पद्य (हिन्दी)

१) सार बचन छंद बंद, पहला भाग
२) सार बचन छंद बंद, दूसरा भाग
३) प्रेमबानी, पहला भाग
४) प्रेमबानी, दूसरा भाग
५) प्रेमबानी, तीसरा भाग
६) प्रेमबानी, चौथा भाग
७) संत संग्रह, पहला भाग
८) संत संग्रह, दूसरा भाग
९) प्रेम प्रकाश
१०) बिनती प्रार्थना
११) नियमावली

गद्य (हिन्दी)

१२) सार बचन बार्तिक
१३) आख़री बचन स्वामीजी महाराज
१४) प्रेमपत्र, पहला भाग
१५) प्रेमपत्र, दूसरा भाग
१६) प्रेमपत्र, तीसरा भाग
१७) प्रेमपत्र, चौथा भाग
१८) प्रेमपत्र, पाँचवाँ भाग
१९) प्रेमपत्र, छठा भाग

२०) जुगत प्रकाश

२१) सार उपदेश

२२) प्रेम उपदेश

२३) राधास्वामी मत संदेश

२४) राधास्वामी मत उपदेश

२५) निज उपदेश

२६) प्रश्नोत्तर सन्त मत

२७) छाँटे हुये बचन महात्माओं के

२८) गुरु उपदेश

२९) बचन महाराज साहब

३०) बचन बाबूजी महाराज, पहला भाग

३१) बचन बाबूजी महाराज, दूसरा भाग

३२) बचन बाबूजी महाराज, तीसरा भाग

३३) बचन बाबूजी महाराज, चौथा भाग

३४) जीवन चरित्र, स्वामीजी महाराज

३५) जीवन चरित्र, हुज़ूर महाराज

३६) जीवन चरित्र, बाबूजी महाराज

३७) शब्द कोश संत मत बानी

३८) लोक-परलोक हितकारी

३९) मौलाना रूम के दष्टान्त और
औलियाओं की कथाएँ

४०) समाध पुस्तिका

Books In English

४१) राधास्वामी मत प्रकाश
Radhasoami Mat Prakash

४२) डिस्कोर्सेज़ ऑन राधास्वामी फ़ेथ
Discourse On Radhasoami Faith

४३) फेलप्स साहब के नोट्स
Phelp's Notes

४४) ए सोलेस टू सतसंगीज़
A Solace to Satsangis